प्रेम प्रकाश सन्देश

ॐ श्री सत्‌नाम साक्षी

अक्टू., नवम्बर 2004
संयुक्तांक
वर्ष 24 अंक 12
वर्ष 25 अंक 01

वार्षिक शुल्क :
रू. 50 (भारतवर्ष में)
रू. 500 (विदेश में)



हिन्दी भाषा में
श्री प्रेमप्रकाश सम्प्रदाय की
एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की
मासिक पत्रिका



गंगा स्नान सत्संग पुनि-संतों का दर्शन।
कह टेऊँ आ सेवके-करिये मन प्रसन्न ॥

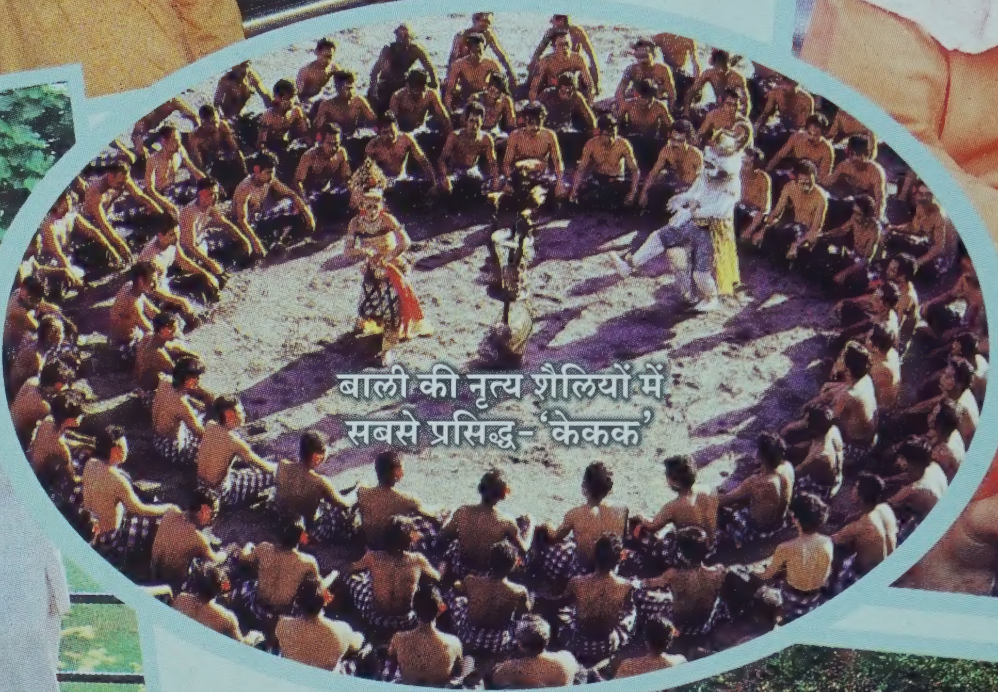
संस्थापक : सद्‌गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

प्रेम प्रकाशी मेलमिलाप सम्मेलन अंक, बाली जकार्ता (इण्डोनेशिया)

श्री प्रेमप्रकाश मण्डल के मेल-मिलाप केम्प बाली जकार्ता की झलकियाँ

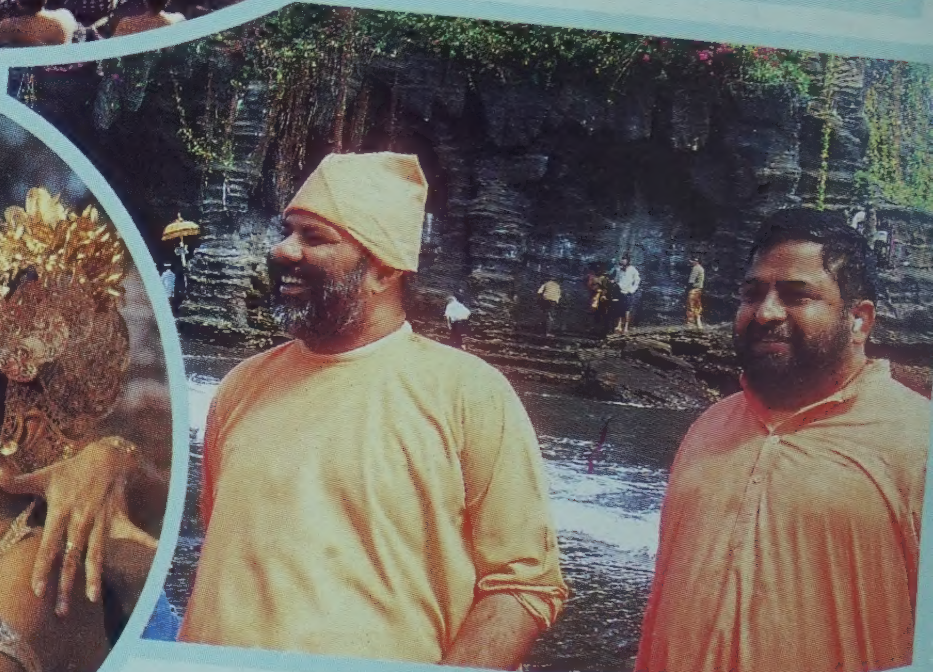






बाली की नृत्य शैलियों में सबसे प्रसिद्ध- 'केकक'







रामायण का 'बैले' रूपान्तर



दिनांक 15-18 जुलाई, 2004





'लेगॉन्ग नृत्य'

ॐ श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र
अधिकृत आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

वर्ष 24, अंक 12
वर्ष 25, अंक 1

प्रेम प्रकाश संदेश

अक्टूबर–नवम्बर 2004 सयुक्तांक

मंगल आशीष

मंगलमूर्ति आचार्य
सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज
सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज
सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज
सद्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज

संस्थापक
सद्गुरू
स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज

संरक्षण–मार्गदर्शन

सद्गुरू
स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज

अनु–क्रमणिका

सदस्यता शुल्क

अवधि	भारत में	विदेश में
एक वर्ष के लिए –	50 रू.	500 रू.
तीन वर्ष के लिए –	140 रू.	1500 रू.

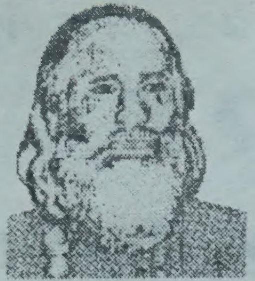
मूल्य एक प्रति 10 रूपए (इस अंक का)

जिन भी सदस्यों की शुल्क अवधि समाप्त हो गई हो, या हो रही हो उन्हें मनीआर्डर द्वारा अथवा विभिन्न शहरों में नियुक्त प्रतिनिधियों के पास चंदा जमा करवाकर शीघ्र ही नवीनीकरण करवा लेना चाहिए.

सदस्यता शुल्क भेजने व पत्र–व्यवहार के लिए पता :–

व्यवस्थापक:– प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर ग्वालियर–474001 फोन नं.–0751–2454183 फैक्स नं. –5045144 (सायं 4 से 8 बजे तक फोन–0751–5045144)

परम पावन गुरू स्थल श्री अमरापुर धाम जयपुर में भी प्रति गुरूवार, रविवार प्रातः 8 से 12 बजे तक व प्रति शनिवार सायं 5 से 8 बजे तक प्रेम प्रकाश संदेश की नयी सदस्यता अथवा नवीनीकरण के लिए प्रेम प्रकाश संदेश काउन्टर पर श्री कुमार चन्दनानी व श्री नारायणदास रामचंदानीजी के पास शुल्क जमा किया जा सकता है.



सद्गरू सर्वानन्द महिमा

दोहे

1. सर्वानन्द शुभनाम है, सर्वानन्द, सुखधाम.
सर्वानन्द अभिराम पुनि, सर्वानन्द विश्राम..
2. सदा रहत संतोष में, करत हरिगुणगान.
सत्गुरू सर्वानन्द की, पावन यह पहचान..
3. धीरजधारी शीलवंत, दयामृदु उपकार.
सद्गुरू सर्वानन्दजी, प्रगट धर्मावतार..
4. सरल सचाई शौच पुनि, करूणा कोमल चीत.
सद्गुरू सर्वानन्द जी, करत सर्व से प्रीत..
5. सर्वानन्द मंगल मधुर, सर्वानन्द विशाल.
सर्वानन्द उदारचित, सर्वानन्द सुखाल..
6. सर्वानन्द सुख के सदन,सर्वानन्द दुखनाश.
सर्वानन्द मंगल मुदित, सर्वानन्द अविनाश..
7. सर्वानन्द योगी यती, सर्वानन्द सन्यास.
सर्वानन्द साधु सचे, सर्वानन्द अभ्यास..
8. सर्वानन्द आनंद अखण्ड, सर्वानन्द रसरूप.
सर्वानन्द शरणागति, काढ़त है भवकूप..
9. वीतराग संसार से, पुनि प्रभु अनुराग.
सद्गुरू सर्वानन्द का, ज्ञान सहित वैराग..
10. प्रेम करत हैं सर्व से, पुनि करते उपकार.
सद्गुरू सर्वानन्द जी, दीन बंधू दातार..
11. प्रेम प्रकाशी प्रेममय, करत प्रेम प्रचार.
सद्गुरू सर्वानन्द जी, परम प्रेमावतार..
12. शोकटार सुखकार हैं, सद्गुरू सर्वानन्द.
जो जन आते शरण में, काटत हैं जमफन्द..
13. जीवन्मुक्त जोगी जती, सद्गुरू सर्वानन्द.
सदा रहत अंतर्मुखी, महापुरूष निर्द्वन्द..
14. योगारूढ़ रहते सदा, संयमशील सुजान.
सद्गुरू सर्वानन्द जी, सम्पति गुणनिधान.
15. परिपूर्ण हैं प्रेम में, परिपूर्ण है ज्ञान.
परिपूर्ण साधन चतुष्य, सर्वानन्द सुजान..

कुण्डलीयाँ

1. सकल आनंद रस रूप हैं सद्गुरू सर्वानन्द
प्रेम पिलाते सर्व को जैसे मुरली मुकन्द
जैसे मुरली मुकन्द, नन्द किशोर प्यारे
तैसे हैं गुरूदेव सर्वानन्द हमारे
आज हुआ धन्यधाम धरा पर आये सांई
खुशियों के गीत घर-घर बजे शहनाई.
2. परमानन्द परिपूर्ण है सद्गुरू सर्वानन्द
ब्रह्मानन्द सुखकन्द पुनि प्रेमानन्द ब्रजचंद
प्रेमानन्द ब्रजचन्द नन्द किशोर प्यारे
तैसे हैं गुरूदेव सर्वानन्द हमारे
आज हुआ धन्य धाम धरा पर आये सुखदाई
मंगल गाये गीत,घर-घर दें बधाई.

कवित्त

1. सकल आनंद सुखधाम, सर्वानन्द शुभनाम.
गुरू भक्त अभिराम, रहत निज शांत में
योगी यति विगतकाम, करत आत्म विश्राम
सर्व चेष्टा उपराम, रहत निज एकांते में
धर्म रति निहकाम, श्रेष्ठमति निष्काम
सदा सेवत हरिनाम, रहत निजक्रांत में
सर्व देखत एक राम, आनंद करत अष्टयाम
यथा गुण तथा नाम, रहत निज वेदांत में..

2. सर्व रूप सुखकारी, छवि जांकी है प्यारी
जैसे गिरवरधारी, स्वामी सर्वानन्द हैं
मुदित मंगलकारी, महिमा जांकी है न्यारी
विष्णू रूप अवतारी, स्वामी सर्वानन्द हैं
दीन बन्धू हितकारी, करत ज्ञान उज्यारी
विश्वनाथ भण्डारी, स्वामी सर्वानन्द हैं
सकल जीवन उपकारी मीठी वाणी उच्यारी
रहत ज्यूं अवध बिहारी, स्वामी सर्वानन्द हैं..

(ज्ञानगंगा) सद्‌गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के सत्संग प्रवचनों से उद्‌धृत

अपने मन से पूछो-प्रश्नोत्तर

सत्संगी गुरूमुखों. पहले आप अपने शरीर व इंन्द्रियों को सावधान करो. आसन लगाकर अपने नेत्रों व श्रवणेन्द्रिय को भी सावधान करो. अब प्रत्येक मनुष्य अपने मन से आप ही वार्ता करे. उसे बार-बार समझाये व उससे पूछे- हे मेरे मन. आखिर तेरे को क्या चाहिये. तुम जो जागृत एवं स्वप्न मे भटक रहे हो अब मुझे साफ-साफ बता.

हे मन अपना मतलब सारा खोल के मुझसे कहिये रे.
एक पलक भी स्थित नाहिं, क्या अब तुमको चहिये रे.
अगर आस है आनंद की तो , जग की इच्छा दहिये रे.
कहे टेऊँ पद पाये सनातन, परम शांत को लहिये रे..

हे मेरे मन. अपना मतलब यानी अंदर का राज मुझे साफ-साफ बताओ. तेरे को किसकी चाहना है. तू मेरे को साफ बता तो मैं वैसा फिर उपाय करूं. अगर तुम्हें शांति की तलाश है दुःखों से निवृत होने की इच्छा है. परमानन्द को पाना है. तुझे स्थायी आनंद पाना है? तो फिर संसार की इच्छा का त्याग कर दे.संसार की वासना को त्याग फिर देख तेरे को परम शांति मिलेगी. वो कैसे? जा किसी सत्‌गुरू शरण में-हे मेरे मन-जाग. अपने मन को आप जगाओ. फिर संत शास्त्र भी आपकी सहायता करेंगे.

हे मन! सुजाग हो जा अपने नेत्र खोलो जैसे राजा शिखरध्वज व चूड़ाला सुजाग हुये. कैसे- दोनो गुरू की शरण में आकर हाथ जोड़कर प्रार्थना कर रहे हैं. हे प्रभु! हम संसार में क्यो आये हैं हमे यहाँ क्या करना है.

यह खाना पीना बाल बच्चे पैदा करना यह तो पशु भी कर रहे हैं-परंतु मुझे क्या करना है. इस मनुष्य का क्या मकसद है

मैं हूं कौन कहां से आया, किसने मुझे बनाया है.
कौन देश में जाना है फिर, किसने खेल रचाया है.
कौन जन्मता कौन सुमरता, कौन चौरासी पावत है.
काल किसी को कहते जोई, तीन लोक को खावत है.
जीव ईश मन ब्रह्म क्या है, जग का कौन आकारा है.
मैं मूर्ख कुछ जानत नाहीं, ना कुछ मोहि वीचारा है..

हे प्रभु! मैं कौन हूं कहां से आया हूं मुझे कहां जाना है संसार की रचना किसने की है चौरासी को कौन भोगता है यह आवागमन का कैसा चक्कर है शरीर के नाश होने पर आत्मा कहां जाती है जीव क्या है. ईश्वर क्या है मन का स्वरूप कैसा है ब्रह्म क्या है इस जगत का आकार क्या है. जब आप भी अपने को ऐसे सावधान करके सुधारोगे समझाओगे, तो मन समझेगा. किसी सत्‌गुरू की शरण में जाकर अपना उद्धार करो.

चिन्तन

पांच प्रकार के मनुष्य

हमने संसार के अंदर पाँच तरह के लोग देखे हैं. आप भी यहां पूने के अंदर देखना फिर वीचार करना कि मैं भी वैसा हूं या इनसे कुछ अलग हूं, अगर इन पांचों के अंतर्गत हो तो किस नंबर पर हो थोड़ा वीचार करना. प्रथम वे लोग जो सन्तो महात्माओं की बात तक सुनना ही नहीं चाहते. बाकी सिनेमा हो, नाटक वगैरा हो, कोई खेल या सर्कस हो आदि. सच करके पूछो तो इन्हें बुद्धि नहीं है. तो ऐसे लोग इनका कल्याण कैसे होगा. होगा भी नही. दूसरी श्रेणी के वे लोग जो चाहते हैं कि सत्संग सुनें, परंतु क्या करें फुरसत नहीं है. वे आकर कहते हैं महाराज क्या करें अपने घर-परिवार की करें या आपका सत्संग आकर सुनें. हम तो फंस गये है. अगर किसी ने फसाया है तो संत इतने समर्थ है कि वे तुम्हें छुड़ायेंगे, बाकी आप स्वयं फसना चाहते हो तो परमात्मा भी आये तो भी तुम छूट नहीं सकते. कहते हैं महाराज क्या करें फुर्सत नहीं है. क्या करें.

दो- **जब तलक रहेगी जिन्दगी, फुरसत न होगी काम से.**
कुछ समय ऐसा निकालो प्रेम करलो श्री राम से..

फुर्सत होती नहीं है पर समय निकाल कर परमात्मा से प्रीति करलो. गुरू महाराज जी कहते हैं-

इसी दुनियां का काम सभोई-न कब पूरा होगा जी.
बड़े बहादुर अनंत चले गये-छोड़ के बीच अधूरा जी.
चिरंजीवी पुन इच्छा-चारी काल किया चक चूरा जी.

कहे टेऊँ यह निश्चय करके नाम जपो नित नूरा जी..

बड़े बहादुर, अनंत लेकिन वे भी सारा काम बीचमें अधूरा छोड़के चले गये.

दोहा- **धंधा किसे न साधिया-धन्धे साधिया जग.**
सेई गुरूमुख बाचिया-जन पकड़ी हरि को पग..

धंधा तो वे पूरा नहीं कर सके लेकिन धन्धे ने उन्हे पूरा कर दिया. किसी ने वरदान लिया अमर होने का कि जैसे मरे नहीं, वे भी काल के ग्रास बन गये. हे मेरे मन! तुम निश्चय करके परमात्मा का भजन करो. अब तीसरे वो लोग हैं कथा सत्संग में आते तो हैं परंतु सन्तों के वचनों का रहस्य नहीं समझ पाते हैं वे यहां पर खड़े-खड़े थोड़ी देर में घर चल देते हैं. कथा के बीच में से कोई चला जाये, समझो उसे कथा समझ में नहीं आई.

जब तक बात समझ में नहीं आयेगी तब तक उसका आनन्द भी नहीं आयेगा. और जिन्हें यह बात समझ में आई उन्होंने राजाई छोड़ दी-

गोपीचंद भृतहरि राजा सिर पर डाले धूड़, मस्ताना मन क्या ढूंढे घर दूर.

शेख फरीद को लटकाया हो गया चकनाचूर, मस्ताना मन क्या ढूंढे घर दूर.

चौथे प्रकार के वे हैं-जो सारे कामों को छोड़कर यहा आते हैं, कथा सुनते हैं, फिर समझते भी हैं, परंतु उस पर चलते नहीं. क्या कहा उसे अमल में नहीं लाते. जितने भाई-माई यहां बैठे हो वीचार करो. आप बताओ मांस मछली खाना,शराब पीना, बीड़ी सिगरेट पीना, सिनेमा पर जाना, दहेज पर लेन-देन करना, बोली करके विवाह करना, अपने स्वार्थ सुख के लिये यह बातें अच्छी हैं. आप में से एक भी खड़ा होकर कहे. डरो मत.

आप समझ रहे हो कि यह सब खराब है, परंतु क्या आपने इन्हें छोड़ा है. यह चौथे प्रकार के लोग समझते हैं लेकिन उसे अमल में नहीं लाते. इसका कारण सन्तो से पूछना चाहिये. कि प्रभु समझते तो हैं फिर संत महात्मा आपको हल निकाल देंगे. पांचवे वे लोग जो यहां बड़े प्रेम व श्रद्धा के साथ आते हैं संतो का सत्संग भजन श्रवण करते हैं, फिर उसका मनन करते हैं. निदिध्यासन करते हैं वे अपने लोक परलोक दोनो संवार जाते हैं

प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप शिविर में भाग लेने वाले प्रेमी

जयपुर, अजमेर, कोटा, दिल्ली, पलवल, भीलवाड़ा, बडौदा, मुम्बई, उल्हासनगर, आगरा व ग्वालियर **भारतसे** अन्जू तनेजा, आशा कुमारी, आशा मूलचंद, बसंत कुमार माधवानी, भगवानदास, भगवन्ती साजन मंगनानी, भारती लालवानी, भावना रमेश तुलस्यानी, छांगोमल, दादी चेताबाई, दीनदयाल वाधवानी, देवी बाई जेठानन्द, द्वारकादास तनेजा,देशराज,गोविन्द राजपाल, गोपालदास भेलवानी, हासानंद मूलचंद, हीरालाल किशनचंद तलरेजा, इन्दिरा टी. पंजाबी, जयकिशन मनवानी, कनकराम आहूजा, कन्हैयालाल मोहनानी, किशनचंद वाधवानी, कोमल कुमार, कुमार चंदनानी, कुमार वनजानी, ललित कुमार आसवानी, लता श्यामदास, लक्ष्मीदेवी,लीलाराम आडवाणी, माधव वासवानी, मनोहरलाल (मास्टर मन्नू), मनोहरलाल, मीरादेवी, मीरादेवी, मोहनलाल आसवानी, मूलचंद जेठानन्द, पदमाबाई हीरालाल तलरेजा, पेसूराम भोजवानी, प्रकाश बी. उधरानी, पुष्पा राजपाल, राधा बाबानी, राधा मोहनानी, राजकुमारी ठाकुरदास, रूकमनी रेवाचंद सांवलानी, श्यामलाल तनेजा, शंकरलाल सबनानी, शिव लोंगानी, संगीता टी. मनवानी, शशीबाला, श्रीचंद पंजवानी, सुदामा बाबानी,सुरेश वासवानी,ठाकुरदास परसराम शेवकरामानी,तुलसीदास मनवानी,वर्षा माधवानी, वीरभान जेसवानी. **बैंकांकसे** जया धनवानी, एम. मोहनानी, पी. धनवानी, एस. गंगलानी, एस. धनवानी, कु. वी. मोहनानी, वी. मोहनानी, नीतू, विनोद, हनीषी. **मनीलासे** प्रेम सहजवानी **दुबईसे** चिमन भोजराज दरियानी, देवीबाई आसवानी, दिशा कैलाश मनवानी, घनश्याम मूरजमल, गोविन्द कुमार, पुरूषोत्तम गुल्लूमल गुलाबानी, तुलसी पुरूषोत्तम गुलाबानी, कैलाश कुमार मनवानी, कविता लखवानी, खेमचंद तेजूमल, कौशल्या देवी, मीनू कैलाश मनवानी, नारायणदास, रामकुमार तोलानी,रूकमणी देवी, संजय तोलानी, सीमा तोलानी, शीतल तोलानी, तुलसा घनश्याम, वन्दना चिमन दरियानी. **हांगकांगसे** गोपाल दत्तवानी, कविता दत्तवानी, श्याम आसवानी, निक, वाशी लीलारामानी, **लन्दनसे** मोहन बक्शानी. **सिन्ध पाकिस्तानसे** अशोक कुमार, आवतराम, भीमनमल, चंदरलाल, धनेशकुमार, ज्ञानचंद, गोपीचंद, हरीश कुमार, जयरामदास, कमल कुमार, लखमीचंद, मुकेश कुमार, नानिकराम, निर्मलदास, पहलाजराय, प्रताबराय, पवनकुमार हरीलाल, पवनकुमार जयरामदास, पूरनलाल, प्रीतमदास, राजेश कुमार, रामलाल, रोशनलाल, संगीताबाई, सर्वानन्द, श्यामकुमार, सुनील कुमार, सुखदेव कुमार, सुखदेव, सुरेश कुमार, ताराचंद. **स्पेनसे** इन्दु आलवानी, ईश्वर वासवानी, जानकी मेहतानी, जानकी प्रीमलानी, लता बक्शानी, लवीना मेहतानी, भगवानदास मेहतानी, मीना प्रीमलानी, मोहन बक्शानी, पोहूमल प्रीमलानी, प्रेमा वासवानी. **अमेरिकासे** गौतम लालवानी, कमल चैनानी, कौशल्या मेहतानी, किरण देवी, स्वरूप सदारंगानी के अतिरिक्त जाकरता से २८४ भक्तों ने भी बाली सम्मेलन में भाग लिया.

जीवनमुक्त महापुरूष का जन्म महोत्सव

सद्गुरू सर्वानन्द जयंती विशेष
27 अक्टूबर 2004

दोहा- जीवन्मुक्त जोगी जती-सद्गुरू सर्वानन्द.
रहत सदा अंतर्मुखी-महापुरूष निर्द्वन्द..
योगारूढ़ रहते सदा-संयम शील सुजान.
सद्गुरू सर्वानन्द जी-सम्पति गुण निधान..

बड़े ही आनन्द की बात है, माँ गंगा के पावन तट पर पूज्य संतो की महिमामयी उपस्थिति में एवं असंख्य श्रद्धालुओं की गरिमामयी श्रद्धा के बीच त्यागमूर्ति सतुगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज का १०८ वाँ जन्म महोत्सव बड़े धूम धाम से मनाने जा रहे हैं. आइये इस पर कुछ चिंतन व मंथन करें.

वस्तुतः देखा जाय तो यह जीवन्मुक्त संत जो होते हैं. वे जन्म-मृत्यु की सीमा से ऊपर उठ जाते हैं. जो परमात्मा के दिव्य धाम को प्राप्त होते हैं. उनके लिये फिर जन्म-मृत्यु का चक्कर ही खत्म हो जाता है. फिर भी श्रद्धा व आस्था के मद्दे नजर ऐसे उत्सवों का आयोजन किया जाता है, परन्तु इसके पीछे भी कई कारण हैं. अब उसके विस्तार में न जाकर यहाँ केवल मुख्य बात को लें.

इन उत्सवों का मुख्य कारण है जो इन महापुरूषों ने अपने जीवन में जिस स्थायी आनन्द को प्राप्त किया क्या वह आनन्द प्रत्येक आदमी को मिल सकता है. बस इसी बात को लेकर हम सभी यहाँ पर चिंतन करें.

वास्तव में यह आनन्द या सुख जीव का अपना स्वरूप ही है लेकिन वो भ्रांतिवश उसे बाह्य विषयों में ढूंढ रहा है. अब ढूंढते रहो, कुछ भी बाहर मिलने वाला नहीं जो वस्तु जहां है वो वहां ही मिलेगी इसी बात की पुष्टि करते हुये स्वयं महाराज श्री अपने सर्वानन्द संदेश के प्रथम पृष्ठ पर लिखते हैं-कि सारा संसार सुख को ढूंढ रहा है लेकिन वो सुख उसका अपना स्वरूप ही है. जब तक वो अपने भीतर नहीं आयेगा तब तक उसकी समस्या का समाधान नहीं होगा.

बस ऐसी समस्याओं के समाधान के लिये ऐसे महापुरूषों का आगमन होता है और ऐसे उत्सवों द्वारा उन महापुरूषों का यह संदेश प्रसारित किया जाता है. हमारे सतुगुरू स्वामी सर्वानन्द जी ने जिस अक्षय आनन्द को प्राप्त किया, वह उन्हें कैसे मिला? थोड़ा वीचार करें, चूंकि जब विचार करेंगे तभी यह बात समझ में आयेगी तो उन्हे यह आनन्द कैसे मिला-कहते हैं जब मनुष्य संयमी बन जाता है तभी उसे यह आनन्द या सुख मिलने लगता है.जब तक हम असंयमित जीवनचर्या रखेंगे तब तक दुखी व शोक ग्रस्त रहेंगे. आप देखना बड़े-बड़े मनीषियों व वीचारशील पुरूषों में प्रत्येक बात का संयम व नियम रहता है. वे अपना आहार-विहार युक्ति पूर्वक चलाते हैं जिससे वो सदाके लिये निरोगी व आनन्दित रहते हैं.

ऐसे ही हमारे महाराज श्री जो कि संयम की साक्षात् मूर्ति थे. उनके जीवनचर्या पर थोड़ी संक्षेप में दृष्टि डालें तो पता लग जायेगा कि वे कैसे अपने को संयमित रखते थे.

कहते हैं कि महाराज श्री का जीवन इतना तो संयमित रहता था कि प्रत्येक कार्य को अपने समय पर करते थे. सांसारिक वार्ताओं से तो एकदम दूर रहते थे. जो भी श्रद्धालु दर्शनों के लिये आते थे उन्हें केवल दूर से आशीर्वाद देकर मंद मंद मुस्कराहट से इशारे से भोजन व आसन के लिये कहते थे. सत्संग समाप्ति के बाद एक दम चुप-चाप किसी से बोले बिना बाहर थोड़ा भ्रमण (सैर) के लिये निकल जाते थे. फिर रात्रि ८ बजे करीबन अपनी कुटिया में विश्राम के लिये चले जाते थे. पुनः प्रातः ३.३० बजे ब्रह्म वेला में उठ कर अपनी नित्यक्रिया से निवृत होकर साधना में संलग्न हो जाते थे. प्रातःकालीन सत्संग के बाद कुछ समय अपने लेखन के कार्य में जुट जाते थे. दोपहर में अल्प विश्राम के बाद अमरापुर स्थान की सेवा आदि का कार्य देखते थे.

वाणी पर तो इतना संयम रहता था एक भी शब्द अकारण नहीं बोलते थे. स्वयं फरमाते भी थे कि वाणी का संयम रखो, व्यर्थ की बक बक से अच्छा है आप शिवोऽहम् शिवोऽहम् कहा करो इससे हमारा अंतःश्चकरण शुद्ध होगा. समय के तो अत्यंत पाबंद थे ही. एक क्षण भी व्यर्थ न जाने देते थे. समय पर उठना, समय पर सोना, समय पर सत्संग आदि किया करते थे.अपने जीवन को ऐसा ढाल दिया कि भगवद् चिंतन के सिवाय और कोई प्रपंच ही नहीं करते थे. आठों पहर अपने आनन्द में रहते थे ऐसा उन्हों का तपस्यामय जीवन था. ऐसा तपोमय जीवन ही ऊर्ध्व वाला होता है. तो ऐसे अवतारी महापुरूषों के जीवन को हम बार-बार देखें समझें व थोड़ा चिंतन करें तभी हमारा यह मेला उत्सव आदि आयोजनों में आना सफल होगा. एक गुण भी हमारे जीवन में आ जाये तो भी अहोभाग्य! इस पावन भूमि पर हम यही सत् संकल्प करें कि कम से कम हम एक न एक बुराई का त्याग कर, अपने जीवन को महापुरूषों के पथ पर चलाने का प्रयास करेंगे.

ज्ञानवार्ता

जिज्ञासु-सद्गुरू संवाद

ऐतिहासिक स्थली पर वैचारिक क्रान्ति

कल्याण स्वरूप भगवान शिवजी के विश्राम स्थल को वेदों ने वटवृक्ष (विश्वास) को बताया है. विश्व के थके हुऐ मानवों को उसी वृक्ष के नीचे परम शांति की प्राप्ति होती है. सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज 15 से 18 जुलाई बाली इन्डोनेशिया में वसुधेव कुटुम्बकम् की सद्भावना से मानव मेलमिलाप के लिये गये थे तब हमारे सम्पादक के ह्रदय में एक शुभ इच्छा उत्पन्न हुई कि यह मेल मिलाप रूपी मेला प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के सानिध्य में एक चिर स्थाई मानवीय भावना का प्रतीक बने जो् गुरू महाराज के आशीर्वाद से फलीभूत हुई. विश्व की ऐतिहासिक स्थली बाली पर यह अभूतपूर्व कार्य सम्पन्न हुआ जैसे जगत माता पार्वती जी ने, गरूड़ ने, भारद्वाज मुनि ने, विश्व वन्दनीय आचार्य से अपनी अपनी जिज्ञासायें प्रकट की थीं, सारे विश्व से एकत्रित भक्त समुदाय ने पूज्य सद्गुरू स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज से अपनी जिज्ञासायें प्रगट की हैं. जिनका गुरूदेव ने सारगर्भित वाणी द्वारा आप पूछें-जवाब मिलेगा सत्संग सत्रमें उनका समाधान किया है.

(१) **जिज्ञासु–** इसका भावार्थ करने की दया करें.

निश्शोकमानं गतरागद्वेषं, ज्ञानैकसूर्यं जगदेकवन्द्यम्.
अध्यात्मलीनं विनिवृत्तकामं, श्री टेऊँरामं शरणं प्रपद्ये..

पूज्यश्री–जो शोक रहित है, मान रहित, राग-द्वेष से परे, काम-रहित, ज्ञान दैत सूर्य, जगदानन्य, वन्दनीय, आध्यात्मकालीन सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज की मैं शरण ग्रहण करता हूँ. सद्गुरू स्वामी की महिमा को जानना ही भक्ति मार्ग का प्रथम चरण है. गुरू में एक निष्ठता ही भक्ति का कल्याणकारी सुख है.

(२) **जिज्ञासु–** सद्गुरू स्वामी सर्वानंद जी महाराज की महिमा का क्या अर्थ है ?

स्वामीजी– सर्वानंद प्रदातारं, सर्वानंदं विकासकम्,
सर्वानंदावितारंच, सर्वानंदं नमाम्याहम्

सम्पूर्ण आनंदों के देने वाले, सम्पूर्ण आनंदों का विकास करने वाले, सम्पूर्ण आनंदों के अवतार रूप सर्वानन्द (पूर्णानंद, नित्यानंद, ब्रह्मानंद, अखण्डानंद, अनन्तानंद, परमानंद, आत्मानंद, स्वरूपानंद), सन्दोह विग्रही श्री स्वामी सर्वानंद जी के चरण कमलों में मैं सादर नमन करता हूँ.

(३) **जिज्ञासु–** अपने मन की शांति एवं संसार के परिवार में शांति कैसे मिलेगी ?

स्वामीजी– मन की शांति के लिये ही सारे उपाय किये जाते हैं. मानस में मन की शांति के लिये बताया गया है. बिना निज ज्ञान (आत्म अनुभव) के क्या मन स्थिर हो सकता है अर्थात् नहीं ! साधन है सत्संग, शांति प्राप्त करने के लिये, मन की मैल मिटाने के लिये जब तक हम अपने स्वरूप को नहीं पहचानते तब तक शांति नही मिलती है. जब तक सत्संग में बैठते हैं तब तक शांति रहती है फिर संसार के झंझटो से अशांति मिलती है. जिसने अपने आपको पहचान लिया अपने आत्मस्वरूप को पहचान लिया उसे हमेशा के लिये शांति की प्राप्ति हो जाती है. उसके लिये साधन है भले ही रास्ता लम्बा है पर गुरू की कृपा से अपनी लगन से इन्सान वह शांति पा सकता है. अपने को शांति मिलती है, तब सारे संसार में उसके लिए शांति हो जाती है. जैसे सूर्य जब तपता है (गरम) होता है तब छतरी उठाते हैं, वह अपने लिये संसार के लिये नहीं इस प्रकार जिसका मन नाम में लग जाता है तो उसके लिये चारों तरफ शांति हो जाती है. अशांति रूपी अन्धकार की परम औषधि ज्ञानरूपी भक्ति है.

(४) **जिज्ञासु–** ध्यान करते समय मन क्यों नहीं लगता है?

स्वामीजी– ध्यान में हम जब बैठते हैं तब दुनियाँ के सारे झंझट सारी उलझने विचारों में आती हैं क्योंकि

हमारा सारा समय दिन रात संसार के चिन्तन मे ही चला जाता है दुनिया की बातें मन में चलती रहती हैं. इसलिये हमारा मन ध्यान में १० मिनट भी शांत नही रह पाता है इसलिये हमें साधन करना चाहिये.कहते हैं- **करत करत अभ्यास के जड़ मति होत सुजान** इसलिये गुरूदेव कहते हैं. तुम मन की तरफ मत देखो तुम अपना नेम करते रहो, नेम करते करते धीरे-धीरे तुम्हारा मन स्थिर हो जायेगा पर उसमें वक्त लगेगा जैसे कपड़ा जितना अधिक मैला होगा उसको साफ करने में उतना अधिक समय एवं मेहनत लगेगी उसी प्रकार मन के संस्कार जो संसार की तरफ फंसे हैं. उनमें उतना ही समय लगेगा उसके लिये धीरज के साथ-साथ निरन्तर जो अभ्यास कर रहे हैं उसे निश्चित शांति की प्राप्ति होगी.

(५) **जिज्ञासु**– सोहम क्या है ?

स्वामीजी– सोहम में दो शब्द आते हैं सो का हिन्दी में अर्थ होता है वह और अहम का अर्थ होता है मैं. सो का वाचक है परमात्मा और अहम का वाचक जीवात्मा मतलब परमात्मा एवं जीवात्मा एक रूप है. दोनो को मिला देने से वह सोहम बन जाता है. जीव- मैं ईश्वर का अंश हूं परमात्मा से निकला हुआ हूं और ईश्वर से मुझे मिलना है तब सोहम करते करते उसे ईश्वर की प्राप्ति हो जाती है. तब जड़ चेतन की ग्रन्थि उसमें नहीं रहती है.

(६) **जिज्ञासु**– मोक्ष क्या है. क्या सत्संग से मोक्ष हो सकता है ?

स्वामीजी– **बिनु सत्संग विवेक न होई** ज्ञान ही मोक्ष देने वाला है मोक्ष का अर्थ है मुक्ति, जन्म मृत्यु से मुक्ति. जो सबसे बड़ा बन्धन है जन्म और मृत्यु यह बन्धन टूटेगा ज्ञान से. यह ज्ञान प्राप्त होगा सत्संग से दोहा **सत्संग से सतगुरू मिले, सतगुरू से निज ज्ञान, कहे टेऊँ निज ज्ञान से, मिलहैं पद निर्बान..** गुरूदेव ने इस दोहे में इस सवाल का जवाब दे दिया है. अतः पहली सीढ़ी है सत्संग की. सत्संग से ऊँची सीढ़ी है सतुगुरूदेव की. गुरूदेव की प्राप्ति के बाद है ज्ञान की प्राप्ति, ज्ञान की प्राप्ति के बाद बन्धनों की निवृत्ति हो जाती है, ज्ञानरूपी अग्नि में जीव के सारे कर्म जल जाते हैं. सत्संग से ही इन बातों की प्राप्ति होती है सत्संग से प्रारम्भ होकर जीव मोक्ष के द्वार तक पहुंच जाता है मतलब सत्संग से ही मोक्ष की प्राप्ति होती है.

(७) **जिज्ञासु**– स्वर्ग नरक जीवन या मृत्यु के बाद ?

स्वामीजी – हमारे शास्त्र बताते हैं एक स्वर्ग-नरक इसी संसार में है. जो सुख मिल रहा है वह स्वर्ग है और जो दुःख मिल रहा है. वह नरक है. जो इन्सान पतन की राह पर चल रहा है. जो तमोगुण से आच्छादित है. उसको शुद्ध करने के लिये नरक बना है. यह भी भगवान की कृपा है. जैसे सोने को शुद्ध करने के लिये आग में तपाया जाता है. तब उसका खोट (विकार) निकल जाता है. शेष शुद्ध सोना बचता है उसी प्रकार नरक की यात्रा पाप कर्म से बचाती है. इसके अलावा सत्शास्त्र आगे भी स्वर्ग और नर्क को बताते हैं. ब्रह्मलोक तक (१४) चौदह लोक हैं सात लोक पृथ्वी के नीचे हैं जिन्हें पाताल कहते है. आठवां लोक पृथ्वी है. उसके ऊपर ब्रह्मलोक तक छः लोक और भी हैं. यह सभी भगवान की सृष्टि के अंग है. यह सब सच है. सतुगुरू स्वामी शांतिप्रकाश जी महाराज बताते थे एक माता ने जब शरीर छोड़ा यमदूत उसे लेकर जाने लगे, उसे रास्ते में बड़ा कष्ट हुआ, जब वह पानी और आराम करने के लिये यमदूतों से बोली, यमदूतों ने कहा तुमने कभी किसी की सहायता नहीं की, नहीं पानी पिलाया है, इसलिए अब तुम्हें भी कुछ नहीं मिलेगा जब वह यमराज के पास पहुंचे, उसे देखकर यमराज ने कहा तुम किसे गलती से लाये हो इसे वापस धरती पर छोड़कर आओ, धरती पर उसके अंतिम संस्कार की तैयारी चल रही थी उसी समय वह जिन्दा हो गयी. तब उसने यह सारी बातें बताई उसका नाम भावन मां था उसने वह सारी बातें बताई जो हम सतशास्त्रों में पढ़ते हैं. तब उसका जीवन बदल गया, मरने के बाद जो गति

होती है वह सब सच है. झूठ नहीं है. जो अच्छे कर्म कर रहा है उसके लिये यहां और वहां दोनों ही जगह स्वर्ग है.

(८) **जिज्ञासु**– परमात्मा और परमेश्वर एक है या अलग-अलग उनका दर्जा है ?

स्वामीजी – भगवान कहो परमेश्वर कहो या परमात्मा कहो नाम अलग है सबकी सत्ता शक्ति एक ही है. वेद कहते हैं परमात्मा एक है नाम अनेक है जैसे सोने से हार बनता है, कंगन होता है या नाक में पहनने की नथ पर सब है सोना ही सोना. इस प्रकार नाम अनन्त हैं सत्ता एक ही है.

(९) **जिज्ञासु**– परमात्मा को कैसे पायें ?

स्वामीजी – सत्शास्त्र बताते हैं ईश्वर की प्राप्ति तुझे अन्दर से होगी तू ढूंढ़ता है उस मृग के समान जिसमें कस्तूरी तो है पर उसे ढूंढ़ता है सारे जंगल में. परमात्मा को पाने के मुख्य साधन हैं- विवेक और वैराग्य (१) विवेक का अर्थ है-क्षीर और नीर को अलग करने की शक्ति सच और झूठ, जड़ और चेतन का ज्ञान होना उसे विवेक कहते हैं. (२) वैराग्य है- दुनियां भर के भोग जो इन्द्र के समान भी हैं, तब भी उन्हें न भोगने की आसक्ति इसे वैराग्य कहते हैं. इन दोनों के बाद ही सारे साधन है. संसार को झूठा जानकर जब इससे किनारा करेगें तब ईश्वर से मिलने का रास्ता स्वतः ही खुलता जायेगा.

(१०) **जिज्ञासु**– सत्नाम साक्षी और गुरू मंत्र में क्या अंतर है, दोनो को कब जपें ?

स्वामीजी– सत्नाम साक्षी प्रणाम का मंत्र है जब प्रेमी आपस में मिले तब सतनाम साक्षी कहना चाहिये, जो गुरू ने मंत्र दिया है उसे गुरुमंत्र कहते हैं. गुरूमंत्र का जाप जैसे गुरू ने बताया है सुबह को उठकर गुरू की मूर्ति को सामने रखकर ध्यान और जप करना चाहिये और संध्या के समय दुकान पर अगर समय नहीं मिले तो रात को सोते समय गुरू मंत्र का अभ्यास करना चाहिये, प्रेमी जब आपस में मिले तब सतनाम साक्षी सत्संग में भी सतनाम साक्षी का जाप करना चाहिये.

(११) **जिज्ञासु**– मृत्यु के बाद क्या ?

स्वामीजी– **कर्म प्रधान विश्व करि राखा**
जो जस करे तस फल चाखा

परमात्मा की सारी सृष्टि कर्मों के अनुसार बनी है प्रारब्ध के अनुसार जीव को जन्म की प्राप्ति होती है. जीव को कर्मों के अनुसार जन्म मिलता है. परलोक बनता है मरने के बाद पर अन्त नहीं यह शरीर पांच भूतो का बना है पांचों भूत तत्वों में यह मिल जाता है और जीवात्मा कर्मों के अनुसार आगे चली जाती है. हर जीव के अपने कर्म हैं और हर जीव के अपने संस्कार हैं, जीव का जैसा जैसा कर्म है उसी प्रकार से उसका प्रारब्ध है. उसी के अनुसार उसे जन्म मिला है. इसलिये उसे अच्छे कर्म करने चाहिये जिससे उसे ८४ लाख योनियों को न भोगना पड़े अपने कर्मों से अगर हम आगे न बढ़े तो कम से कम हमें फिर इन्सान का जन्म तो प्राप्त हो, इन्सान से इन्सान तो बनें, मरने के बाद जो दशा होती है वह जीवों के कर्मों के अनुसार होती है.

अन्तर्राष्ट्रीय सत्संग सभा सम्मेलन में प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष सतुगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज ने वेदों का संतों का सत्शास्त्रों का सार यह बताया है जो शिव विश्राम विपट श्रुति में गाया गया है. **जो अति आतप व्याकुल होई, तरू छाया सुख जाने सोई**. जो विश्व के आतप से दुखी होगा. वह भी शिव स्वरूप आचार्य सद्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के स्वरूप सतुगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के बोध वृक्ष की शीतल छाया का वही महाभाग्यशाली अनुभव प्राप्त कर सकता है. जो इस वैचारिक क्रांति के संवाद को पढ़ेंगे सुनेगें वह सभी किसी जहाज (अन्य साधन) के बिना घोर भव नीर निधि सागर से स्वतः ही तर जायेगें. सतुगुरू देव का यह ज्ञान संवाद कलियुग के समस्त पापों का नाश करके मोक्ष प्रदान करने वाला है.

बाली सम्मेलन

सद्गुरू के वचनों में ही कृपा है

शुभ स्थल बाली 15 जुलाई 2004

(पूज्य गुरूदेव स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के अमृत वचन)

दोहा- **गुरू को कीजिए दण्डवत कोटि कोटि प्रणाम.**
कीट न जाने भृंग को, गुरू करले आप समान.

भजन- **सत्गुरू जो उपकार कहिड़ो गायां**
जंहि अघायो घर में साक्षी सिरजणहार
सत्गुरू दीन दयालू आ......
अहिड़ो को सत्गुरू आहे जो सभिनि जा दुख लाहे
जेको शरण अचे थो तहिंखे पार पुजाये

गुरूदेव की महिमा अनंत है. आज से विदेश में प्रेम प्रकाश मण्डल का मेला मेल-मिलाप शिविर शुरू हो रहा है. सत्गुरू महाराज से प्रार्थना करें, उनकी कृपा से मेला निर्विघ्न समाप्त हो. उनकी आशीष की जरूरत है इन्सान के अंदर बल कम है. जबतक गुरूदेव की कृपा नहीं होगी. तब तक कार्य पूर्ण सम्पन्न नहीं हो पाते हैं, पहले पहले हम गुरू महाराज को प्रार्थना करें.

कहे टेऊँ तिर ताकत नाहे, फकत आसरो तुहिंजो आहे
भार रखियो तोते लाये, कम कयो पूरा प्रेमिनि जा

दोहा- **मिलो मिलाओ मिल रहो मिलो तो मेला होय**
अन्तर आत्मा जब मिले मेला कहिये सोय

जो अपने आप से अंदर आत्मा से मिले तो उसे मेला कहिये अपने से मिलने का रास्ता सत्गुरू महाराज बताते हैं. बात कठिन है. श्रीकृष्ण भगवान का गीता में कथन है **त्मेव शरणं गच्छ सर्व भावेन भारत** हे अर्जुन वह तुम्हारे अंदर बैठा है तुम उसकी शरण हो जाओ. अर्जुन ने कहा- वह मुझे दिखाई नहीं पड़ रहा है आप कहते हैं वह मेरे अंदर है, तब भगवान ने कहा कि संत महापुरूषों की शरण में जाकर आत्मा एवं परमात्मा के बारे में पूछ, वह तुझे रास्ता बतायेगें. अधिकारी शिष्य को जानकर सत्गुरू उसे ज्ञान बताते हैं. वह ज्ञान बड़ा गूढ़ है. वह सबके हृदय में नहीं आयेगा, जिसके अंदर लगन होगी वही उसे प्राप्त कर सकेगा, वह सारे विघ्नों का नाश करके गुरू के ज्ञान की प्राप्ति कर लेता है. हम भी सत्गुरू महाराज की महिमा का गान करें. आज का प्रसंग है- **मुंहिंजा सत्गुरू मिठा आहिनि सभ खां सुठा**

हम गुरू की महिमा क्यों गाते हैं. वह हमें कौनसी चीज प्रदान करते हैं. वह कौनसी वस्तु है. प्रेम प्रकाश ग्रंथ में सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज ने अपनी वाणी में लिखा देखा खोज इस जग माहिं उस वस्तु सम कोई नाहिं गुरूदेव ने जो नाम दिया उसके समान कोई नहीं है और जिसने नाम की महिमा को जान लिया उसे दूसरे किसी पदार्थ की फिर जरूरत नहीं है, पर हमारा मन संसार की तरफ रचा हुआ है. उस मन को समझाना मुश्किल है.

मन जाने सब बात, जानबूझकर अवगुण करे

यह सभी शिक्षाऐं सत्पुरूषों की वाणी द्वारा सत्संग में सुनते हैं कोई भी ऐसी बात नहीं जो हमें मालूम नहीं हो सारा संसार फानी है. शरीर नाशवान है. दुनियां का काई भी पदार्थ साथ में चलने वाला नहीं है. इन सारी बातों की हमें जानकारी है. कोई भी नई बात नहीं है. जब मन नाम की तरफ लगे तब सत्गुरू की कृपा समझो.

चौपाई-**जानिए तबहिं जीव जग जागा,**
जब सब विषय विलास विरागा.
यह तन कर फल विषय न भाई स्वर्गउ स्वलप अंत दुखदायी.

जब मन विषयों से हटे तब समझना चाहिये, गुरू की कृपा हम पर हुई है. दुनियां के सारे पदार्थ महल मकान धन पुत्र वैभव सब प्रारब्ध के अनुसार हमें प्राप्त होते हैं. गुरू की वास्तविक कृपा वह होती है जब मन संसार से अलग हो जाये हमें यही प्रार्थना करनी चाहिये, उनकी आशीष बहुत बड़ी है जैसा आपका नाम है वैसी ही हमें आशा करनी चाहिये वाल्मीकि डाकू को गुरू रूप में सप्तऋषि मिले, जिन्होंने उसे नाम का उपदेश देकर उसके जीवन को बदल दिया. इस प्रकार अजामेल पापी को भी संतों ने उपदेश नारायण का दिया, जिस नाम को जपते-जपते वह संसार सागर से पार हो गया इस तरह के अनेक इतिहास हमारे सतशास्त्रों में भरे पड़े हैं. गुरूदेव बिना किसी स्वार्थ के बिना किसी मतलब के वह सोते हुये जीवों को जगाकर भवसागर से पार कराते हैं. अतिकृपाल निहद्रोह चित-सहनशीलता सार.

उनके हृदय में दया रहती है दूसरों के दुख देखकर वह दुखी होते हैं. उन्हें कैसे छुटकारा मिले यह चिन्तन उनके

मन में हमेशा रहता है. वह चाहते हैं जो हमारे पास आया है वह खाली हाथ लौटकर न जाये उसे इस प्रकार वस्तु प्राप्त हो जिससे उसके हमेशाके दुख दर्द दूर हो जायें.

भजन- **कुरब वारा करे सद्दिड़ा अचीं निंड मां जागायो तो**
लखें तुहिंजी मेहरबानियूं तुहिंजा नित गीत गाया मां

सतुरू की कृपा को वही समझेगा, जिसका मन नाम में लगा हुआ है. गुरू से नाम लेकर शब्द का सुमरण जो कर रहा है. उसे ही परमानंद की प्राप्ति होती है. ऐसे सतुरू पर मैं बार-बार बलिहार जाता हूं जो जीव को सच का रास्ता बताते हैं, दुनियां के लोग स्वार्थ से व्यवहार करते हैं. बिना स्वार्थ के कोई भी व्यवहार करने वाला नहीं है. 'चाम दाम का है ये नाता' गुरू ही बिना स्वार्थ के सच का रास्ता बताते हैं कि ईश्वर ने तुझे बहुत सारी शक्तियां दी हैं, पर अपने मन को उस तरफ लगा दें.

चौपाई-**सनमुख होहिं जीव मोहिं जबहीं**
कोटि जन्म अघ नाशहिं तबहीं

हमें थोड़ा ध्यान देकर मन लगाना पड़ेगा, बाकी कृपा अपने आप होगी माचिस की तीली बहुत छोटी होती है, पर वह बड़ी अग्नि का रूप धारण कर लेती है. पहले पहले थोड़ी लगन चाहिये.

'अथा तो ब्रह्म जिज्ञायासा' ब्रह्म सूत्र जिसके मन में लगन नहीं है जिसके मन में कुछ जानने की इच्छा नहीं है. उसमें और पशु में कोई अंतर नहीं है सतुरू के पास जाकर हम अपने मन को समझायें, उनके बताये हुये रास्ते पर चलें सतुरू के वचनों में ही सब सुख है करत करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान धीरे-धीरे चल, पर चलता चल बैठने का अर्थ है अज्ञान, अगर बैठ गये तो मंजिल पर नहीं पहुंच पायेगें, क्योंकि मंजिल बहुत दूर है.

चौपाई- **ईश्वर अंश जीव अविनाशी**
चेतन अमल सहज सुख अविनाशी

मंजिल की तरफ तुमको चलना है. और जब तक तुम नहीं पहुंचते, दुखों की निवृत्ति नहीं होगी. एक दुख जायेगा तो दूसरा आ जायेगा, क्योंकि भौतिक साधनों से दुख दूर नहीं होगा वह तो आत्मज्ञान से होता है. तेरे कर्म दुख और सुख का फल तुझे देते रहेगें तू धीरे-धीरे चलकर मंजिल पर पहुंच जायेगा. इसलिये तुम बैठो मत.

भजन- **वेहु न मुसाफिर वाट ते, खुली बन्दर जी बाजार**

बैठने का अर्थ है मन में अज्ञान का निवास चलने का अर्थ है. उन बातों का चिन्तन करें जो बातें सतपुरूषों ने बतायी हैं जब उन पर विचार करेगें तो आगे का रास्ता अपने आप खुलता जायेगा, किसी से पूछने की जरूरत नहीं पड़ेगी. एक गुरू हृदय के अंदर बैठा है जो स्वतः ही तुम्हें सारी बात बतायेगा जब ध्यान और मन लगायेगें तब उनकी कृपा बरसेगी, उनके एहसान इसलिये गाये गये हैं. कह टेऊँ जो सीस निवाऐ- इस प्रकार ये वचन मन से तभी निकलेगें जब हम नाम को मन में धारण करेगें. हम उनके पावन चरणों में बैठकर अपने मनुष्य चोले को सफल बनायें. संसार में इन्सान आता है. आने के साथ उसका जाना भी लिखा है.

गीता में जातस्य हि ध्रुवो मृत्युध्रुवं जन्म मृतास्य च.

जिन बातों से दूर रहना है. जो छोड़नी है उनसे अपने मन को हटा के रखो. ममता और मोह के बन्धन तोड़ कर दुख की निवृति करें. सतूपुरूषों की छत्रछाया में मेल मिलाप मेला विदेश में बाली इन्डोनेशिया में आज से आरम्भ हो रहा है. हम गुरूदेव के चरणों में प्रार्थना करें

वायुमण्डल में भी सतूनाम साक्षी की गूंज

१५ जुलाई २००४- स्टार एयरवेज का विमान जकार्ता विमानतल से उड़कर जकार्ता-बाली वायुमार्ग में अग्रसर-ऊँचाई लगभग १२ हजार फुट-यात्रियों के रूप में सतुरू महाराज जी-सन्तमण्डली व सिन्ध-हिन्द के अतिरिक्त अन्य देशों के प्रेमी बैठे हुए. कोई खिड़की से नीचे निहारता हुआ समुद्र-पृथ्वी का विहंगम नजारा देख रहा तो कोई वार्ता में मशगूल तो कई प्रेमीगण परस्पर परिचय का आदान प्रदान करते-यकायक स्पीकर पर आवाज वो भी सिन्धी बोली में गूंजती हैं-सतूनाम साक्षी-सतूनाम साक्षी.

सतूनाम साक्षी एयरलाईन्स में सतुरू महाराजनि संत मण्डली ऐं प्रेमियुनि जो स्वागत आहे असांजी यात्रा सुखद ऐं मंगलमय रहन्दी छो त गुरूदेव भगवान असांसां सहाई आहिनि. सतूनाम साक्षी-सतूनाम साक्षी. सतुरू स्वामी टेऊँराम महाराजजी की जयघोष से यह एनाउन्समेंट समाप्त हुआ. काकपिट से यह एनाउन्समेंट गोप सामतानी जी की आवाज में की जा रही थी. यह घोषणा सुनकर सभी प्रेमियों के हृदय पुलकित हो उठे. था भी सभी को अभिभूत करने वाला यह अनुपम प्रसंग.

बाली सम्मेलन

सद्गुरू कृपा का महत्व

शुभ स्थल बाली 17 जुलाई 2004

(पूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के सत्संग प्रवचनों से)

मूंखे जोगी याद पवनि

दोहा- **सत्गुरू की कृपा बिना भव सिन्धु तरे न कोई**
ताते गुरू की शरण ले जो भव तरना होइ..

सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी अमृतवाणी में प्रेमियों को उपदेश कर रहे हैं. अगर इस भवसागर (घोर भवनीर निधि) से पार जाना है तो हमें पूर्ण कामिल गुरू की शरण लेकर एकांत में बैठकर विचार कर पुरानी बातें याद करनी होगी, कि मैं संसार की मोह माया में किस प्रकार आकंठ डूबा हुआ था. जब गुरूदेव का संग पाया, तब सत्गुरू ने आशीष की, तब मेरा मन ईश्वर की तरफ लगा, अगर सत्गुरू न होते तो मेरा क्या हाल होता. आज शनिवार का पावन दिवस है. सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज आज के दिन इस धरा पर अवतार लेकर आये थे और शनिवार के दिन ही अपनी लीला को समेटकर वह सत्स्वरूप में लीन हो गये. शरीर की उपाधि मिटने के बाद भी उनकी शक्ति का आज भी चमत्कार देखने को मिलता है. हम उनकी शरण में है. सत्गुरू की आशीष हमारे साथ प्रतिक्षण है. उन्हें निर्गुण-निराकार रूप प्राप्त हो गया है. पहले सगुण रूप लेकर उन्होंने माता कृष्णा के गर्भ से जन्म लिया.

जन्म के बाद बचपन जवानी बूढ़ापन अवस्था फिर श्मशान यह चक्कर चराचर के सब जीवों के साथ चलता रहता है. जब हम गुरू मंत्र का नाम सुमरण करके मन को वश में करके उसे ईश्वर की तरफ लगायेगें तब हमारा जन्म मृत्यु का बन्धन कट जाता है. गुरूदेव व्यापक हैं. वे ईश्वर से मिलकर ईश्वर का रूप हो गये हैं. आज भी प्रेमियों की पुकार सुनकर सारे कारज रास करते हैं. महापुरूषों के लाखों इतिहास सत्शास्त्रों से भरे पड़े हैं. पता चलता है जब श्रद्धालु लोग कष्ट में पुकारते हैं. उस समय वह आकर मदद करते हैं. इसका मतलब वे गये नहीं है वे अमर हैं.

भजन- **उहे जोगी अथई जीअरा**
मंता समझे हली वयड़ा

ब्रह्मलीन का अर्थ होता है. उस पार ब्रह्म से मिलकर ब्रह्मस्वरूप हो जाना. इस शरीर की उपाधि मिट जाती है क्योंकि मृत्यु अटल है. यह वियोग है अज्ञानियों के लिये ज्ञानी भक्त के लिये नहीं. जिनके मन में श्रद्धारूपी भक्ति भावना होती है. उनके लिये वियोग भी मिलन बन जाता है. उनकी अपार शक्ति दिखाई नहीं पड़ती है पर सारे कार्य उनकी कृपा से हो रहे हैं. जो दृष्टि से दिखाई नहीं देते है सतगुरू टेऊँराम जी महाराजने अपनी वाणीमें उन्हें याद किया, जिन्होंने सचका रास्ता दिखाकर सोये हुये जीवोंको जगाया ऐसे महापुरूषों का मेरे हृदयमें हर क्षण वास हो. मैं दुनिया को भूल जाऊं पर सत्गुरू एक क्षण भी मुझे न भूलें.

भजन-**पवनि याद पलपल प्रीतम प्यारा**

दुनियां में सुख दुख तो आते रहेगें. उन सुख और दुख के फेर में मुझे तुम्हारा नाम न विस्मृत हो.

भजन- **मुंहिजा सत्गुरू सांई दिल मां शल नाम न तुहिंजों विसिरे.**

हम सत्गुरू टेऊँराम जी महाराज को याद करें, जिन्होंने प्रेम प्रकाश मण्डल की नींव डाली जिनकी कृपा से सारा मण्डल है. जैसे माला के अन्दर एक धागा होता है. पर दाने बहुत होते हैं. भले ही हमने किसी भी महापुरूष से नाम लिया हो हम किसी के भी शिष्य हों. सत्गुरू स्वामी सर्वानंदजी महाराज, सत्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज, सत्गुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज, स्वामी माधवदासजी, स्वामी चन्दन प्रकाशजी महाराज. पर हमारी जड़ है सत्गुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज प्रेमप्रकाश मण्डल की जड़ है. यही हम सभी का अस्तित्व है. हम सब उनकी कृपा से चल रहे हैं. हम यह न समझें कि वे संत चले गये है. हर वाणी में हर भजन में उन्होंने महापुरूषों को याद किया है.

भजन- **जीऊ जोगिन सां जुड़यो**

गुरूमुखों इस सारे संसार को सारहीन समझ कर वैराग्य करो ।

दोहा- **ब्रह्मलोक जे भोग जो, चहे सभन को त्याग**
वेद अर्थ ज्ञाता मुनि, कहत ताहिं वैराग

जिसने ऐसा वैराग्य धारण कर लिया उसने गुरू की कृपा लेकर अपने जीवन को सफल बना लिया, हम भी उनकी शरण लें. सतुगुरू के दर पर से हम खाली जाएं तो यह हमारी कमी है. सतुगुरू के तो अथाह भण्डार भरे हुये है. वह सब कारज सिद्ध करते हैं. हम प्रेम और विश्वास रखेगें और सुमति का दान मागें आज हम इस मेल-मिलाप मेले में इकट्ठे हुये हैं. शुभगुण धारण करें मेले में प्रसाद मिलता है. प्रसाद खाकर खत्म हो जाता है. पर सच्चा प्रसाद है सद्बुद्धि का दान, अच्छे संस्कार, सुमति मेले का वास्तविक फल यही है. हमारी नई पीढ़ी में अच्छे संस्कार पड़ें ईश्वर परमात्मा भगवान की तरफ चलें, ईश्वर की तरफ मन लगे, यही प्रार्थना करें.

गुरु बिन होय कि ज्ञान,
ज्ञान कि होय वैराग बिन.

जब तक वैराग्य नहीं होता तब तक मन संसार के पदार्थों से नहीं हटता है. तब तक ज्ञान नहीं होता. संसार के सारे दुख दर्द ताप क्लेश संताप उलझनें गुरू मंत्र से ही दूर हो सकती हैं.

भजन- **मूंते सतगुरू अहिड़ी बाझ कर का.**
तुहिंजो मिठड़ो सदा नाम ध्यायां.

नाम में अपार शक्ति होती है

(पूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के सत्संग प्रवचनों से)

शुभ स्थल बाली 18 जुलाई 2004

भजन- **मुहिंजा सतगुरू सांई दिल मां**
शल नाम न तुहिंजो विसिरे

दोहा- **सतगुरू के सत् शब्द का सुमरण कर मन माहिं,**
कहे टेऊँ सो पाय पद, काल कर्म जिंह नाहिं.

प्रेम प्रकाश ग्रंथ की अमृतमय वाणी में सतुगुरू महाराजजी लिखते हैं.

चौपाई- **जनम मरण सब सुख दुख भोगा**
हानि लाभ प्रिय मिलन वियोगा

चौपाई- **काल कर्म बस होई गोसाई**
बस रात दिवस की नाई

जीव काल और अपने कार्यों से दुखी है. काल का एक अर्थ होता है. समय काल का दूसरा स्वरूप है मृत्यु जो अटल है. जो कभी भी टलने वाली नहीं है. भले ही हम धन बल के स्वामी हो जायें, दुनियां के कितने भी पदार्थ प्राप्त कर लें फिर भी हमारी मृत्यु निश्चित है. वह समस्त जीवों के लिये एक समान होती है. काल रूपी अग्नि सभी को जलाकर भस्म कर देती है. चाहे वह प्रजा हो या राजा, अमीर हो या गरीब, ज्ञानी हो या अज्ञानी, आश्रमधारी हो या किसी भी स्थिति वाला हो. उसे काल के सामने नत मस्तक होना ही पड़ता है.

दूसरा बन्धन कर्मों का होता है. जिसे हम प्रारब्ध कहते हैं प्रारब्ध के अनुसार ही जीव का जीवन होता है. 'प्रारब्ध ही पहले बना पीछे बना शरीर' गुरूमंत्र के द्वारा ये दोनों बन्धन भी कट सकते हैं.

चौपाई- **मंत्र परम लघु जासू बस विधि हरि हर सुर सर्व**
महामंत्र गजराज बस कर अंकुश खर्व

अंकुश छोटा होता है पर उसमें गजराज को भी बस में करने की शक्ति होती है इस प्रकार छोटे से मंत्र से देवता ब्रह्मा शंकर और विष्णु भी अपने हो जाते हैं. नाम छोटा होता है उसमें शक्ति अपार होती है. नाम जुड़ा है नामी से, जैसे श्री श्यामलाल किसी का नाम हो वह उस नाम को धारण करता है. उस नाम को लेने से वह खड़ा हो जाता है, आवाज सुनकर उसके शरीर में हलचल हो जाती है.

चौपाई- **समुझत सरिस नाम अरू नामी**
प्रीति परस्पर प्रभु अनुगामी

इस प्रकार नाम और नामी एक ही बात है भगवान-का नाम सतुगुरू का नाम उससे भी बड़ा है. सतुगुरू के नाम के अंदर जो असीम शक्ति समाई है वह हमें दिखाई नहीं पड़ती पर वह कल्प वृक्ष के समान फल देने वाली है. गुरू का मंत्र कलियुग में कल्प वृक्ष के समान है. शास्त्र बताते हैं कल्प वृक्ष स्वर्ग में है. उसके नीचे बैठकर जो कल्पना की जाती है. वह उसी क्षण पूरी हो जाती है नाम भी कल्पवृक्ष के समान सब फलों की प्राप्ति कराने वाला है पर उसमें श्रद्धा रूपी निर्मल जल की आवश्यकता होती है. जैसे बीज के फूलने में पानी की आवश्यकता होती है सूर्य की तपन की जरूरत होती है. तभी वह फलता और फूलता है. उसी प्रकार बीज

के अंदर पेड़ होता है पेड़ में पत्ते, डाली, फूल फल सुगन्ध होती है. पर उसके फलने के लिये वातावरण की आवश्यकता होती है. इसी प्रकार हमने गुरू से जो नाम लिया है, वह भी बीज है उसमें श्रद्धा रूपी जल विश्वास और विवेक वैराग्य चाहिये तभी वह फलीभूत होगा ऐसा नहीं. महापुरूषों ने किसी और मंत्र का जाप किया होगा तुम्हे कोई और मंत्र दिया हो नाम वही है. पर उनकी हृदयरूपी धरती निर्मल एवं उपजाऊ थी जिसमें नाम डालते ही वह फलीभूत हो गई पर हमारी हृदयरूपी भूमि बंजर है. जिसमें श्रद्धारूपी जल विश्वास, एवं वैराग्य की कमी है. इसलिये वह जल्दी फलीभूत नहीं होती इसलिये हृदय में कम शांति प्राप्त होती है. क्योंकि हमारा मन संसार की मोहमाया में फंसा पड़ा है.

दोहा- **माला तो कर में फिरे जींभ फिरे मुख माहिं**
मनुवा तो चोदस फिरे यह तो सुमरण नाहिं

संत महापुरूष अपनी हृदय की विरह अग्नि से विषय विकारों को जलाकर भस्म कर देते हैं. पर हमें इसमें आनंद आता है. हम इस आनंद में परमात्मा को भूल गये हैं. मानस में चौपाई- जोग जुगति तप मंत्र का प्रभाव तभी फलीभूत होता है जब तक वह गुप्त होता है इसी प्रकार नाम एकांत में जपने का होता है. बाहर दिखाने का नहीं. आत्माशांति के लिये नाम का सुमरण अपने हृदय के अन्दर अग्नि को जलाकर करना चाहिये. जैसे कुम्हार मटकों के अंदर आग लगाते हैं मटके उस अग्नि में तपकर जब ठंडे होते हैं तब वह फिर सभी को ठंडा शीतल जल प्रदान करते हैं. महापुरूष भी अपने तन और मन को विरह अग्नि में क्षीण कर देते हैं. जिससे उनका मन वश में हो जाता है. जगदगुरू शंकराचार्य से शिष्यों ने पूछा हमारे सच्चे मित्र और दुश्मन कौन हैं? तब उन्होंने कहा जिसका मन इन्द्रियां वश में हैं वह उसके सच्चे मित्र हैं जिनका मन और इन्द्रियां वश में नहीं वह उसके दुश्मन है. नाम सुमरण से भाग्य भी बदला जा सकता है.

चौपाई-**नाम लेत भव सिन्धु सुखाहिं**
करहुं विचार सुजन मन माहिं

सज्जन महापुरूष बैठकर विचार करें कि इसका क्या मतलब है तब नाम से सुखों की प्राप्ति होगी नाम की शक्ति तब मिलेगी जब हृदय की भावना उससे जुड़ जायेगी. भावना जुड़ने से ईश्वर परमात्मा दूर नहीं.

प्रेम प्रकाश सम्प्रदायाचार्य सत्गुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज ने इस सत्य का प्रचार किया उनके मन में ऐसी लगन लगी कि सब सुख ऐश्वर्य होते हुये भी उनका मन संसार से अलग रहा, उन्होंने स्वयं एवं सभी को नाम का जाप कराया एक दिन माता कौशल्या जी ने पूछा बेटा तुम क्या चाहते हो एकान्त में रहते हो, चुप रहते हो आपके मन में क्या है? वह सारी बात बताओ तब गुरूदेव कहने लगे कि माता दुख नहीं करना, मेरा मन फकीरी और प्रभु दीनदयाल से जिसे मैं भूल गया था अब उन्हीं से मिलना चाहता हूं, संसार दुखों से भरा हुआ है भगवान की शरण में दुख नहीं है. गुरू की शरण उन कष्ट कलेशों से मुक्त करती है वहां हम सब दुख भूल जाते हैं. वापस आने पर संसार में फिर दुख मिलता है. हमारे हमेशा के लिये दुख दूर हों ऐसे सत्गुरू की हम शरण लें.

भजन- **है पावन गुरू की भूमि**

अमरापुर हमारे हृदय में है. सत्गुरू ने उसे अमरतत्व कहा है. जो सुख और दुखों से परे है. उस अमरलोक को जिसने पाया है उसे सब सुख एवं आनंदों की प्राप्ति होती है गुरूदेव के भण्डार भरे हुये हैं कल्पना से परे की बातें भी उनकी कृपा से होती हैं. हम भी अपना नित नेम बनायें, मन लगे न लगे पर बैठने का अभ्यास करें चाहे गुरूदेव कितने भी परे हों, पर अभ्यास करते करते धीरे धीरे मन लग जायेगा हम शब्द की रस्सी से गुरूदेव से जुड़े हैं यह विश्वास रखें. विश्वास-फलदायकम्- सत्गुरू की जीवनी पढ़ें, शास्त्र बताते हैं भगवान की कृपा से गूंगे भी मधुर बोलते हैं अंधे देखने लगते हैं पंगू मंजिल पा जाते हैं वह सब कुछ कर सकते हैं आज बच्चों ने नाटक में गुरूदेव की शक्ति को बताया एक माता थी जिसके संतान नहीं थी उसका पति इस कारण दूसरा विवाह करना चाहता था तब वह रोकर सत्गुरू टेऊँराम जी को कहने लगी मेरी लाज रखो सांईं आपके यहां सभी की झोली भरती है, मेरी भी झोली भर दो. गुरूदेव के आशीर्वाद से उन्हें दो पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई ऐसे थे स्वामी टेऊँरामजी महाराज. हमारे में लगन रूपी चिंगारी की आवश्यकता है, वह हमें परमात्मा से मिलाकर लक्ष्य की प्राप्ति कराती है.

क्रोध को करें नियंत्रित

सृष्टि रचियता ने पांच विषय व पांच विकार बनाये है. शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, पांच विषय एवं काम-क्रोध-लोभ-मोह-अहंकार ये पांच विकार. पालनकर्ता प्रभु की इस अद्भुत लीला को कोई समझ नहीं सकता. ब्रह्म स्वरूप सृष्टि में माया को विशेष स्थान दिया गया है. सारी सृष्टि इसी माया चक्र से चलती है. यह भगवान की माया बड़ी विचित्र त्रिगुणमणी! समझ से दूर! साधारण मनुष्य इसे समझ नहीं सकता. " देवी ह्येषां गुणमयी-मम माया दुरत्यया" सभी विषय-विकारों की प्रबलता अत्यधिक होते हुये भी क्रोध मानव का सबसे बड़ा शत्रु है. क्रोध आते ही व्यक्ति अपने आप को भूल जाता है. उसमें बेसमझ का नशा बढ़ जाता है. समझ आने पर पश्चाताप की अग्नि में जलता है.

क्रोध हर दृष्टिकोण से हमें नुकसान पहुंचाता है वह हमारा मित्र नहीं हो सकता. इसलिये हमें क्रोध से बचना चाहिये अगर हम घर को स्वर्ग बनाना चाहते हैं तो जीवन में कभी भी क्रोध नहीं करें. "एक आग बने तो दूसरा पानी" यह जीवन का अमृत सूत्र है. क्रोध आग है. आग से आग शान्त नहीं होती. क्रोध से क्रोध कभी नहीं मिटता. आग का उपचार पानी है. पेट्रोल ईंधन नहीं. अतः क्रोध की अग्नि को शान्त करने के लिये क्षमा-समता धैर्य-सहनशीलता का जल तैयार रखें. आज अशान्ति का सबसे बड़ा कारण क्रोध ही है.

क्रोध एक विष है. क्रोध से व्यक्ति अपना वास्तविक स्वरूप भूल जाता है और सन्तुलन खो बैठता है. क्रोध एक दुःख की अर्न्तहीन कथा है.क्रोध भयंकर है. क्रोध दुःख का भण्डार है. क्रोध नरक का द्वार है. क्रोध अंधा है. क्रोध बहरा है. क्रोध विवेक का दुश्मन है. क्रोध जहर है. मनुष्य में भी जहर होता है. जब मनुष्य क्रुद्ध हो जाता है तब उसके शरीर में विष व्याप्त हो जाता है. जहर फैल जाता है. वैज्ञानिक प्रयोग अनुसार क्रुद्ध मनुष्य के खून को इंजेक्शन द्वारा खरगोश में चढ़ाने पर कुछ समय बाद खरगोश की मृत्यु हो जाती है. क्योंकि वह खून, क्रोधी व्यक्ति का जहरीला खून विष व्यापता है. वह खून, खून नहीं, विष-सिद्ध हो जाता है. क्रोध के क्षणों में खून जहर बन जाता है. अतः माताओं को सुझाव है कि क्रोध के समय न भोजन बनावें और न बच्चे को दूध पिलायें. इसका बहुत गहरा असर पडता है. क्रोध मनुष्य को अंधा बना देता है. सब कुछ जानते हुए भी मनुष्य क्रोध में जाने क्या से क्या कर देता है. अपना विवेक खोकर मनुष्य पागल बन जाता है. आंखे होते हुए अंधा हो जाता है.अपने ही परिवार में एक हरा भरा गुलशन क्रोध की आग से वीरान हो जाता है. हंसता-खेलता-मुस्कराता परिवार उजड़ जाता है. क्रोध सृजन नहीं, विध्वंस करता है.

एक व्यक्ति क्रोध में आकर पड़ोसी से लड़ने लगा, झगड़ा बढ़ता गया. एक सज्जन ने पूछा-क्या बात है? बोला इसने मुझे गाली दी है तो सज्जन ने बोला कि इसने गाली दी तो तूने ली क्यों. जैसे यह देने में स्वतंत्र है वैसे ही तुम लेने में. इसे बेरंग चिट्ठी की तरह रवाना कर देते. तुम्हारे शरीर से गाली कहीं लग तो नहीं गई. अगर तुम्हें नहीं चाहिए तो वह पुनः उसके पास चली जायेगी. गाली तो मन का विकार है. बिना कारण अपने मन को दुःखी करेगा. जैसे एक तीली पूरे वन को आग लगा देती है ऐसे ही एक गाली पूरे जीवन को बर्बाद कर देती है.

क्रोध मनुष्य को विवेकहीन बना देता है. बिना सोचे समझे कुछ भी करने के लिये तैयार हो जाता है. समझाने पर वह बहरा हो जाता है क्रोध ना जाने कितनों का जीवन नष्ट कर देता है.क्रोध में मनुष्य पागल होकर छोटे-बड़े माता-पिता, बहन-भाई, आदि की मान-मर्यादाओं को लांघ कर सब कुछ तहस नहस कर देता है. क्रोध का भूत उतरने पर पश्चाताप की अग्नि में जलता है.

क्रोध के नशे में चूर एक व्यक्ति ने अपने मित्र को पत्र में अनेक अपशब्द लिखे. एक संत ने उस पत्र को पढ़ा. सोचा, क्रोध में ये किसी की भी नही सुनेगा. अतः उसे समझाया! कि तू इस पत्र को आज नहीं कल अपने मित्र को भेजना. पर भेजने से पहले एक बार पढ़ लेना. उसने सन्त की बात मान ली.दूसरे दिन क्रोध शांत हुआ. पत्र पढ़ा.स्वयं अपने आपको कोसने लगा. मैंने ऐसे अपशब्द लिखे हैं. उसने पत्र फाड़कर फैंक दिया. दूसरे दिन सन्त के पास गया

और कहा महाराज! आपने मुझे बड़े पाप से बचा लिया. उस वक्त मैं क्रोध में था. तब न कुछ सुनने के लिये तैयार, न ही मानने को. तभी सन्त ने युक्ति से मुक्ति दिला दी. क्षणिक भर का क्रोध धर्म-कर्म, मान-मर्यादा, प्रेम-प्यार सब कुछ समाप्त कर देता है. अतः क्रोध के समय धैर्य रखें. जब भी क्रोध आवे तो कुछ देर मौन धारण कर लें. जिसके प्रति क्रोध आ रहा हो, आप वहां से दूर हट जायें. थोड़ा सा शीतल जल पीने से भी क्रोध शांत हो जाता है.

एक व्यक्ति क्रोधी था, जरा-जरा सी बात में वह महाकाल हो जाता था. क्रोध के नशे में उसे कुछ नहीं दिखता था. अपने परिवार पर सदैव क्रोध के अंगार बरसाता, क्रोध में आकर अपने छोटे बच्चे को मार डाला. शांत करने आई पत्नी को भी खूब डांटा और मारा. जब क्रोध का नशा शांत हुआ तब पछतावा होने लगा. बहुत दुःखी हुआ क्रोध चीज ही ऐसी है वह मनुष्य के सारे अरमानों को पल में नष्ट कर देती है. क्रोध दूसरे को ही नहीं अपितु स्वंय को उससे अधिक जलाकर पीड़ा देता है. क्रोध का प्रारंभ नादानी से होता है और अंत पश्चाताप में.

क्रोध आत्मा का स्वभाव नहीं.क्रोध मनुष्य शक्ति का विकृत रूप है. एक बार क्रोध करने से मनुष्य के अन्दर सुविकसित डेढ़ लाख कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं और जितने शुभ-कर्म जीवन में मनुष्य करता है वह नष्ट हो जाते हैं.

क्रोध नरक का प्रथम द्वार है. इस नरक व महादुःख से बचनेके लिये जीवनमें कभी भी क्रोध नहीं करना चाहिए.

क्रोध आने का उच्च कारण होता है किसी के द्वारा " अपशब्द " कह दिया हो या किसी ने कहना न माना हो अर्थात् अहंकार को चोट पहुंचना. आप स्वयं अन्दर देखते तो आप को दुख होता है. यदि उस बात को भूल जाओ और मन के अन्दर की घृणा निकाल दो तो कभी दुख होगा ही नहीं. क्रोध भी नहीं आयेगा. बीते हुए समय को पुनः पुनः मन में याद न आने दो. मन को आनन्दमय बनाने का प्रयास करो, क्या हुआ, क्या होगा. सब कुछ भूल कर समान भाव से वर्तमान में जीवन व्यतीत करो. फिर देखो कितना आनन्द आता है. साधनामय जीवन से क्रोध स्वतः ही शांत हो जाता है. वृक्ष के पास जाओ तो ठण्ड का आनन्द मिलता है. नदी के पास जाओ तो शीतलता, ऐसे ही किसी तीर्थ स्थल या किसी सन्त के पास जाओगे तो शान्ति व भक्तिभाव का आभास मिलेगा. आत्म नियन्त्रण रखकर पक्का संकल्प कर लो " आज के बाद हम क्रोध नहीं करेंगे" इस लेख को बार-बार पढने से क्रोध शांत हो जावेगा

गुरूकृपा

श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

क्रोध से ऐसे बचें

१. क्रोध अशुभ व पाप है. उसमें शीघ्रता न करके विलम्ब करो. क्योंकि क्रोध क्षणिक होता है. विलम्ब करने से क्रोध स्वतः ही शान्त हो जायेगा

२. क्रोध, अग्नि है. अग्नि को ईधन से नहीं अपितु जल से ठण्डा किया जाता है. क्रोध आने पर आप धीरे-धीरे गिलास में लेकर ठण्डा जल पीओ आप स्वयं अनुभव करेंगे कि क्रोध धीरे-धीरे शान्त हो गया.

३. क्रोधमें आवेश होता है. आवेशमें मनुष्य न जाने क्या से क्या कर देता है. आवेश क्षणिक होता है पर बड़ा नुकसान दायक! अतः क्रोध जिस स्थान पर अथवा जिसके प्रति आवे, तो आप वहांसे स्थान छोड़ दें. न आप उसे देखेंगे और न ही क्रोध आवेगा.

४. क्रोध आने पर दो-तीन मिनट चिन्तन करके मौन धारण कर लो. आप थोड़ी देर के लिये शान्त हो जाओ. क्रोध समाप्त हो जायेगा.

५. क्रोध में अगर सामने वाला अग्नि बन रहा हो तो आप पानी बन जाओ अर्थात् शान्त, चुप हो जाओ.

६. क्रोधित अवस्था में आप अपना चेहरा एक बार दर्पण में अवश्य देख लो.

७. वृक्ष से छाया, पानी से ठण्डक मिलती है वैसे ही क्रोधी व्यक्ति किसी सन्त-महात्मा के पास या मन्दिर-तीर्थ पर चला जाये, उसे अत्यन्त शान्ति मिलेगी.

८. आत्म सयंम व साधना से क्रोध शान्त हो जाता है.

९. क्रोध का सामना क्रोध से नहीं अपितु प्रेम से शान्त मन से करें और प्रायश्चित करने से क्रोधाग्नि शान्त हो जाती है.

१०. धृष्टता, जिद, अहंकार इन दोषों को दूर रखें. क्रोध नहीं आयेगा.

गुरूकृपा- श्री अमरापुर स्थान, जयपुर

१२ नवम्बर दीपोत्सव पर विशेष

अतीत में छिपा पर्वों का इतिहास

दीपोत्सव-आह! कहने मात्र से ही चारों ओर कुछ अलग ही अभिन्न अद्‌भुत आभा जगमगा रही है. पूरे भारतवर्ष में चमचमाती रोशनी का प्रतीक. प्रत्येक गृह भवनों के अग्र भाग में दीपों के लौ की कतारें यानी मोतीयों के हार समान प्रतीत हो रहे हों. नव वस्त्र, भूषण, संजावटी वस्तुऐं स्वर्ण इत्यादि से बाजारों को अलंकृत करना. सर्वगुण सम्पन्न धन पदार्थ दायनी माँ श्री लक्ष्मी जी का पूजन एवं नववर्ष की भांति नवीन कार्य प्रारम्भ करना मानो उज्जवल भविष्य की कामना. इन सभी खुशियों से भरपूर पर्व है दीपों का त्यौहार, दीपावली. किन्तु इन्ही के अतीत में छिपे गहरे इतिहास की खुशियों को कोई नहीं जान पाता. भारत के सभी पर्वों में कुछ न कुछ इतिहास अवश्य होता है जो कि भूतकाल में छिपा रहता है समक्ष प्रकट होना असंभव प्रतीत होता है. यह अतीत जो कि भूत-भविष्य व वर्तमान की जानकारी रखता है इसे पहचानना बड़ा मुश्किल कार्य है. इस अतीत की विडम्बना पुकार कोई विरला शख्स ही सुन सकता है.

पर्वों की मात्र खुशी-हर्षोल्लास से ही नहीं अपितु कुछ न कुछ शिक्षा-शिष्टाचार आदि अर्जित करनी चाहिए. अन्धकार को प्रकाश की ओर ले जाना पड़ेगा. अब मनाये जाने वाला पर्व "दीपावली". जो कि शुभ घड़ी का संकेत है प्रत्येक कार्य का शुभ मंगल अवसर है. इसी पर्व के छिपे गहरे अर्थ पर भी हमें ध्यान केन्द्रित करना चाहिये. जिसके उपलक्ष में यह दीपोत्सव बड़े धूम-धाम के साथ मनाया जा रहा है.

मर्यादा पुरूषोत्तम भगवान श्री राम के आगमन की खुशियों पर मनाये जाने वाला पर्व दीपोत्सव, मात्र आगमन की खुशियां ही नहीं अपितु आदर्श चरित्र का प्रतीक है.

प्रातः काल सभी गुरूजन माता-पिता व घर परिवार बड़े वृद्धजनों को नत मस्तक व प्रणाम करना. मृदुल वचन वाणी का संयम रख मधुर वाणी किलगारी करके सभी के मन मुदित करना. सभी नन्हें भ्राताओं को प्रेम की डोरी में बांधना. स्वयं अवतारी होते हुए भी गुरूजनों के प्रति अगाध श्रद्धा. शत्रुता से भी मितव्यता करना.स्वयं माता से बढ़कर विमाता पर सम्मान जताना एवं सर्वप्रथम प्रणाम करना. परिवार में विषघातनी मन्थरा जैसी को भी माँ कहकर उनका मान बढ़ाना और तो और पिता की आज्ञा शिराधार्य कर राज-पाट त्याग कर १४ वर्ष वनवास बिताना. कोई साधारण बात नहीं. कहां राज-पाट ओर कहाँ वनवास. उन्हीं महापुरूष भगवान श्री राम की अर्धागंनी जगत जननी माँ सीता भी कम नही, सभी राज-पाट का ऐश्वर्य त्यागकर सादा वस्त्र धारण कर पति देव के साथ १४ वर्ष वनवास में बिताये. अग्नि परीक्षा देना अर्थात् पूर्ण पतिव्रता नारी का सम्मान जताना.

ऐसे ही लक्ष्मण जी, कितना न बड़े भाई के प्रति अगाध प्रेम भाव. बड़े भाई के साथ १४ वर्ष वनवास काटना, कहते हैं कि भगवान श्रीराम जी सोते थे तो लक्ष्मण जी सारी रात पहरा देते थे. १४ वर्ष तक लक्ष्मण ने निद्रा के लिए पलकें तक नही झपकीं कितनी न भातृव्य भक्ति है. और भरत जी. उनकी व्यथा तो और भी अत्यधिक निराली अनूठी है कहने मात्र से अंखियों में अश्रुधारा बह उठती है. जब उन्हें पता चला मेरी माँ केकैयी ने मुझे राज्य देने हेतु मेरे भ्राता श्रीराम को १४ वर्ष वनवास भेज दिया है. तब की विलाप व्यथा अगर लिखने बैठें तो एक और इतिहास आपके सामने प्रस्तुत हो जायेगा. सारा राज-पाट त्यागकर भगवान श्री राम जी की चरण पादुका को राजगद्‌दी पर रखा. जो राज-काज के कार्य करने होते तो चरण पादुका से पूछा करता था. १४ वर्ष तक अपने भ्राता श्रीराम की तरह कन्द मूल फल खाये. महल का सुख त्यागकर झोपड़ी व भूमिगत जमीन पर सोये. १४ वर्ष तक अपनी माँ केकैयी का मुँह तक नहीं देखा. ऐसे थे भृातव्य भक्ति के भक्त भरत जी.

एक ही परिवार में एक-दूसरे के प्रति कितनी न मान-मर्यादा युक्त आदर्श चरित्रवाली है. ऐसा स्नेह बन्धन परिवार देखने पर भी मुश्किल ही मिल पायेगा. वचनबद्ध, कर्तव्यनिष्ठ, आज्ञा शिरोधार्य, स्नेह के हेतु भातृव्यता इत्यादि के प्रतीक थे भगवान श्रीरामचन्द्र जी. इन्ही के अनुसरण पर अगर चल सकेंगे तो हमें उन त्यौहारों, उत्सवों, पर्वों को मनाने का फायदा है अन्यथा सभी व्यर्थ ही रह जायेगा. अंत में यह अतीत सबके उज्जवल भविष्य की कामना करता है कि इन्ही पर्वों के इतिहास से कुछ न कुछ शिक्षा का अनुकरण करके अपने जीवन को सार्थक व प्रकाशमय बनाने का प्रयास करेंगे.

दीपोत्सव आप सभी के जीवन को अंधकार से प्रकाशमय की ओर ले जावे.शुभकामनाएं

गुरूकृपा,श्री अमरापुर स्थान, जयपुर (राज)

कार्तिक पर्व महिमा

दीपावली-पूजन

सांय ६:१० से ७:५६ व रात्रि १२:२६ से २:४५ बजे तक महालक्ष्मी पूजन का सर्वश्रेष्ठ महूरत है. निम्न मंत्र से भगवती लक्ष्मीजी का पूजन करके आरती करें.

सिद्धि बुद्धिप्रदे देवि भुक्ति मुक्ति प्रदायिनी.मंत्रपूते सदा देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते. नमस्ते तु महामाये श्री पीठे सुरपूजिते. शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तु ते. भवानि त्वं महालक्ष्मीः सर्वकाम प्रदायिनी. सुपूजिते प्रसन्ना स्यान्महालक्ष्मी नमोस्तु ते. ऊँ सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्वदुष्ट भयंकरी. सर्व दुःखहरे देवि महालक्ष्मी नमोस्तु ते.

गोपाष्टमी महोत्सव

(कार्तिक शुक्ल अष्टमी)

गौ का महात्म्य एवं महत्व बताने की आवश्यकता नहीं है तथा यह भी बताने की आवश्यकता नहीं कि भगवान श्रीकृष्ण का अतिप्रिय 'गोविन्द' नाम गायोंकी रक्षा करने के कारण ही पड़ा. कार्तिक शुक्ल प्रतिपदासे लेकर सप्तमीतक गो-गोप-गोपियों की रक्षा के लिये श्रीकृष्ण गोवर्धन पर्वत को धारण किये रहे. आठवें दिन इन्द्र की आँख खुली और वे अहंकार रहित होकर भगवान् श्रीकृष्ण की शरण में आये. कामधेनु ने भगवान् का अभिषेक किया और उसी दिन भगवान्का 'गोविन्द' नाम पड़ा.

उसी समय से कार्तिक शुक्ल अष्टमी को गोपाष्टमी का उत्सव मनाया जाने लगा, जो अब तक चला आ रहा है. कार्तिक शुक्ल अष्टमी को प्रातःकाल गौओं को स्नान करायें, गन्ध-पुष्पादि से उनका पूजन करें और अनेक प्रकार के वस्त्रालंकारों से अलंकृत करके गोपालों (ग्वालों) का पूजन करें, गायों को गोग्रास देकर उनकी परिक्रमा करें और थोड़ी दूर तक उनके साथ जायं तो सब प्रकार की अभीष्ट-सिद्धि होती है. गोपाष्टमी को सांयकाल गायें चरकर जब वापस आयें, उस समय भी उनका आतिथ्य, अभिवादन और पंचोपचार-पूजन करके कुछ भोजन करायें और उनकी चरणरज को मस्तकपर धारण करें उससे सौभाग्य की वृद्धि होती है.

प्रेम प्रकाश आश्रम ब्यावर का परिवर्तित फोन नं.-01462-258198 इच्छुक प्रेमी नोट करें

अक्षयनवमी

(कार्तिक शुक्ल नवमी)

कार्तिक मास के शुक्लपक्ष की नवमी अक्षय नवमी कहलाती है. इस दिन स्नान, पूजन, तर्पण तथा अन्नादिके दान से अक्षय फल प्राप्त होता है. इसमें पूर्वाह्नव्यापिनी तिथि ली जाती है. यदि वह दो दिन हो या न हो तो 'अष्टम्या' नवमी विद्धा कर्तव्या फलकाङ्क्षिणा. न कुर्यान्नवमीं तात दशम्यां तु कदाचन-ब्रह्मवैवर्तपुराणके इस वचन के अनुसार अष्टमीविद्धा नवमी ग्रहण करनी चाहिये. दशमीविद्धा नवमी त्याज्य है.

व्रत-विधान- प्रातःकाल स्नानादिके अनन्तर दाहिने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प आदि लेकर निम्न प्रकार से व्रत का संकल्प करें- अद्येत्यादि अमुकगोत्रोऽमुक शर्माहं (वर्मा गुप्तो वा) ममाखिलपापक्षयपूर्वकधर्मार्थकाममोक्षसिद्धिद्वारा श्रीविष्णुप्रीत्यर्थ धात्रीमूले विष्णुपूजनं धात्रीपूजनं च करिष्ये. ऐसा संकल्पकर धात्रीवृक्ष (आँवले)- के नीचे पूर्वाभिमुख बैठकर ऊँ धात्र्यै नमः मन्त्रसे आवहनादि षोडशोपचार पूजन करके निम्नलिखित मन्त्रो से आँवले के वृक्षकी जड़में दूध की धारा गिराते हुए पितरों का तर्पण करें.

पिता पितामहाश्चान्ये अपुत्रा ये च गोत्रिणः
ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः
आब्रह्मस्तम्बपर्यन्तं देवर्षिपितृमानवाः
ते पिबन्तु मया दत्तं धात्रीमूलेऽक्षयं पयः

इसके बाद आंवले के वृक्ष के तने में निम्न मन्त्र से सूत्रवेष्टन करें.

दामोदरनिवासायै धात्र्यै देव्यै नमो नमः.
सूत्रेणानेन बध्नामि धात्रि देवि नमोऽस्तु ते..

इसके बाद कर्पूर या घृतपूर्ण दीपसे आंवले के वृक्ष की आरती करें तथा निम्न मन्त्र से उसकी प्रदक्षिणा करें-

यानि कानि च पापानि जन्मान्तरकृतानि च.
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिणपदे पदे..

इसके अनन्तर आंवले के वृक्ष के नीचे ब्राह्मण-भोजन भी कराना चाहिये और अन्तमें स्वयं भी आंवले के वृक्ष के सन्निकट बैठकर भोजन करना चाहिये. एक पका हुआ कुम्हड़ा (कूष्माण्ड) लेकर उसके अंदर रत्न, सुवर्ण, रजत, रूपया आदि रखकर संकल्प करें-

ममाखिलपापक्षयपूर्वकसुखसौभाग्यादीनामुत्त-रोत्तराभिवृद्धये कूष्माण्डदानमहं करिष्ये.

तदन्तर विद्वान् तथा सदाचारी ब्राह्मणको तिलक करके दक्षिणासहित कूष्माण्ड दे दे और निम्न प्रार्थना करे-

कूष्माण्डं बहुबीजाढयं ब्रह्मणा निर्मितं पुरा.
दास्यामि विष्णवे तुभ्यं पितृणां तारणाय च..

पितरों के शीतनिवारणके लिये यथाशक्ति कम्बल आदि ऊर्णवस्त्र भी सत्पात्र ब्राह्मणको देना चाहिये. यह अक्षय नवमी धात्रीनवमी तथा कूष्माण्डनवमी भी कहलाती है. घर में आंवले का वृक्ष न हो तो किसी बगीचे आदि में वृक्षके समीप जाकर पूजा, दानादि करने की भी परम्परा है अथवा गमले में आंवलेका पौधा रोपित कर घर में यह कार्य सम्पन्न कर लेना चाहिये.

देवोत्थापनी एकादशी

(कार्तिक शुक्ल एकादशी)

यद्यपि भगवान क्षणभर भी सोते नहीं है, फिर भी भक्तों की भावना ' यथा देहे तथा देवे' के अनुसार भगवान चार मास शयन करते हैं. भगवान् श्रीविष्णुके क्षीरशयनके विषयमें यह कथा प्रसिद्ध है कि भगवान ने भाद्रपदमासकी शुक्ल एकादशी को महापराक्रमी शंखासुर नामक राक्षस का मारा था और उसके बाद थकावट दूर करने के लिये क्षीर सागर में जाकर सो गये. वे वहां चार मास तक सोते रहे और कार्तिक शुक्ल एकादशी को जगे. इस एकादशी का नाम ' देवोत्थापनी' या ' प्रबोधिनी एकादशी' पड़ गया. इस दिन व्रत के रूप में उपवास करने का विशेष महत्व है. उपवास न कर सकें तो एक समय फलाहार करना चाहिये और संयम-नियमपूर्वक रहना चाहिये. एकादशी को भगवन्नाम-जप-कीर्तनकी विशेष महिमा है. कार्तिक शुक्ल एकादशी को भगवत्प्रीतिके लिये पूजा-पाठ, व्रत-उपवास आदि किया जाता है.

इस तिथिको रात्रि-जागरण का विशेष महत्व है. रात्रि में भगवत्सम्बन्धी कीर्तन, वाद्य, नृत्य और पुराणों का पाठ करना चाहिये. धूप, दीप, नैवेद्य, पुष्प, गन्ध, चंदन, फल और अर्घ्य आदि से भगवान की पूजा करके घंटा, शंख, मृदंग, आदि वाद्यों की ध्वनि तथा निम्न मन्त्रोंद्वारा भगवान् से जागने की प्रार्थना करे-

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविन्द त्यज निद्रां जगत्पते.
त्वयि सुप्ते जगन्नाथ जगत् सुप्तं भवेदिदम्..
उत्तिष्ठोत्तिष्ठ वाराह दंष्ट्रोद्धृतवसुन्धरे.
हिरण्याक्षप्राणघातिन् त्रैलोक्ये मंगलं कुरू..

इसके बाद भगवान की आरती करें और पुष्पांजलि अर्पण करके निम्न मन्त्रों से प्रार्थना करें-

इयं तु द्वादशी देव प्रबोधाय विनिर्मिता.
त्वयैव सर्वलोकानां हितार्थ शेषशायिना..
इदं व्रतं मया देव कृतं प्रीत्यै तव प्रभो.
न्यूनं सम्पूर्णतां यातु त्वत्प्रसादाज्जनार्दन..

तदन्तर प्रहलाद, नारद, परशुराम, पुण्डरीक, व्यास, अम्बरीष, शुक, शौनक और भीष्मादि भक्तों का स्मरण करके चरणामृत और प्रसाद का वितरण करना चाहिये. प्रबोधिनी एकादशीकी पारणामें रेवती (नक्षत्र) का अन्तिम तृतीयांश हो तो उसे त्यागकर भोजन करना चाहिये.

कार्तिक पूर्णिमा

कार्तिक-पूर्णिमा बड़ी पवित्र तिथि है. इस तिथि को ब्रह्मा, विष्णु, शिव, अंगिरा और आदित्य आदि ने महापुनीत पर्व प्रमाणित किया है. अतः इसमें किये हुए स्नान, दान, होम, यज्ञ और उपासना आदि का अनन्त फल होता है. इस दिन गंगा-स्नान तथा सांयकाल दीपदान का विशेष महत्त्व है,इसी पूर्णिमा के दिन सांयकाल भगवान का मतस्यावतार हुआ था, इस कारण इसमें किये गये दान, जपादि का दस यज्ञों के समान फल होता है. इस दिन यदि कृतिका नक्षत्र हो तो यह महाकार्तिकी होती है, रोहिणी हो तो इसका फल और भी बढ़ जाता है.

जो व्यक्ति पूरे कार्तिकमास स्नान करते हैं उनका नियम कार्तिक-पूर्णिमा को पूरा हो जाता है. कार्तिक-पूर्णिमा के दिन प्रायः श्रीसत्यनारायण व्रत की कथा सुनी जाती है. सांयकाल देव-मन्दिरों, चौराहों, गलियों, पीपल के वृक्षों तथा तुलसी के पौधों के पास दीपक जलाये जाते हैं और गंगाजी को भी दीपदान किया जाता है. काशी में यह तिथि देवदीपावली -महोत्सवके रूप में मनायी जाती है.

चान्द्रायणव्रत की समाप्ति भी आज के दिन होती है. कार्तिक-पूर्णिमा से आरंभ करके प्रत्येक पूर्णिमा को व्रत और जागरण करने से सकल मनोरथ सिद्ध होते हैं. कार्तिक-पूर्णिमा के दिन गंगा आदि पवित्र नदियों के समीप स्नान के लिये सैंकडो नर-नारी एकत्र होते हैं, जो बड़े भारी मेलेका रूप बन जाता है. सिक्ख धर्मावलम्बी इस दिन गुरूनानकदेव की जयन्ती का उत्सव मनाते हैं.

प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप शिविर बाली

आंखनि देखी LIVE

२५ करोड़ की जनसंख्या, विश्व में सर्वाधिक मुस्लिम आबादी, कभी सदियों तक हिन्दू राजघरानों का शासन, अभी भी हिन्दू सनातन संस्कृति के महत्वपूर्ण नगरों बाली, जावा, सुमित्रा इसी देश में, आज भी मार्गों के नाम पाण्डवों के नाम पर, स्थान-स्थान पर हिन्दू देवी देवताओं के स्टेच्यू, प्रचलित मुद्रा में अनेक नोटों पर विघ्नविनायक गणेशजी की तस्वीर, साफ सफाई युक्त अनुशासित नगर नियोजन, ऐसे मुस्लिम राष्ट्र इण्डोनेशिया की राजधानी जाकरता का पॉश इलाका जालान जौहर जहां पर होटल्स श्रृखंला के अतिरिक्त अन्तर्राष्ट्रीय इलेक्ट्रोनिक कंपनी सोनी का भव्यतम कार्यालय उसी के ठीक पास की कोठी में गहमा गहमी सा माहौल. आने जाने वाले लोगों के चेहरो पर उमंग भरी खुशी की अधिकता सहज में ही देखी जा सकती थी. तारीख थी ६ जुलाई समय इण्डोनेशियाई लगभग दोपहर का.

प्रेम स्वरूप सत्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज श्री प्रेम प्रकाश मण्डली के संतों स्वामी मनोहर प्रकाशजी, स्वामी जयदेवजी, संत हरीओमलालजी, संत रमेशप्रकाशजी, संत लालूरामजी, संत नन्दलालजी, संत हेमन्तजी, संत लक्ष्मणजी व भक्त वीरभानदास के साथ श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के प्रथम मेल-मिलाप सम्मेलन के लिये जाकरता पहुंचकर इस समय गोप सामतानी की कोठी पर जाकरता वासियों को दर्शनों से कृतार्थ कर रहे थे. अब भला जाकरता प्रेम प्रकाश मण्डली के भक्तगणों की प्रसन्नता का क्या कोई पार होगा. जब इस दिन के लिये पिछले काफी समय से मण्डली कार्यकर्ताओं द्वारा शंकर-गोप सामतानीजी के नेतृत्व में अकथनीय श्रम करके तैयारियां की जा रही थीं. जब सत्गुरू भगवान के मनभावन मुस्कराती छवि के दर्शनानंद का लाभ प्रेमियों को मिला तो वे अपने को सबसे अधिक भाग्यशाली क्यों ना समझेगें.

मैं मांगत नहिं और कुछ, सन्त दरस हरि देह.
कह टेऊँ दर्शन करे, सफल करूं तन एह..

६ जुलाई की अगली फ्लाईटों से अलग-अलग देशों से प्रेमियों का पहुंचना. और जाकरता प्रेम प्रकाश मण्डली के समर्पित सेवाधारी भी पूरी लगन के साथ विमानतल से ही सेवा कार्यों में संलग्न. खास बात यह भी रही, कि जाकरता के अन्तर्राष्ट्रीय विमान तल पर मण्डली द्वारा आगन्तुक प्रेमी भक्तों के लिये ऐसी व्यवस्था की गयी थी कि एमीग्रेशन के लिये भी कतार में लगने की आवश्यकता नहीं थी. ११ जुलाई तक तो काफी संख्या में भक्तों का आगमन प्रेमप्रकाशी मेल-मिलाप के लिये हो चुका था.

परस्पर एकता, सद्भाव का सन्देश लिये प्रेमियों के रहने की व्यवस्था होटलों के अतिरिक्त प्रेमियों के बंगलों पर भी की गयी थी. सेवा-सत्कार में तत्पर सेवाधारी सभी भक्त प्रेमियों की हर छोटी-बड़ी जरूरत का ख्याल प्रेम पूर्वक रख रहे थे. जाकरता के प्रेमियों की एक खास विशेषता यह भी थी कि सभी के चेहरे सदैव मुस्कारते ही रहते थे. बोलना तो मीठा. कोई मीठी वाणी बोलना सीखे तो जाकरतावासियों से.

मिठा बोलण निव चलण, हथौ भी कुछ देह.
रब तिनां दी बगलड़ी, से जंगल क्या ढूंढेह..

११ जुलाई के दोपहर सांयकालीन सत्संग में तालियों की गूंज से सभी आये मेहमानों का अभिनन्दन स्वागत जाकरता मण्डली की ओर से गोप सामतानी द्वारा किया गया. सिन्ध से आये प्रतिनिधि मण्डल का भी गर्मजोशी से स्वागत किया गया. प्रतिदिन प्रातः दोपहर सांय अलग-अलग स्थानों घरों में सत्गुरू महाराज जी के साथ सत्संग-विचरण में भाग लेते हुए १३ जुलाई को सत्गुरू महाराजजी की आज्ञा से दो टूरिस्ट बसों में प्रातः १० बजे प्रेमियों को मिनी इण्डोनेशिया जो कि जाकरता से ४० मिनट की दूरी पर एक पर्यटक स्थल बना हुआ है ले जाया गया, जहां पर घूमते एवं एक थ्रीडी थियेटर में ३५ मिनट की इण्डोनेशिया दर्शन की रोमांचकारी फिल्म देखकर, २:३० घन्टे की यात्रा करते बस में ही भजन सत्संग चर्चाओं का आनन्द लेते, चाय बागानों को देखते इण्डोनेशिया के ठण्डे स्थल पुन्चाक में पहाड़ों से घिरे सैकड़ों मीटर ऊँचे नीचे घुमावदार रास्तों से होते हुए, प्रेमी दलपतजी के फार्म हाउस पर पहुंचे, जहां पर भोजन भण्डारे की व्यवस्था भी की गयी थी. भोजन प्रसादी पाकर

पुन्चाक में प्रकृति की अद्भुत छटा का अवलोकन करके रात्रि ८ बजे वापिस जाकरता में आज के सत्संग स्थल शंकर मन्दिर पहुंचे. इसी प्रकार १४ जुलाई को मुख्य आयोजनकर्ता शंकर-गोप सामतानी (फिल्म निर्माता-निदेशक) के फिल्मांकन (शूटिंग) स्थलों पर जाकर सीरियलों-फिल्मों के कुछ दृश्य फिल्माते (शूटिंग) करते हुए प्रेमियों को दिखाये गये. १४ जुलाई को जाकरता के सत्नाम साक्षी मन्दिर के दर्शन व सत्संग का लाभ सत्गुरू महाराज जी के सानिध्य में आये हुए प्रेमियों ने लिया. यहीं पर सभी को १५ तारीख बाली चलने के लिये विस्तार पूर्वक सूचना दी गयी.

और वह घड़ी भी अब आ पंहुची, जिसका जाकरतावासियों सहित भारत, सिन्ध (पाक), अमेरिका, ब्रिटेन, स्पेन, हांगकांग, सिंगापुर, बैंकांक, फिलीपीन्स इत्यादि देशों से आये प्रेमी बड़ी बेसब्री से प्रतीक्षा कर रहे थे.

15 जुलाई 2004 प्रेम प्रकाश मण्डली जाकरता द्वारा की गयी व्यवस्थाओं के अनुसार ४५० के लगभग प्रेमियों को स्टार एयरवेज की डोमेस्टिक (घरेलू) तीन उड़ानों द्वारा बाली ले जाने का कार्यक्रम था प्रातः ६ बजकर कुछ मिनट पर पहिली उड़ान, दूसरी उड़ान दोपहर १२ बजकर १० मिनट पर व तीसरी उड़ान ३ बजे की थी, प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य सत्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज सन्तमण्डली, हिन्द-सिन्ध व शेष विश्व के कुछ प्रेमीयों के साथ हम भी इसी उड़ान के लिये सत्गुरू महाराज जी के साथ प्रातः १० बजे तक घरेलू विमानतल के टर्मिनल-२ पर पहुंचे. ठीक १२ बजकर १० मिनट पर विमान बाली के लिये रवाना हुआ. यहां पर पाठकों को बताना जरूरी है कि जाकरता का समय भारतीय समय से डेढ़ घण्टा आगे है अर्थात् भारत में दोपहर के १२ तो जाकरता में १:३० बजा होता है. अब एक ध्यान देने वाली बात और है जैसे हमारे भारतवर्ष की हर दिशा में मानक समय एक ही रहता है लेकिन इण्डोनेशिया की चारों दिशाओं का समय अलग-अलग रहता है. चूंकि हम सभी बाली जा रहे हैं तो हवाई जहाज में ही उसका मानक समय जाकरता से एक घण्टा आगे का बताया गया इस हिसाब से भारतीय समय से बाली का समय ढाई घण्टा आगे है.

बाली समयानुसार सांय २ बजकर ४५ मिनट पर सत्गुरू महाराजी का विमान बाली पहुंचा. विमान से बाह[र] आते ही सत्गुरू महाराजजी सन्तमण्डली का भावभीना स्वाग[त] प्रेमप्रकाश मण्डली जाकरता की ओर से श्री शंकर सामताण[ी] व साथियों द्वारा किया गया. विमानतल पर इण्डोनेशिय[ा] सरकार की ओर से वहां के धर्म मन्त्रालय व हिन्दू बौ[द्ध] समाज के प्रमुख महानिदेशक (केबीनेट मंत्री समकक्ष) [ने] परिवार व साथियों सहित सत्गुरू महाराज संतमण्डली [व] प्रेमियों का पुष्पहार पहिनाकर बड़ी ही आत्मीयता के सा[थ] स्वागत किया और यही अवसर था जब एयरपोर्ट पर ह[ी] भक्तलोग नाचने गाने जयजयकार करने लगे. यहां पूज्[य] महाराजश्री जी को एक लम्बी शेवरलेट गाड़ी जिसे नय[ी] दुल्हन की भांति सजाया संवारा गया था, में आदर सहित आग्रह करके विराजमान किया गया, सन्तगण भी उसी गाड़[ी] में व दूसरी गाड़ी में शोभनीक हुए. प्रेमी भक्तों को एक सुन्दर सी वातानुकूलित लक्जरी बस में ससम्मान बैठाय[ा] गया. आगे पुलिस पायलट गाड़ी स्वामीजी सन्तों की गाड़िय[ों] के पश्चात् बस, चल पड़े सम्मेलन स्थल की ओर.

समय ठीक ३:२० होटल इन्टर कान्टीनेन्टल रिसोर्[ट] सत्गुरू महाराजजी की गाड़ी पहुंचते ही वहां पूर्व में एकत्रित प्रेमी भक्तों सेवादारों के चेहरे हर्ष के आवेग से चमक उठते हैं, होटल का स्टाफ व स्वागतकर्मी भी मुस्तैद हो जाते हैं वर्दीधारीकर्मी कार का दरवाजा खोलकर पूरे सम्मान के साथ अभिवादन करके, सत्गुरू महाराजजी को पधारने के लिये निवेदन करता है. सत्गुरू टेऊँरामजी महाराज की जयघो[ष] के साथ होटल परिसर गूंज उठता है. वहां के स्थानीय वाद्[य] यन्त्रों (जलतरंग-तुरही इत्यादि) की सुमधुर गूंज में लोक नर्तकियां हाथों में दीपथाल सजाये स्वागत नृत्य में तल्लीन हैं पुष्पमालायें पुष्पवर्षा के साथ मुख्यद्वार के दोनों ओर थोड़ी दूर पर एकसी वेशभूषा में होटल कर्मी (महिला-पुरूष) सभ[ी] का हाथ जोड़कर सत्नाम साक्षी कहते हुए अभिवादन करना, सबके मन को भा गया-उनका सत्नाम साखी बोलना लॉबी में पहुंचकर स्वागत सत्कार उपरान्त सत्गुरू महाराजजी को पुनः वापिस उसी गाड़ी में बिठाकर, सारी संगति के साथ आयोजक प्रेसीडेंशीयल सुईट में जहां पर स्वामीजी के विश्राम के लिये आवास स्थल बनाया गया था, में छोड़ने के लिये एक शोभायात्रा के रूप में चले.

प्रेसीडेंशीयल सुईट याने राष्ट्रपति/प्रधानमंत्री के लिये सुरक्षित आवास प्रवास स्थल. तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को भी बाली यात्रा के दौरान इसी सुईट में ठहराया गया था. वहां पहुंचते ही सन्त मण्डली व भक्तों का आश्चर्यमिश्रित हर्षातिरेक उल्लास. आप भी सुनेगें/देखगें तो ऐसी मौज में शामिल हो ही जायेगें. पंच सितारा (फाईव स्टार) रिसोर्ट में अमरापुर धाम टण्डेआदम के दर्शन, अविस्मरणीय अदभुत घटना. आमोद प्रमोद के सर्वसुविधापूर्ण होटल में अमरापुर धाम. साथ ही कर्मियों का सतूनाम साक्षी उच्चारण से स्वागत अभिवादन. सचमुच विलक्षण थे यह सब दृश्य.

प्रेसीन्डेशियल सुईट जो कि १५ से १८ जुलाई तक अब हमारे प्यारे सतुगुरू महाराज की तपःस्थली होगा. इसी के दायीं ओर वाले मुख्य द्वार को अमरापुर धाम टण्डोआदम के मुख्यद्वार का रूप वह भी पक्के निर्माण के साथ किया गया था. सतुगुरू महाराजजी को छोड़ने के लिये जो संगत अमरापुर धाम तक चली, विस्मय से नेत्र खुले से रहे गये, ऐसा अविश्वसनीय दृश्य. आयोजकों-व्यवस्थापकों को साधुवाद, ऐसी कल्पना को मूर्तरूप देने के लिये. इस आनन्दपूर्ण अमरापुर टण्डेआदम के दर्शन कर सभी दर्शक भाव-विभोर हो गये. १५ मिनट तक नाचने गाने झूमने के पश्चात् महाराजश्री को सुईट अब सुईट न कहकर अमरापुर धाम कहेगें. इन तीन दिनों तक तो. अमरापुर धाम का बैठक कक्ष जो को विशालता के साथ-साथ सुन्दरता में भी बेजोड़ कक्ष था. में सुन्दर से आसन पर सतुगुरू महाराजजी आसनासीन हुये. कुछ देर धुनि लगाने के पश्चात् सतुगुरू महाराजजी की आज्ञा से भक्तप्रेमी यहां से विसर्जित होकर होटल में आयोजकों द्वारा सभी को (दो-दो व्यक्तियों के लिये)रूम नम्बर्स देकर उन्हें कार्यक्रम संबंधी फाईल व सतूनाम साक्षी युक्त रिबन डोरी सहित उनके नाम के बैजेज पहनने को दिये गये. इस मध्य होटल स्टॉफ द्वारा मुंह-आंखों को साफ करने के लिये गरम नैपकिन (स्टरलाईज) दिये जाकर सभी को ऑरेंज जूस भी दिया जा रहा था. अब सभी भक्त प्रेमी अपने अपने कमरों में पहुंचकर तरोताजा होकर पुरी केनकाना बालरूम में चाय पान के लिये पहुंचने लगे. क्योंकि निर्धारित कार्यक्रमानुसार ५ से ६ बजे तक इण्डियन टी का आयोजन था. और कार्यक्रम वैसे ही लगभग ४५-६० मिनट विलम्ब से चल रहा था. चाय स्वलपाहार के पश्चात् सभी प्रेमी भक्त सत्संग के लिये पाण्डवा रूम जो कि एक विशाल सभाकक्ष (वातानुकूलित) लगभग ५०० व्यक्तियों के लिये था, में पहुंचने लगे. सायं ६:३० से ८ बजे तक मुहिंजा सतुगुर मिठा-आहिनि सभ खां सुठा विषय पर संतमण्डली व सतुगुरू महाराजजी के प्रवचनों की ज्ञानगंगा निर्झरणी का अमृत सबको निष्पक्ष रूप से मिलना था. पूर्व नियत कार्यक्रम से १ घण्टा विलम्ब से शुरू होकर सत्संगामृत पान का यह कार्यक्रम ७:३० से ९ बजे तक आरती गायन-पल्लव के साथ सम्पन्न हुआ. सतुगुरू महाराजजी के प्रवचन अलग से दिये गये हैं. सत्संग सभा के मध्य में इण्डोनेशिया सरकार की ओर से धर्म मन्त्रालय के महानिदेशक द्वारा सतुगुरू महाराजजी का अभिनन्दन किया गया. जिसका विवरण पृष्ठ ४२ पर देखें.

सत्संग रस से सराबोर प्रेमीगण सतुगुरू भगवान संतमण्डली के साथ (ओपन थियेटर) खुले रगमंच पर पहुंचे, जहां स्थानीय लोक कलाकारों द्वारा स्वागत गीत-नृत्य प्रस्तुति दी गयी. जिसका विवरण भी इसी पत्रिका में दिया गया है. सांस्कृतिक कार्यक्रम के पश्चात् पूरी केनकाना बालरूम में भोजन भण्डारे द्वारा उदर अग्नि को शान्त किया गया तत्पश्चात् विश्राम.

16 जुलाई 2004 इण्टरकान्टीनेन्टल रिसोर्ट व केराटॉन जिम्ब्रान रिसोर्ट में ठहरे सभी भक्तजनों के लिये चाय-दूध-नाश्ते की व्यवस्था दोनों स्थानों पर श्रेष्ठतम तरीके से सुरूचिपूर्ण की गयी थी. अमेरिकन ब्रेकफास्ट में तरह-तरह के फल, फलों के रस, विभिन्न प्रकार के बिस्कुट, टोस्ट, मक्खन, शहद, जैम, कार्नफ्लेक्स, चाकलेट इत्यादि चीजें रखी गयी थी. इस कार्य से निवृत हो. सभी प्रेमी सत्संग हॉल में सत्संग सरिता का पान करने के लिये एकत्रित होने लगे.

आज प्रातःकालीन सत्संग का विषय था मनड़ा गफलत में न गुजार. प्रातः ८:३० से १० बजे तक सत्संग ज्ञानगंगा का अमृत पीकर प्रेमीगण अगले निर्धारित कार्यक्रम, जो कि आयोजकों द्वारा प्रातः १० से सायं ५ बजे तक पर्यटनीय स्थलों का दर्शन कार्यक्रम रखा गया था.

रामायणयुगीन ऐतिहासिक महत्व की रमणीक स्थली

बाली, बताते हैं कि बाली हर उस स्थान पर संध्यावन्दन करने (देवों से प्राप्त शक्ति से) पहुंचते थे, जहां सूर्यास्त होने को होता था. ऐसे में इस दूरस्थ प्रदेश में भी बाली आते ही होगें इसमें अविश्वास जैसा कोई कारण नहीं दिखता, इसी कारण शायद इस प्रदेश को बाली नाम से सम्बोधित किया जाने लगा हो. प्रकृति की अद्भुत अनिर्वचनीय कृपा का प्रमाण तो हम सभी को हर समय हर स्थान पर होता ही रहता है. लेकिन बाली में प्रकृति ने जो सौन्दर्य छटा बिखेरी है. उसका वर्णन इस लेखनी के बस की बात तो है नहीं. ऐसे धार्मिक रमणीय स्थलों के दर्शनों के लिये होटल परिसर में तैयार खड़ी पर्यटक बसें जो कि वातानुकूलित होकर १० की संख्या में मौजूद थी, जिन पर क्रम संख्या मेल-मिलाप सम्मेलन सम्बन्धी सूचनाएं भी लिखी गयी थी. प्रत्येक बस में होटल की ओर से गाईड व प्रेमप्रकाश मण्डली की ओर से दो से चार सेवाधारी भी प्रेमियों की सेवार्थ उपस्थित थे, सभी बसों में प्रेमियों के बैठते ही, सतुगुरू महाराजजी संत जयेदवजी, संत रमेश प्रकाशजी, संत हरीओमजी, गोप सामतानी के साथ बड़ी शेवरलेट गाड़ी में सवार हुए. आगे-आगे पुलिस पायलट गाड़ी, उसके पीछे सतुगुरू महाराजजी की गाड़ी फिर क्रमानुसार बसें, ये लम्बा काफिला चल पड़ा. ठीक ११ बजे पर्यटन स्थलों की सैर को. लगभग डेढ़ पोने दो घण्टे की यात्रा कर पुरातनकालीन बैसाखी मन्दिर पहुंचा, यहां से दर्शन करते अपने अपने वाहनों से प्रकृति के सुरम्य नजारों को देखते किनटामनी जो कि समुद्र की सतह से सैकड़ों मीटर ऊँची पहाड़ियों की श्रृखंला के बीच बना हुआ था. जहां पहुंचने पर थोड़ी ठण्डक का भी एहसास हो रहा था, में लन्च दोपहर के भोजन की व्यवस्था की गयी थी. आयोजकों की दूरदर्शिता की दाद देनी पड़ेगी कि इतने मनोयोग से इस प्रकार के सुन्दरतम कार्यक्रम को मूर्तरूप दिया. इस होटल से चारों ओर का नजारा इतना तो मनमोहक था, नीचे झरने-समुद्र, हरियाली, ऐसा महसूस हो रहा था कि क्या बस क्या यही स्वर्ग है, नहीं यह तो बाली प्रदेश का सुरम्य किनटामनी स्थल है. यहां से फिर अगले पर्यटन स्थल पर एलीफेन्ट केव्स, जमीन से काफी नीचे, यहां जमीन से ४२ सीढ़ियां नीचे की ओर चलकर हाथीरूप गुफा में शिव पिंडी के दर्शन कर मन भक्ति भाव से आनंदित हो उठा. प्रेमियों के अनुनय पर यहां पर पूज्य महाराजश्री ह अजगर धारण कर शिव रूप के दर्शन कराये गये. यह सांय ५:४५ तक वापिस अमरापुर (होटल) पहुंचे. सायंका चाय की चुस्कियों के साथ हल्का फुल्का स्वलपाहार.

सायंकालीन सत्संग का विषय शल नाम न तुहि विसिरे पर संतमण्डल व सतुगुरू महाराज की सारग वाणी द्वारा उपदेशामृत का पानकर सभी श्रोताओं का हृदय संकल्पशील हो उठा. कि हेनाथ हेहरि अब आ मधुर कल्याणकारी नाम सदैव हमारे रोम-रोममें व्याप्त रहे

सत्संग के अलौकिक आनन्द में डूबे भक्तजन ९ बजे सतुगुरू महाराजजी के सानिध्य में स्थानीय कला की प्रस्तुति रामलीला बेले द्वारा हरिलीला का सजीव चि मंचन के माध्यम से देखने पहुंचे ओपन थियेटर में, इ पूरा अहिवाल इसी अंक में अलग से भी दिया गया है

17 जुलाई–रात्रि विश्राम के पश्चात् प्रातःकालीन निवृ के उपरान्त (दोनों होटल्स) अमरापुर धाम में अमेरि नाश्ते से स्फूर्ति लेते हुए सभी प्रेमीजन सत्संग सत्र प्रातःकालीन अमृत वितरण कार्यक्रम में पहुंचे आहे त **गडु भगवान** विषय पर सतुगुरू महाराज -संतों के श्रीमुख प्रवाहित श्री गंगा का अमृत पीकर प्रेमियों को अनुभूति लगी कि हमारे हर कार्य में परमेश्वर सहाई है. स समापन आरती-प्रसाद वितरण के पश्चात् आज के प कार्यक्रम में सम्मिलित थे 'तन्हा लॉट' व 'मन्की फा तन्हा लाट काफी दूरी पर समुद्र में पुरातन समय का मन्दिर है. जिसका विशेष वर्णन भी आप आगामी अंक पढ़ेगें. वहीं पर बाहर मार्केट होने के कारण भक्तजन श मार्केट का अवलोकन भी करने लग गये. इस वजह निर्धारित कार्यक्रम में काफी विलम्ब हो गया. यहां गुरूदेव की आज्ञा से व्यवस्थापकों ने मन्की फारेस्ट (व का जंगल) का कार्यक्रम निरस्त कर, पुनः वापिस अमरापु की ओर काफिला रवाना हुआ. आज भी उपरोक्त का की रूपरेखा कल जैसी थी. यहां तक कि जो जो प्रेमी जिस नम्बर की बस में थे. आज भी वहीं पर उनको बि गया था. सायं ४:३० बजे तक वापिस अमरापुरधाम अ भोजन प्रसादी पाकर, सभी भक्तगण व सतुगुरू महारा अल्प विश्रामी हुए.

सांयकालीन संत्सग सत्र का विषय मूंखे जोगी यादि पवनि था गुरूदेव भगवान की पवित्र वाणी से आचार्य श्री व सद्गुरूओं का गुणानुवाद सुनकर प्रेमीयों की आखें भी आचार्य श्री व सद्गुरूओं की याद में छलछला आईं. आपको जानकारी दे दें कि आज प्रेम प्रकाशियों का परम पावन शुभ शनिवार दिवस है. आरती गायन. पल्लव, ढोढा चटनी प्रतिदिन यह पावन प्रसाद यहां पर भी दिया जाता था. प्रसाद पाकर प्रफुल्लित प्रेमी चले अगले कार्यक्रम की ओर. सत्संग समाप्ति के पश्चात् दुबई के प्रेमियों द्वारा सद्गुरू महाराजजी का अभिनन्दन कार्यक्रम के साथ जाकरता व सिंध प्रेम प्रकाश मण्डलीयों ने भी सतुगुरू देव व संत मण्डली का अभिनन्दन किया. जाकरता, दुबई मण्डली व सतुगुरू महाराजजी की ओर से पाखर प्रसाद का वितरण भी हुआ.

जाकरता के उत्साही संस्कारी बच्चों द्वारा सिन्धी में तैयार किये गये नाटक व भजन अन्ताक्षरी का सफल सुन्दर मंचन पूरी केनकना बालरूम के डाईनिंग हॉल मंच पर, सतुगुरू महाराजजी के सानिध्य में सभी भक्तों ने पूरी तन्यमता के साथ देखा-सराहा. वाह क्या कहना भी अन्त में सबके मुख से ऐसा सुनने में आया.

इस सुंदरतम प्रस्तुति के पश्चात् आज के रात्रिकालीन भोजन की सुव्यवस्था आलम-आलम बीच अर्थात् समुद्र के किनारे, होटल के पिछवाड़े, आपको बता दें कि दोनों होटल समुद्र के किनारे पर ही स्थित थे. वैसे तो पूरा बाली प्रदेश ही एक टापू के रूप में विद्यमान है, पर नीचे पंगत में बिठाकर पत्तल (केले के पतों की) में खिलाया गया. वाह सांई टेऊँराम तेरी अजब लीला. विदेशियों के लिये सामान्य मन की धारणा-और यहां ठीक इसके विपरीत देखने को मिला. सिन्धी बोली के प्रति अटूट लगाव, भारतीय संस्कृति के प्रति निष्ठा, सतुगुरू महाराज के बताये उपदेशों का पालन करने का सुप्रयास. निश्चित ही मन्त्रमुग्ध करने वाली बातें हैं. आकर्षक सजावट की गयी थी इस बीच पर आज, और हो भी क्यों न. आखिर हमारे मालिक प्रेममूर्ति ज्ञान स्वरूप सतुगुरू महाराज जी सन्तमण्डली भक्तों के साथ यहां भोजन प्रसादी पा रहे थे. लगभग १२:३० पर आज के कार्यक्रमों को विश्रान्ति दी गयी.

18 जुलाई 2004– वही प्रातःकालीन दैनिक कार्यक्रम-नाश्ते के साथ सभी प्रेमी सज्जन तैयार होकर इस प्रेमप्रकाशी मेल-मिलाप शिविर की अन्तिम किन्तु महत्वपूर्ण सत्संग सभा, जिसके लिये आयोजकों द्वारा दो दिनों से सूचना दी जा रही थी. आप पूछें-जवाब मिलेगा में अपनी-अपनी (संसारी-व्यवहारी छोड़कर) जिज्ञासाऐं एक निर्धारित डिब्बे में लिखकर डालने को कहा गया था. १७ जुलाई अर्धरात्रि तक प्राप्त जिज्ञासाओं को सतुगुरू महाराजजी के समक्ष रखा गया. लोक कल्याण की भावना को ध्यान में रखकर हमारे करूणाशील कृपावान गुरूदेव भगवान ने प्रश्नों का समाधान किया. जिसे इसी अंक में विस्तार से छापा गया है. अन्त में आयोजकों ने आभार प्रदर्शन व हर देश से आये प्रेमियों के एक-एक प्रतिनिधि को मेल-मिलाप शिविर के बारे में अपनी-अपनी प्रतिक्रियाऐं व्यक्त करने के लिये मंच पर आमन्त्रित किया. साथ ही प्रत्येक देश के एक -एक प्रतिनिधि द्वारा सतुगुरू महाराजजी का सम्मान पुष्पहार पहिनाकर किया गया. कुछ सक्रिय कार्यकर्ताओं को गुरूदेव भगवान के कर-कमलों द्वारा पाखर व उपहार प्रदान किये गये. सिन्धमण्डली द्वारा सतुगुरू महाराज को अजरक पहिनाकर सम्मानित किया गया. सभी संतों का भी सम्मान व शंकर-गोप सामताणी को भी अजरक पहिनाकर सिन्ध मण्डली ने सम्मानित किया. अन्त में गुरूदेव भगवान के जाकरता मण्डली द्वारा प्रेमप्रकाशी मेल-मिलाप सम्मेलन के लिये साधुवाद दिया जाकर पल्लव पाकर इस सम्मेलन का समापन हुआ. जाकरता मण्डली द्वारा सभी भक्तों को पाखर-उपहार सम्मानपूर्वक दिये जाकर सभी यात्रियों के प्रति आभार व्यक्त किया गया.

दोपहरकालीन भोजनप्रसादी पाकर सभी भक्तगण अलग-अलग समय में अलग-अलग तीन फ्लाईटों में जाकरता के लिये रवाना हुए. हम लोग भी सतुगुरू महाराज जी के साथ ४ बजे की फ्लाईट से जाकरता रवाना होकर ४:४० पर जाकरता समयानुसार पहुंचे. जहां पर चन्द्रदिवस पर सत्नाम साक्षी मंदिर में सतुगुरू महाराज व संतमण्डली के सत्संग दर्शन का कार्यक्रम था. संत नामदेवजी हांगकांग से सीधे बाली में ही आकर मेल-मिलाप शिविर में सम्मिलित हुए. और यहीं से वापिस हांगकांग रवाना हुए.

प्रस्तुत अंक अक्टूबर नवम्बर का सयुक्तांक है. अतः आगामी अंक 15 दिसम्बर को प्रकाशित होगा.

व्यवस्थापक-प्रेम प्रकाश संदेश

बाली सम्मेलन

मार भी श्रीकृष्ण अर्पण

सांस्कृतिक संध्या

प्रथम नाट्य प्रस्तुति

१७ जुलाई- जाकरता के प्रेमियों के बच्चों की सफलतम प्रभावी प्रस्तुति के अन्तर्गत पहिले ही नाट्य मंचन ने सत्गुरू महाराज-संतों सहित समस्त सभालय की तालियां बटोरी. अमिट छाप लिये प्रथम मंचित नाटक में एक भक्त महिला सन्तों की आज्ञानुसार अपना हर कार्य श्रीकृष्ण अर्पण करती थी. कथासार के अन्तर्गत वह भक्त झाड़ू बुहारी करते भी श्री कृष्ण अर्पण-श्रीकृष्ण अर्पण कहती हुई क्रियाशील थी. ऐसे में महामुनि नारद जी विचरण करते आ पहुंचे और यह देख सुनकर क्षोभ प्रकट करते महिला भक्त को पीठ पर लात मारी. और देखिये उस भक्तन की भक्ति, मार भी श्रीकृष्ण अर्पण कर दी, नारदजी विष्णु भगवान के पास पहुंचते हैं. तो क्या देखते हैं. भगवान पीठ दर्द से कराह रहे हैं. पूछने पर भगवान बताते हैं कि यह तेरी वजह से ही है. तूने लात उस भक्तन को मारी उसके समर्पण भाव के कारण यह मुझे लगी. तब नारद मुनि पश्चाताप करते प्रभु से क्षमा याचना करते हैं. प्रभु क्षमा के लिये उसी भक्तन के पास जाने की सलाह देते हैं. नारद के द्वारा क्षमा मांगने पर वह भक्त महिला क्षमा भी श्री कृष्ण अर्पण करती है. प्रभु तत्क्षण ठीक हो जाते हैं. अंत में प्रभु भरी सभा में सभी को संदेश देते हैं कि सब कार्य जो भक्त मुझे अर्पण करते हुए करता है. वह सब दुःख क्लेशों से छुटकारा पाकर अन्त में मेरे लोक को प्राप्त होता है.

दूसरा प्रस्तुतिकरण

गुरूकुल

रेनू हीरानन्दानी, सोनम नंदवानी, कीर्ति वासवानी विद्यार्थियों के रूप में गुरूकुल में विद्याध्यन करने के लिये गुरू (किशोर पुरसानी) के यहां आती हैं. गुरूदेव उन्हें सत्य का पाठ पढ़ाते हैं और आज्ञा देते हैं कि इसे जीवन में उतारें. अब होता यह है कि गुरूदेव की शिक्षा का असर एक विद्यार्थी पर तो गहरा होता है. जबकि शेष दो विद्यार्थियों का कहना होता है कि गुरू या ईश्वर हमें कोई देख थोड़ी रहे हैं. अंत में वे दोनो विद्यार्थी अपने किये पर ग्लानि अनुभव करते हैं, तीनों गुरूदेव के पास आकर सारी दी हुई शिक्षाओं के अनुसार सत्य को आत्मसात करने का संकल्प लेते हैं.

ज्ञानवर्धक मनोरंज

तृतीय नाट्य प्रस्तु

गुरूदेव में अटल विश्वास

इसकी प्रस्तुति के पूर्व एक भजन -

दे दे प्यार अपना ऐ मेरे प्यारे सांई
है दिल में चाह इतनी तेरी रहूं सदा ओ सांई.
तू मेरा रक्षक तू मेरा सहारा
तू ही मेरा साहिल तू ही मेरा किनारा.
तू ही मेरे माता-पिता, तू ही पिता तू ही माता
बन्धु और तू ही सखा, सुख दुख में सदा याद रहन

आचार्य श्री के जीवन चरितामृत में आयी घट जीवन्त हो उठी बाली के इन्टर कान्टीनेन्टल होटल विशाल रेस्टोरेन्ट के रूपहली मंच पर. दृश्य एक-जब स (कीर्ति वासवानी) ने अपने पुत्र आवतराम (विश हीरानन्दानी)को वंश बढ़ाने के लिये एक और शादी क को कहा इस पर उसकी बहू पार्वती (हिना वासवानी) ने र बिलखते इसके लिऐ असहमति देते हुए,अपने को एक ब सद्गुरू टेऊँराम के पास ले चलने की विनती की.

दृश्य-२ सांईं टेऊँराम का दिव्य दरबार सक्खर श में विराजमान था. महाराज श्री के साथ सन्त आलूर बेराणी वाले, सन्त कृपालदास जी (कण्डियारे वाले), भ घण्डूराम जी और भी कई सन्त साथ थे.

सांई टेऊँराम (महादेव सामतानी) के पास आवतर के साथ पारी प्रातः वेला में ४ बजे आते हैं, जहां महाराज के श्रीचरणों में बैठ कर पारी रोने बिलखने लगती है- त महाराज श्री यकायक उठकर पूछते हैं-कि कौन है ? पार्व जवाब देती है-हे प्रभु! ये निभागी आपकी दासी पारी है

महाराजजी थोड़ा गम्भीर होकर कहते हैं पुत्री ऐ क्यों कहती हो. तब पार्वती अपना सारा दुखड़ा महाराज को सुनाते हुए कहती है-विनती करती है अब या तो अ मुझे पुत्र दो या मैं ये छुरा लेकर आयी हूं. इससे मरा ग काटकर मुक्ति दे दो. इस जीवन से मुक्ति दे दो जिससे मरने के बाद ही वो दूसरी पत्नी घर में लाये. उस स महाराजजी के साथ कुटिया में स्वामी ग्वालरामजी थे अ कोई भी नहीं था. उसकी व्यथा सुनकर स्वामीजी कुछ क्ष

के लिये मौन हो गये, फिर कुटिया से बाहर आकर अन्य सन्तों से माता की व्यथा सुनाकर कहने लगे कि आप लोग पल्लव पाओ. इस पर व्यवहार कुशल सन्त कृपालदास ने कहा - गुरूदेव हम आपकी आज्ञानुसार पल्लव तो पाएंगे लेकिन शर्त यह है कि पुत्र आपको देना होगा, आप कहेंगे तो ही पुत्र होगा, गुरूदेव भगवान व संतों के साथ प्रभु परमात्मा से प्रार्थना (पल्लव) करके आशीर्वाद करी, समयान्तराल में गुरू आसीस़ प्रभु कृपा से आवतराम पार्वती को दो पुत्र-रत्न की प्राप्ति होती है, गुरूदेव के ऐसी अनूठी कृपामयी चमत्कार से सारी संगत भाव-विभोर हो तालियों की गूंज से सत्गुरू भगवान का जयकारा करने लगती है. इसी समय मंच के ठीक सामने प्रथम पंक्ति में सतुगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज बालक को जिसे हॉल में से ही लाया जाता है, गोदी में उठाते हैं और उन्हीं के साथ विराजमान सन्त जयदेवजी-सन्त हरीओमलालजी द्वारा बालक के लिये लोली गायन होता है. मंचस्थ नाटय प्रस्तुति में सन्तो की भूमिका में श्री अमरापुरधाम के विद्यार्थी सन्त लक्ष्मण, सन्त संजय, सन्त हेमन्त द्वारा किया गया अभिनय भी सराहनीय रहा.

प्रस्तुत नाटकों की कथा लेखक-चन्द्रा नन्दवानी व किशोर गुरसहानी के निर्देशन में रेनू हीरानंदानी, मैना नाथानी, मैना नानवानी, सोनम नंदवानी, विशाल हीरानंदानी, महादेव सामतानी, कीर्ति व हिना वासवानी ने नाट्य पात्रों को जीवन्तता के साथ अभिनीत किया.

कार्यक्रम की विशेषता

प्रस्तुत समस्त कार्यक्रमों की प्रस्तुति सिंधी बोली में रही. विदेशों में रहते हुए भी हमारा समाज सिन्धी भाषा सिन्धी बोली को परस्पर व्यवहार में लाते हुए-सिन्धीयत की जो अविस्मरणीय सेवा कर रहा है. उसके लिये तो बस क्या कुछ कहा जाये. साथ ही सुसंस्कारित बच्चों का इससे अधिक और क्या प्रमाण मिलेगा. सांस्कृतिक कार्यक्रम के पूर्व सभी दर्शक प्रेमियों को कपड़े के रंगीन मुकुटरूपी पट्टियां पहिनने को दी गयी. जिससे समूचे हॉल का अलग ही अभिनव दृश्यावलोकन हो रहा था.

बाली के कलाकारों द्वारा स्वागत नृत्य-नाटिका

१५ जुलाई २००४ रात्रि ६ बजे खुले रंगमंच पर इण्डोनेशियाई भाषा में नृत्य नाटिका के माध्यम से स्वागत गान. शेर जैसी आकृति का विशालकाय जीव-जिसे वानर परेशान करते हुए, दो नर्तकीयां स्वागत नृत्य करते हुए, विचित्र वेषभूषा धारण किये ६ इंची लम्बे नाखूनों के साथ दो नर्तक, किसी देवी-देवता का रूप धरे पुनः दो नर्तकीयां व एक विदूषक. लगभग ४५ मिनट तक चले इस नृत्य नाटिका को पूरी तरह न समझ पाने के बावजूद तालियां बटोरी कलाकारों ने भक्तों की.

रामलीला बैले



१६ जुलाई-रात्रि ६ बजे सत्संग समापन के पश्चात् सतुगुरू महाराज संतमण्डली-भक्तों के साथ ओपन थियेटर खुले रंगमंच में पहुंचे. आज निर्धारित कार्यक्रम के अन्तर्गत रामायण बैले का मंचन स्थानीय जनजाति कलाकारों द्वारा उन्हीं की भाषा संकेतों में आयोजित था. सतुगुरू महाराज-सन्तों के आसनासीन होते ही बैले की शुरूआत होती है. लगभग २० कलाकारों का समूह गोलाकार आकर कभी बैठकर कभी आगे झुककर निरन्तर एक अजीब सा गायन-गायन क्या एक ही पंक्ति पुनः पुनः दोहराते हैं और उधर सीता मैया का रावण द्वारा हरण, राम द्वारा हनुमान को सीता के पास भेजना-अंत में राम द्वारा रावण का वध अद्भुत वस्त्रांलकारों से सुसज्जित लगभग ३५ से अधिक पुरूष-महिला-बाल कलाकारों की अभिनय प्रतिभा ने सभी का मन मोह लिया. संगीतमयी रामायण बैले की प्रस्तुति में आज एक अच्छी बात यह रही कि आयोजकों द्वारा आज मोबाईल स्पीकर-माईक पर सिंधी में अनुवाद करके अभिनीत दृश्यों के बारे में जानकारी दी जा रही थी.

साईं टेऊँराम बाबा की सोने की तस्वीरें

प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप शिविर (सम्मेलन) के तीसरे दिवस रात्रि सत्संगोपरान्त दुबई के श्री कैलाश मनवानी व श्री नारायणदास आसवानी जी द्वारा २४ कैरेट गोल्ड से निर्मित आचार्यश्री की मूर्तियां सतुगुरू महाराजजी को भेंट करते हुए, स्वामीजी की आज्ञा से सम्मेलन में सम्मिलित सन्तमण्डल व सभी प्रेमियों को स्मृति स्वरूप भेंट की गयीं.

भेंटवार्ता

बातचीत

प्रेम प्रकाश संदेश द्वारा मेल-मिलाप सम्मेलन के मुख्य आयोजक श्री शंकर-गोप सामतानी भाइयों से मेल-मिलाप सम्मेलन के संबंध में बातचीत की गई. जिसे ज्यों का त्यों प्रकाशित किया जा रहा है.

बाली सम्मेलन

1. **प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप के शिविर की प्रेरणा आपको कैसे मिली ?**

कुछ वर्षों पहले हमको मन में विचार आया कि प्रेम प्रकाश मण्डली के प्रेमी देश विदेश से आकर एक जगह इकट्ठा हों और आपस में एक दूसरे को जानें एवं प्रेम करें. लगभग दो वर्ष पहले हमने पूज्य सतुगुरू स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज से विचार विमर्श किया. पूज्य सतुगुरू जी ने इस प्रस्ताव का उल्लासपूर्ण स्वागत किया. इस संदर्भ में हमने सभी प्रेमीयों को निमंत्रण भेजा. हमने पूज्य सतुगुरू स्वामी जी से प्रेमियों की सूची मांगी और हमने सभी प्रेमियों को मेल-मिलाप कैम्प के आयोजन का निमंत्रण भेजना प्रारम्भ किया.

2. **शिविर के सम्बंध में आपके विचार ?**

पूज्य सतुगुरू स्वामी टेऊँराम जी महाराज के आशीर्वाद से मेल-मिलाप कैम्प बाली २००४ का प्रारम्भ १५ जुलाई से १८ जुलाई को होना था, लेकिन मेल-मिलाप कैम्प २००४ जाकरता में ९ जुलाई से ही प्रारम्भ हो गया क्योंकि देश-विदेश के प्रेम प्रकाशी प्रेमी इस मेल-मिलाप कैम्प में शामिल होने के लिये जाकरता पहुंचने लगे, यू.एस.ए., दुबई, यू.के., फिलिपींस, थाईलैंड, सिंगापुर, हांगकांग और स्पेन, सिंध (पाकिस्तान) से और भारत से प्रेमियों की भीड़ इस मेल-मिलाप कैम्प के लिए जाकरता पहुंची. प्रेमियों के आने की हम सबको अत्यंत खुशी हुई. हम सब इन सभी प्रेमियों के आभारी रहेंगे कि उन्होंने अपने व्यस्त जीवन में, अपना अमूल्य समय निकालकर, मेल-मिलाप कैम्प के लिये उत्साह दिखाया. उनकी यह उपस्थिति हम जीवन में कभी भी नहीं भूल पायेंगे.

3. **शिविर आयोजन से जुड़ी कुछ अविस्मरणीय घटनाएं बतायें ?**

वास्तव में मेल-मिलाप कैम्प के माध्यम से हम सब प्रेमी एक साथ एकत्र हुये. प्रेम प्रकाश मण्डल जाकरता के सेवाधारियों का हमें बहुत सहयोग मिला. हम लोग कई ब बाली आये क्योंकि हम लोगों को होटल खाने पीने एवं ट की व्यवस्था करनी थी. इस संदर्भ में हमने सेवाधारियों साथ कई बार बैठक की और मेल-मिलाप कैम्प के माध्य से सब एक दूसरे के निकट हुये और एकत्र होक एकता में रहे. हम सब को मेल-मिलाप कैम्प क मीठी-यादगीरी एवं प्यारी-प्यारी बातें अभी तक याद हैं हमसे अवश्य ही भूलें एवं त्रुटियां हुई होगीं. हम उन स भूलों एवं त्रुटियों के लिए क्षमाप्रार्थी हैं. पूज्य सतुगुरू महारा जी हमेशा हम सब पर आशीर्वाद करते रहें.

ऐसे बनी सुव्यवस्था

एकता से सफलत

बाली प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप सम्मेलन के सुचा संचालन के लिये प्रेम प्रकाश मण्डली जाकरता द्वारा सेवाधारि को इस प्रकार सेवायें सौपी गयी.

उत्सव के मुख्य व्यवस्थापक की जिम्मेवारी शंक टी. सामतानी व गोप सामतानी को सौपीं गयी थी. जि उन्होंने बखूबी निर्वहन किया. हवाई जहाजों में टिकिट बुकिंग की व्यवस्था किशू खेमलानी, मिर्चू सामतानी संभाली तो हवाई अड्डे, होटल्स, पर्यटन व अन्य कार्यों लिये यातायात के साधनों की उपलब्धता निर्बाधरूप सुनिश्चित की-प्रेम पंजाबी, कमल सामतानी, गोविन्द सामता दलपत मीरचंदानी जी ने. होटल्स में भक्त प्रेमियों को क व अन्य सुविधाऐं उपलब्ध करायीं मनोज व सुनील सामता ने. सत्संग व्यवस्था की सेवा दयाल, कमलू, अर्जन नानवा दीपक करनानी, किशू तपनदासानी, प्रेम बख्शानी ने ब श्रद्धा आस्था भाव के साथ की. श्रीरूप, बसरू सामता महादेव सामतानी, सुन्दर राघानी, दिलीप सामतानी, गुरुमु पंजाबी, मदन तोलानी, किशोर, वाशी प्रेमियों की हर छोटी-ब जरूरत का ख्याल रख रहे थे. भोजन भण्डारे में क्या-क बनवाया जाये, इसकी जिम्मेदारी गुलू सामतानी व च नन्दवानी ने रूचिपूर्वक निभाई. भोजनालय में यात्रियों भोजन प्रसादी की देखरेख लच्छू तपनदासानी व कि खेमलानी अपने साथियों के साथ कर रहे थे. मेल-मिल से संबंधित प्रिंटेड सामग्री का प्रेमियोंमें वितरण व बुक स्टॉ की सेवा शेवक व भीम तपनदासानी के जिम्मे थी. प्रि केसवानी,आरती सामतानी,सितारा राधानी,नीचल नन्दवानी,न केसवानी सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्रभारी रहे.





विदेश यात्रा















विदेश यात्रा





















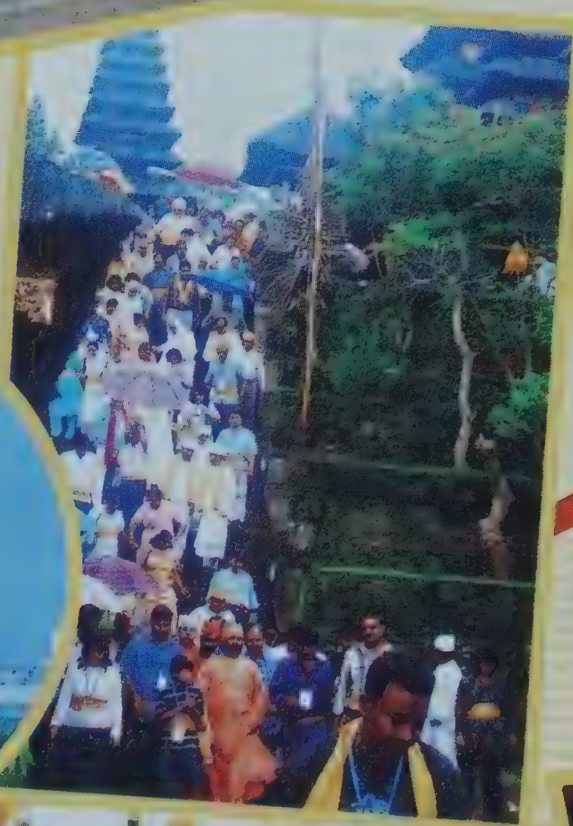






15–18
जुलाई, 2004

श्री प्रेमप्रकाश मण्डल
के मेल-मिलाप केम्प
बाली की झलकियाँ















विदेश यात्रा















नयी वी.सी.डी. समीक्षा

प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप शिविर बाली

राम सिन्धु धन सज्जन धीरा, चन्दन तरू हरि संत समीरा

महात्मा तुलसीदास बताते हैं. कि भगवान श्री रामचन्द्रजी महाराज अपार सिन्धु के समान है. संत महापुरूष अपार सिन्धु में से प्रेम का निर्मल एवं मधुर जल लेकर संसार के तप्त जीवों के लिये अपने वचन रूपी वाणी की वर्षा करते हैं. जिससे उनके संताप दूर हो जाते हैं, आगे भगवान चन्दन के उस वृक्ष के समान है जो सुगंध के समान है. परन्तु हरि भक्त संत जन उस सुगन्ध को लोक-लोकान्तरों में फैलाने वाले हैं. इसी प्रकार संत महापुरूष वेद पुराणों में से उसका सार (अमृत) लेकर संसार को प्रदान करते हैं.

कर्णधार सत्गुरू दृढ़ नावा, दुर्लभ साज सुलभ करि पावा

भगवान श्री रामचन्द्रजी महाराज युद्ध में रावण का वध करने के बाद पुष्पक विमानसे श्री जानकी जी एवं सहयोगियों और सखाओं के साथ वापस लौटकर अयोध्या आ रहे थे तब वह आकाश मार्ग से दिखने वाले उन सम्पूर्ण रमणीक स्थानों का दर्शन करा रहे थे. महामण्डलेश्वर सत्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज हवाई जहाज से गुरूदेव संत मण्डल प्रेमियों के साथ बाली जाते आकाश से धरातल के उन मनोहर स्थानों का अवलोकन करा रहे हैं. और अथाह समुद्र के भी दर्शन हो रहे है, मनोहर दृश्य देख देख कर सब की उमंग बढ़ती जा रही थी. बाली एयरपोर्ट पर गुरूदेव के स्वागत के लिये बाली प्रेमप्रकाश सेवा मण्डल के साथ सेवाधारी श्री शंकर सामतानी मण्डली के साथ तत्पर खड़े हैं यहां पर भी गुरूदेव की शिष्यों पर प्रेम की नजर देखी जो सभी का ध्यान कर रहे थे. उपरोक्त दृश्यों को आप हाल ही में जारी मेल-मिलाप कैम्प २००४ की तीन वी.सी. डी. कैसेट्स के माध्यम से देख सकते हैं. बस के अंदर के दृश्य भी देखने वालों का आनंद बड़ा देते हैं. गुरूदेव संतमण्डली एवं प्रेमियों के रहने की व्यवस्था रिसोर्ट में की गयी थी. विदेश की भूमि पर इस प्रकार का यह पहला सम्मेलन था, जब सारे प्रेमी मिले तो वह नाचने गाने लगे, नाचते वक्त उनके पांव धरती पर ऐसे पड़ रहे थे. जैसे धरती गरम तवा हो. मतलब जमकर वह सब नाच रहे थे. सी.डी. में स्वामी जी के चार सत्संगों का सुंदर संकलन है. अंत में इस ऐतिहासिक स्थल पर वैचारिक क्रांति का संवाद आप पूछे जवाब मिलेगा. जिसमें बहुत सुन्दर विवेचन किया है हमारे सत्गुरू महाराजजी ने. सत्संग मंच पर टन्डाआदम दरबार का दरवाजा अमरापुर दरबार का मुख्यद्वार देखकर सभी का मन मंत्रमुग्ध हुये बिना नहीं रहता. सांस्कृतिक



प्रस्तुतियों में तीन कार्यक्रमों ने अपनी अमिट छाप छोड़ी है १. हरिशरणम् हरिशरणम् का मंचन २. अन्ताक्षरी ३. आचार्य के भण्डारे से उस माता को दो पुत्रों की प्राप्ति का देखा जाना, समुद्र तट पर जब गुरूदेव ने पूजा कर पल्लव पहना फिर सबको जल का छींटा लगाया, तब प्रेमियों को वह श्रीरामचन्द्र के समान लग रहे हैं सपेरे एवं प्रेमियों के अनुरोध पर गुरूदेव ने गले में अजगर सांप का भूषण भगवान शंकर के समान धारण किया, तब वह शंकर भगवान के स्वरूप में लग रहे हैं. सिन्धु (जल देवता) का किनारा, भगवान राम एंव भगवान शंकर के शिवस्वरूप आचार्य सत्गुरू टेऊँराम जी महाराज के रूप में स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज को देखकर प्रेमियों के साथ-साथ स्वर्ग के देवता इन्द्र भी देखकर हर्षित हो बूंदें बरसाने लगे. आचार्य सत्गुरू टेऊँरामजी महाराज को आशीर्वाद देती मूर्ति जीवों को निर्भय होने का विश्वास दे रही थी साथ में विघ्ननाशक गणेशजी इस मेले को सुखपूर्वक सम्पन्न करने के लिये विराजमान थे गुरूदेव ने वहां के मंदिरों के दर्शन करने के लिये वहां की परम्परानुसार बाली देश की वेशभूषा भी धारण की, उसके ऊपर संत समाज का गेरूआ रंग शांति एवं ज्ञान का उच्च भारतीयता का प्रतीक लग रहा था, गुरूदेव वहां की प्राकृतिक सुन्दरता में भी भगवान की शक्ति देख रहे थे. आखिरी दिन प्रेमियों ने स्वामीजी से आशीर्वाद लिया. यह देखकर बहुत ही अच्छा लगता है. वापसी यात्रामें एयर होस्टेज द्वारा सभी का सत्नाम साक्षी बोलकर सम्मान करना. यह सब इन कैसेटस में दर्शाया गया है. कैसेट की रिकार्डिंग बहुत ही उच्च तकनीक की है, वी.सी.डी. कैसेटस (तीन कैसेट्स सहित) की भेंटा मात्र रूपये १०१/- रखी गयी है. जिसको श्री अमरापुर धाम एम.आई.रोड जयपुर सहित सभी प्रमुख प्रेम प्रकाश आश्रमों से प्राप्त किया जा सकता है.

बाली सम्मेलन

मंचीय शोभा

होटल इन्टर कान्टीनेन्टल रिसोर्ट

मंच के बांयी ओर आचार्यश्री के सवाफुट ऊँचे संगमरमर के दिव्यतम श्री विग्रह के साथ, विघ्नहर्ता श्री गणेश जी महाराज फूल-पत्तियों, झालरों से युक्त खुले मन्दिर में विराजित होकर सभी भक्तों को दर्शनानंद दे रहे थे. सवा दो फुट ऊँचाई लिये २० फुट से अधिक लम्बाई में बने आकर्षक मंच के आगे विभिन्न प्रजातियों के फूलों के गमले सुशोभित हो रहे थे तो पृष्ठ भाग में एक विशाल पर्देनुमा कपड़े पर मदान पेन्टर पलवल द्वारा बनाया गया श्री अमरापुर धाम टण्डेआदम का चित्र बांयी ओर तो दायीं ओर जयपुर श्री अमरापुरधाम, शेषनाग की छत्र बनाये आचार्यश्री के ऊपर और शंख चक्रधारी विष्णु भगवान के आशीर्वाद करते सुन्दरतम सुमोहित चित्र सबको अपनी ओर आकर्षित कर रहे थे. टण्डेआदम अमरापुर दरबार के मुख्य प्रवेश द्वार के सम्मुख ही हमारे प्रेम स्वरूप सदगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का आसन, आसनासीन होने पर ऐसा आभास होता था कि हम सचमुच में ही टण्डाआदम अमरापुर दरबार में सद्गुरू भगवान की छत्रछाया में बैठे हैं. सत्संग प्रवेश द्वार के दोनो ओर २३x३६ साईज के पोस्टर आचार्यश्री के चित्रयुक्त-प्रेमप्रकाशी मेल-मिलाप कैम्प की सूचना संकेत देते, ऊपर छत्र लगा हुआ अत्यन्त शोभनीय हो रहे थे ?

खास बातें

१. जकार्ता व बाली में प्रेम प्रकाश मण्डली जाकरता द्वारा भोजन में भारतीय व्यजंनों के अतिरिक्त कुछ चाईनीज फूड्स की भी व्यवस्था की गयी थी.

२. शंकर-गोप सामतानी की वयोवृद्ध माताजी द्वारा गुरूदेव भगवान का चुनरी ओढ़ाकर अभिनंदन किया गया.

३. अजरक सिन्ध पाक में पाया जाने वाला एक सुन्दर सा शॉल जैसा रंगीन वस्त्र, अति महत्वपूर्ण व्यक्तियों को इसे पहिनाकर सम्मानित किया जाता है. सम्मान के प्रतीक अजरक से सतुगुरू महाराज जी का अभिनंदन सिंध मण्डली द्वारा निरन्तर बज रही तालियों के मध्य किया गया.

४. सिंध से आये प्रेमियों से मिलकर सभी प्रेमी वर्तमान सिन्ध की अधिकतम जानकारी लेने को उत्सुक थे.

५. विश्व के विभिन्न भागों से आये प्रेमियों के आवा[...] पर्यटन, परिवहन (जाकरता-बाली-जाकरता विमान सहित[...] भोजन का सारा खर्चा श्री शंकर-गोप सामतानी जी द्वा[...] प्रेमप्रकाश मण्डली जाकरता के सहयोग से वहन किया गय[...]

६. ५ सितारा होटल वह भी परदेस में, बावजूद स[...] टेऊँराम बाबा का पावन प्रसाद ढोढा चटनी-यहां पर [...] व्यवस्थापकों ने प्रेम श्रद्धा भाव से उपलब्ध कराया.

जाकरता बाली विशेषताऐं

१. इण्डोनेशिया में भारी बेरोजगारी होते हुये भी स[...] काम करने वाले नागरिको की आमदनी लाखों रूपये मासि[...] है. चौंक गये न आप. अभी और आश्चर्य होगा आप[...] यहां पर एक हजार से कम का नोट प्रचलन में है ही नही[...] हजार से लेकर लाखों रूपये की मुद्रा के नोट प्रचलन में है[...] अब सुनिये यहां की मुद्रा इण्डोनेशिया का एक लाख रूप[...] भारतीय ५०० रूपये के बराबर की कीमत का है. मतल[...] हमारे यहां के पांच रूपये इण्डोनेशिया के १००० रूपये[...] बीस हजार के कीमत के नोट पर भगवान गणेशजी का चि[...] भी छपा है.

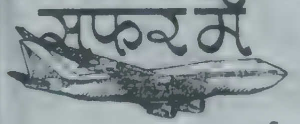
२. यहां पर भी बड़े-बड़े शॉपिंग सेंटर-मॉल्स बने हु[...] है, जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय वस्तुऐं सुलभता से मिलती हैं.

३. ब्रह्मा, विष्णु, शिव व भगवान बुद्ध के प्रतीकों [...] यहां विशेष पूजा अर्चना होती है. बाली में बताया गया [...] यहां के रहवासियों का आधे से अधिक बजट पूजा प्रतिष्[...] में ही खर्च होता है. पूजा में नभचर की बलि भी प्रमुख रू[...] से दिये जाने का चलन है यहां पर.

४. बाली में गुड़ी पड़वा नववर्ष आरंभ पर यहां [...] निवासी जा रहे वर्ष की अंतिम तिथि पर समस्त करोबा[...] गृहकार्य यहां तक कि हवाई अड्डा भी बन्द रखा जाता [...] नव वर्ष के स्वागत के लिए.

५. इन्डोनेशिया में विशेष रूप से बहुतायात में रूद्रा[...] पाया जाता है, जिसका निर्यात भारत सहित विश्व के अन[...] देशों में किया जाता है.

६. बाली में लकड़ी की कलाकृतियों का निर्माण स्थानी[...] लोग बड़ी सुन्दरता से करते हैं.



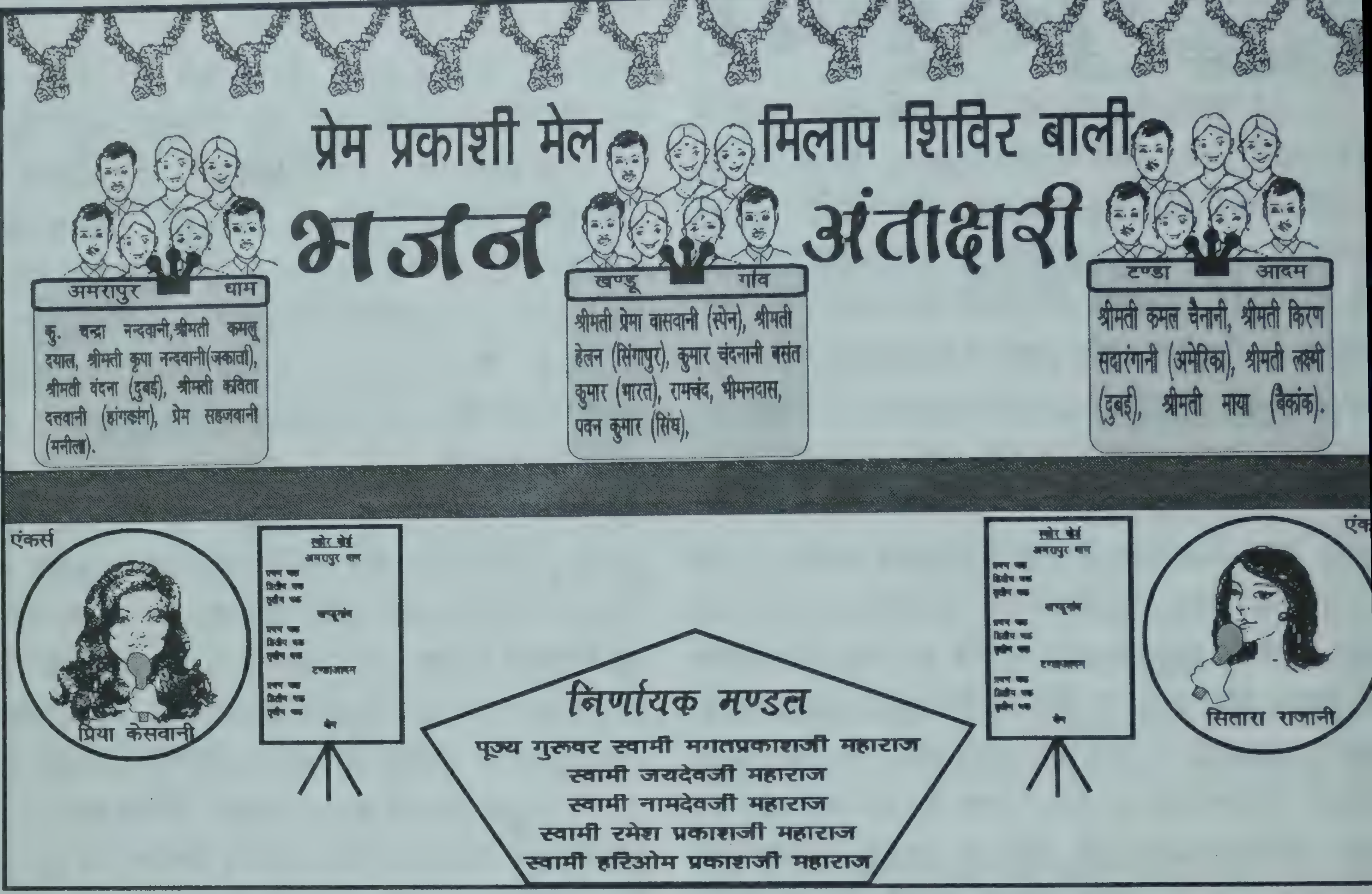
सफर में गुरुकृपा

११ जुलाई २००४- भारतीय यात्री जो ८ जुलाई से ११ जुलाई तक प्रतिदिन अलग-अलग समूहों में प्रेम प्रकाशी मेल-मिलाप हेतु जाकरता पहुंच रहे थे. १६ प्रेम प्रकाशियों का तीसरा समूह दिल्ली के अंतर्राष्ट्रीय विमानतल से १० जुलाई अर्धरात्रि को विमान से रवाना होना था. लेकिन दो घंटे विमान की उड़ान में विलम्ब होने के कारण ११ अक्टूबर की रात्रि २:३० पर जाकरता के लिए इन प्रेमियों का समूह रवाना हुआ. इस समूह में जयपुर के ११ प्रेमी व ग्वालियर के ८ प्रेमी सम्मिलित थे. ४:३० घण्टे की हवाई यात्रा के उपरान्त बैकांक में जाकरता के लिए विमान बदलना था. प्रातः भारतीय समय के अनुसार ६:३० बजे थाई समय के अनुसार प्रातः ८ बजे हम थाई एयरलाईन्स से बैकांक विमानतल पर जैसे ही विमान से बाहर निकले, बाहर जानकारी दी गयी कि आप लोगों के लिए दूसरा विमान टर्मिनल-३२ पर तैयार खड़ा है, वहां पहुंचिये. हम लोग टर्मिनल-१२ पर थे, यहां पर आपको जानकारी दे देवें कि १०० से भी अधिक टर्मिनल वाला बैकांक अंतर्राष्ट्रीय विमानतल मीलों लम्बाई लिये था. हम १२ नंबर से ३२ नंबर की ओर एक लम्बे चौड़े गलियारे से होते हुये चलने लगे. गलियारे में आगे चलने पर चलती हुई लिफ्ट भी स्थान-स्थान पर कार्यरत थी, जिनका सदुपयोग भी सभी यात्री कर रहे थे. इस गलियारे की चमक-दमक का तो क्या कहना शब्द ही नहीं है. बैकांक व सिंगापुर विमानतल श्रेष्ठतम विमानतलों में से गिने जाते हैं. इसी गलियारे यानि विमानतल पर ३२ नंबर की ओर जाते-जाते रास्ते में अंतर्राष्ट्रीय वस्तुओं के शोरूमों (दुकानों) की पूरी श्रृंखला, न चाहते हुये भी इन अति आकर्षक शोरूमों को देखने व उन में रखी दुनियाँ भर की वस्तुऐं जो कस्टम छूट के साथ ब्रिक्री के लिए सजाकर रखी गयी थी, के लिए हर एक यात्री के कदम ठिठक ही रहे थे. और उधर स्थान-स्थान पर हमारे लिए तत्पर विमानकर्मी हम लोगों को शीघ्र ही विमान की ओर चलने का आग्रह कर रहे थे. कारण हमारे लिए विमान संचालकों ने विमान की उड़ान २० मिनट लेट कर दी थी और वे इसे और अधिक लेट नहीं करना चाह रहे थे. हम लोग भी जल्दी-जल्दी विमान की ओर बढ़ने लगे. लेकिन विमानतल पर शोरूमों की चकाचौंध, विमानकर्मीयों का जल्दी करना, टर्मिनल काफी दूर होना. ऐसे में जब हम लोग विमान पर सवार हुये तो हमारे समूह के ग्रुप लीडर दीनदयाल वाधवानी 'सोनी' जी ने बताया- कि दो महिलायें श्रीमती भारती लालवानी व श्रीमती लक्ष्मीदेवी दोनों विमानतल पर ही रह गयी हैं. सब लोगों ने विमानतल पर उन्हें काफी ढूढ़ा लेकिन वह नहीं मिली. विमानकर्मीयों ने हमें कहा- कि हम लोग उन्हें ढूंढ़कर दो घंटे बाद वाले यात्री विमान से जाकरता भेज देगें, आप चिंता न करें. हम लोगों का अनुरोध था क्योंकि वह महिलायें है अतः हम पुरूषों में से एक यात्री को उनके लिए यहां रूकने की अनुमति दी जाये. लेकिन विमानतल अधिकारियों ने इसकी अनुमति हम लोगों को नहीं दी.

सतुगुरू देव से प्रार्थना करते, चिंतित मन से हम लोग विमान में बैठ गये, यह भी भय लग रहा था कि पूज्य महाराजश्री अवश्य ही नाराज होगें इस बात पर. खैर विमान उड़ने पर हमारे ग्रुप लीडर द्वारा एयरहोस्टेज से बैकांक विमानतल पर पुनः सम्पर्क करने के लिये अनुरोध किया गया. जिस पर काकपिट से विमान के कप्तान ने बैकांक विमानतल पर सम्पर्क कर उनसे महिलाओं को ढूंढ़कर उनका समाचार शीघ्र देने को कहा.

१:३० घंटे की यात्राकर जैसे ही हम लोग जाकरता विमानतल पर पहुंचे, चिंतातुर हो बाहर निकले वहां की एक विमानकर्मी बोर्ड लेकर खड़ी थी जिससे ज्ञात हुआ कि खोई हुयी दोनों महिलाऐं सकुशल हैं. और उन्हें आने वाले दूसरे विमान से यहां भेजा जा रहा है. यह सुनकर सब कृतज्ञ भावसे प्रभु सतुगुरू महाराज के गुणानुवाद गाने लगे.

परदेश जहां पर न हम लोग उनकी भाषा समझें न वो हमारी, अंग्रेजी भी वहां पर पूरी तरह न समझते हैं, ऐसे में ४०-४५ वर्ष की दो महिलाओं का एक बहुत बड़े विमानतल पर खो जाना, सकुशल मिल जाना गुरूकृपा नहीं तो और क्या है.



सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृखंला में नाट्य भजन प्रस्तुति के पश्चात् अंतिम कार्यक्रम भजन-अंताक्षरी.

इन कार्यक्रमों को देखने से ही ऐसा प्रतीत हो रहा था कि जाकरता के प्रेमियों-बच्चों ने कितने दिनों पूर्व से इस तैयारियां, पूर्वाभ्यास करके इन कार्यक्रमों को उच्च गुणवत्ता देने में कितना न समर्पित भाव से श्रम किया होगा. इस दर्शक/पाठक प्रेमी सहज ही अनुमान लगा सकते हैं.

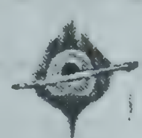
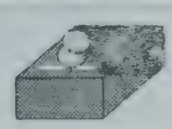
१७ जुलाई २००४ की रात्रि १०:२० पर बाली के इंटरकॉन्टीनेंटल रिसोर्ट के डाईनिंग हॉल में एक अनुपम अनू मनोहारी एवं ज्ञानवर्धक मनोरंजक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया भजन-अंताक्षरी का.

हॉल की शोभा का क्या कहना ? हॉल में बैठकर ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी राजमहल के हॉल में हम बै हों. ऊपर छत पर सुनहरे रंग के बड़े-बड़े फानूस टंगे हुये थे, उनमें लगे बिजली के बल्ब जलते हुये ऐसे लग रहे थे मा आसमान में तारे चमक रहे हों. उस हॉल की शोभा में चार चांद तो तब लगे जब पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश महाराज ने संत मण्डली सहित हॉल में प्रवेश किया. सम्पूर्ण हॉल प्रेमियों से खचाखच भर गया था, यहां तक कि कुछ प्रे दीवाल के सहारे भी खड़े देखे गये. सभी प्रेमियों के सिर पर रंगबिरंगी टोपियां थीं, जो प्रवेश करते ही आयोजकों द्व दी जा रही थीं.आइये हम भी सम्मिलित होवें भजन-अंताक्षरी में. इसका मंचन व सधा हुआ संचालन. सभी को ऐसा ल रहा था जैसे हम किसी फिल्म या सीरियल को देख रहे हैं. ऐसा तो उच्च गुणवत्ता का प्रदर्शन था भजन-अंताक्षरी व

आओ यहां सब मिलकर गाओ यहां, आये है सभी मेल-मिलाप में मिलकर मौज मनाओ यहा

नमस्ते-प्रणाम-सत्नाम साक्षी प्रिया केसवानी व सितारा राजानी दोनों संचालनकर्ता की सुमधुर वाणी से भजन-अंताक्षरी का शुभारम्भ हुआ. संचालकों द्वारा कुल तीन समूहों का गठन किया गया. प्रत्येक प्रश्न का उत्तर सही प जाने पर उस समूह को १० नम्बर दिये जा रहे थे.

प्रथम चक्र- वस्तुऐं देखें-पहचाने एवं उससे सम्बन्धित भजन गाकर सुनायें

क्र.	पहचानने के लिए प्रतीक वस्तुएँ	उस समूह का नाम जिसके द्वारा पहले उत्तर दिया गया	वस्तु से संबंधित भजन जो गाकर सुनाया गया
1.		खण्डू गाँव	रघुपति राघव राजा राम पतित पावन सीता राम
2.		टण्डाआदम	स्वामी टेऊँराम तुहिंजो झण्डो झूले
3.		खण्डू गाँव	दमादम मस्त कलंदर लाल मुहिंजी पति रखियो भला-झूले लालण
4.		टण्डाआदम	मोहन मन जा ठार-अङणि मुहिंजे अचु तूं
5.		खण्डू गाँव	भोलानाथ हरे-जगदीशा
6.		अमरापुर धाम	ओम जय लक्ष्मी माता

द्वितीय चक्र-अरदास

इस चक्र में अरदास की प्रथम आधी पंक्ति सुनने के पश्चात् उसे पूरा करना था

क्र.	अरदास की प्रथम आधी पंक्ति	समूह जिसने उसे पूरा किया	अरदास की आगे की पंक्तियाँ
1.	दीनाबन्धु दीनानाथ	टण्डाआदम	मेरी डोरी तेरे हाथ
2.	सत्‌नाम साक्षी सर्व आधार	अमरापुर धाम	जो सुमरे सो उतरे पार
3.	धन गुरू टेऊँराम	तीनों समूहों ने एक साथ पूरा किया	सारा जग तारिया
4.	जेको चवन्दो झूलेलाल	टण्डाआदम	तुहिंजा थींदा ॿेड़ा पार
5.	मुहिंजी ॿेड़ी अथई	खण्डू गाँव	विच सीर ते पलऊ पायां थी मां जिन्दपीर ते
6.	जेको नाम जपन्दो	कोई नहीं पूरा कर पाया	सदा सुखी रहन्दो दुःख दर्द चिंता तहिंदे नेड़ न ईन्दो
7.	गुरूअ जी गोद में	अमरापुर धाम	गुरूमुख गुजारीदें त खुशि रहन्दे

श्रोताओं हेतु ऑडीयन्स राउण्ड

तृतीय चक्र के पूर्व श्रोताओं के लिए ऑडीयन्स राउण्ड के अंतर्गत श्रोताओं में से किसी को भी १० बार "कच्च पापड़ -पक्का पापड़" बोलना था. सुनने में तो इतना सरल लग रहा था कि प्रत्येक दर्शक यह मानकर चल रहा था कि इसमें कौनसी बड़ी बात है, परंतु यथार्थ में जब वह बोलने को आ रहा था तो तीन-चार बार कहने के पश्चात् वह अट रहा था. सैकड़ों की संख्या में उपस्थित दर्शक प्रेमियों में मात्र तीन श्रोता नीतू मनवानी (दुबई), दीपक करनानी (जाकरता प्रीतमदास (सिन्ध) ही सफलता प्राप्त कर सके.

तृतीय चक्र शब्द राउण्ड

इसके अंतर्गत भजन का प्रथम शब्द सुनने के पश्चात् तुरंत उस भजन को पूरा करना था.

क्र.	भजन का प्रथम शब्द	समूह जिसने उसे पूरा किया	पूरा किया भजन
1.	स्वामी	खण्डू गाँव	स्वामी टेऊँराम जग॒ में, वाह जा कई कमाई-दरवेश हो इलाही
2.	नाम	खण्डू गाँव	शल नामु न तुहिंजो विसिरे
3.	सद्गुरू	अमरापुर धाम	सद्गुरू कृपा तूं करे भला भाग॒ बणाईन्दे
4.	प्रभु	खण्डू गाँव	प्रभु दीनदयाल सुमति दे॒ मूंखे
5.	शुकराना	टण्डाआदम	शुकराना-शुकराना-सांईं तेरा लख-लख शुकराना

सदा तेरा साया हो हम पर यह पंक्तियां सभी ने गाकर इस मनोहारी कार्यक्रम को पूर्णता दी.

अंत में पूज्य महाराजश्री द्वारा सभी विजेताओं एवं उपविजेता समूहों के सभी सदस्यों को पुरस्कार प्रदान किये गये

मेल-मिलाप शिविर भविष्य में भी होने चाहिये - सभी भक्तों की यही है इच्छा

प्रेम प्रकाश सन्देश के कार्यालय प्रतिनिधियों द्वारा मेल-मिलाप शिविर में भाग लेने वाले सभी प्रेमियों से मेल-मिलाप सम्मेलन में सम्मिलित होकर आपको कैसा लगा पर अपने विचार ५० शब्दों में अपनी जानकारी सहित लिखने हेतु सभी को एक प्रपत्र देकर अनुरोध किया गया. जिनमें से अधिकांश ने उसे भरकर अपनी प्रतिक्रिया सहित हमें वापस किया. इन सभी विचारों का अध्ययन करने पर उनका सार इस प्रकार रहा.

सभी प्रेम प्रकाशी भक्तगण जाकरतावासियों की सेवा विनम्र भाव से देखकर तो गद्‌गद् थे ही. सद्गुरू महाराजजी के दिव्य दर्शनों के साथ विलक्षण सत्संग से अपने आपको सराबोर करते हुये आयोजकों को इसके लिये साधुवाद भी दिया. साथ ही लगभग सभी प्रेमियों ने एकमत से ऐसे सम्मेलनों, शिविरों को भविष्य में भी आयोजित किये जाने की इच्छा जाहिर की है. अनेक प्रेमियों ने इसे अनिर्वचनीय आनन्द बताते हुये, इस शिविर से प्राप्त प्रेरणाओं को अपने जीवन में आत्मसात करने का भी संकल्प जताया है.

विशेष सम्पादकीय

बाली सम्मेलन मंगलमूर्ति परम पूज्य आचार्य गुरूवर स्वामी टेऊँरामजी महाराज की असीम कृपा एवं पूज्य गुरूजनों की आशीष से पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की अध्यक्षता में इण्डोनेशिया की धार्मिक आस्था की नगरी बाली की पावन भूमि पर आयोजित प्रथम प्रेम प्रकाशी मेल मिलाप शिविर में सम्मिलित होने के पश्चात् यहां आने पर कुछ संत हृदय, सदगृहस्थों से उक्त सम्मेलन के संबंध में विस्तृत चर्चा करने का सुअवसर मिला. सभी लोग उक्त सम्मेलन का विवरण विस्तृत रूप से सुनने को उत्सुक से लगे. आशा है कि आप सभी पाठकगण भी मनोहारी नगरी बाली में आयोजित उक्त सम्मेलन का विवरण प्रेम प्रकाश संदेश में पढ़ने हेतु उत्सुक होंगे.

धैर्य-सहिष्णुता-सेवाभाव का अद्भुत संगम

बाली में आयोजित उक्त सम्मेलन के लिए सभी जकार्ता निवासी प्रेमप्रकाशी आयोजक वास्तव में कोटि-कोटि साधुवाद के पात्र हैं. यह हम नहीं कहते परन्तु उक्त वाक्य वहां पर भी सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति की जुबान पर था. समूचा बाली सत्नाम साक्षी मय हो गया था. जिस रिसोर्ट में रहने की व्यवस्था की गई थी. वहां का प्रत्येक कार्यकर्ता जो थाईलैण्ड के मूल निवासी थे और थाई भाषा के अतिरिक्त कुछ कर्मचारियों को टूटी-फूटी अंग्रेजी भाषा का ज्ञान था. सभी अभिवादन करते समय सत्नाम साक्षी ही कह रहे थे, जब इनमें से दो चार कार्यकर्ताओं से पूछा गया कि क्या आप सत्नाम साक्षी शब्द का अर्थ जानते हैं, तो उनमें से कुछ ने टूटी-फूटी अंग्रेजी में कहा कि (हाँ) दिस इज अ नेम ऑफ गाड (यह भगवान का नाम है) इतना सुनने के बाद जब उन्हें सत्नाम साक्षी का वास्तविक अर्थ समझाने का प्रयास किया गया, तो वे गद्गद् हो गये.

जकार्ता निवासी प्रेम प्रकाशियों के अल्प समय के साथ हमें जो धैर्य व सहिष्णुता एवं सेवा का जो जीवन्त रूप देखने को मिला इसे हम जीवन पर्यन्त अपने जीवन में संजोयें रखें, यही पूज्य गुरूजनों के पावन श्रीचरणों में प्रार्थना है. धैर्य सहिष्णुता एवं सेवा भाव की पराकाष्ट को देखकर हृदय में विचारों की लहरों ने उथल-पुथल मचा दी कि भारत भूमि जो कि ऋषियों, मुनियों एवं तपस्वीयों की भूमि है, वर्तमान में यहां पर प्रत्येक के जीवन में धैर्य सहिष्णुता एवं सेवा का भाव इतनी अधिकता में क्यों नहीं दिख रहा है?

सम्मेलन से वापिस आने के पश्चात् संत हृदयों, सद्गृहस्थों से चर्चा करने पर इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि जकार्ता निवासियों (प्रेम प्रकाशियों) के हृदय में जो धैर्य सहिष्णुता व सेवाभाव है, वह उनमें तपोधन पूज्य गुरूवर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के सानिध्य में रहने से आया जब पूज्य गुरूवर स्वामी सर्वानन्दजी महाराज ने जकार्ता की यात्रा की थी, तब उनके द्वारा वहां के प्रेम प्रकाशियों के हृदय में धैर्य सहिष्णुता एवं सेवा का जो बीज अंकुरित किया गया, वह आज फल देने वाले वृक्ष का आकार ले चुका है. वृक्ष जैसे जैसे ऊँचा होता जाता है वैसे वैसे इसकी शाखाएं नीचे की ओर झुकती चली जाती हैं. जिससे कि इन शाखाओं में आने वाले फलों को राहगीर आसानी से तोड़ कर इसका रसास्वादन कर सके. उक्त तथ्य को निम्न प्रसंग से भली-भांति समझा जा सकता है.

संत मिलें- कथा मिलें- सुनने वाले भी सच्चे अर्थों में श्रोता मिलें, तीनों मिलें तो सही अर्थों में कल्याण होगा और तीनों में से एक की भी कमी रह जाय, भगवान की कथा हो और संत के मुख से सुनने को न मिले तो पूर्ण कल्याण नहीं होगा और संत के मिलने के बाद भी यदि हम संत से भगवद्कथा प्राप्त न करें तो संत के मिलने का उद्देश्य पूरा नहीं होगा. कितनी भी उच्च कोटि का संत क्यों न हो और वह कितनी भी श्रेष्ठ कथा कहें पर अगर सुनने वाला व्यक्ति सच्ची श्रद्धा से कथा न सुने तो उसका परिणाम होगा कि कथा का कोई अर्थ नहीं. संतों की सभा की तुलना आम के बाग से की गई है-यदि कोई आम का फल पाना चाहे तो उसको पाने के लिये सबसे पहले आवश्यकता है कि वह आम के बगीचे में जाये, तो संतो की तुलना आम के बगिया से की गयी है संत सभा चहूं दिसि अमराई-दो बातें और जोड़ दी गयी कि आम के वृक्ष में बड़ा मधुर फल रहता है, यदि इसे सुनके कोई व्यक्ति शरद ऋतु में आम के बगीचे में

जाये और उसको आम के वृक्ष में एक भी फल न दिखाई दे, तो उसके मन में शायद यह निराशा उत्पन्न हो सकती है कि मैंने सुना तो यह था कि आम के फल बड़े मीठे रहते हैं, लेकिन यह तो पूरे आम के बाग में जाकर देख लिया यहां मीठे फल की बात क्या यहां तो फल ही नहीं, तो इसलिये आवश्यक क्या है कि आम को पाने के लिये केवल आम का बाग या आम का वृक्ष होना ही यथेष्ठ नहीं है इसका तात्पर्य क्या है कि आम के बगीचे में जाने कि लिये उचित ऋतु हो इसका अभिप्राय यदि आप आम के बगीचे में बसंत ऋतु में जायें तो वहां पर भी आपको तुरंत फल नहीं दिखायी पड़ेगा, जब आप बसंत ऋतु में जायेगें तो आम के वृक्षों में बोर लगे हुए दिखाई देगें. फिर कुछ दिनों तक आप जाते रहेंगे तो देखेगें कि उन बोर में नन्हें-नन्हें फल निकल रहे हैं और वो फल धीरे-धीरे समय पाकर बड़े होगें और वह फल जब बड़ा होगा तब जाकर उसमें मिठास का अनुभव होगा और उस समय जो व्यक्ति इस आम का रसास्वादन करेगा तो जो आम के स्वाद वर्णन किया गया है उसे ठीक प्रतीत होगा और जो इस पद्धति का ठीक तरह से पालन नहीं करेगा तो इसका परिणाम होगा कि आम की वाटिका में जाकर के भी इसे निराश होना पड़ेगा. मान लीजिये कोई आदमी को आम की वाटिका में पतझड़ के मौसम के जानेसे आम का फल मिलना तो दूर रहा वहां तो इसे आम के पत्ते भी झड़े हुए मिलेगें. आमके वृक्षमें केवल डाली दिखाई देगी और वह व्यक्ति निराश होकर लोटेगा.

कई लोग ऐसे होते हैं संतों के पास तो जाते हैं, पर संतों के पास जाते हैं पतझड़ लेकर के, यह पतझड़ क्या है? यह कुतर्क जो है- जब आंधी का महीना आता है तो आंधी आने पर वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं. यदि कोई व्यक्ति अपने हृदय में संत के प्रति कोई विरोध लेकर कुतर्क लेकर संत समाज में जावेगा तो इसे संत की मिठास का रंच मात्र भी स्वाद नहीं मिलेगा तब. जैसे आम की वाटिका में जाने के लिये बसंत की आवश्यकता है वैसे आप और हम जब सत्संग में जायें तो सत्संग में जाने के साथ-साथ बसंत ऋतु को लेकर. संत तो आपका वृक्ष है परंतु जो श्रोता है उसके अंतःकरण में बसंत ऋतु होनी चाहिये. और यह बसंत ऋतु क्या है तो गोस्वामी जी कहते हैं संत तो आम का बाग है और श्रोता के अंतःकरण में जो श्रद्धा है वही बंसत ऋतु श्रद्धा ऋतु बसंत सम गाई जब आप संत के पास श्र लेकर जायेगें तो मानो धीरे-धीरे बोर लगा तो बोर क लगेगा, कहा गया कि संत जो विधि विधान पालन करने लिये बतावे तो वही मानो बोर है सत्संग करते-करते ज ज्ञान प्राप्त हो जाये तो मानो फल आ गया. और इसी प्रक सत्संग करते-करते जैसे फल पक जाने पर मीठा हो जा है इसी प्रकार से मानो संत से भगवान की भक्ति का र हृदय में आ जाये तो परिणाम होता है, सच्चे अर्थों में जीव में मिठास का अनुभव हुआ. तो इसमें जो क्रम है वह क्र बड़े महत्व का है पहले संत के पास जाइये, श्रद्धा लेक जाइये और फिर उसके बताये गये नियमों का पालन कीजि और फलस्वरूप उसके बताये अनुसार ज्ञान होगा. और अं में भगवान की रसमयी भक्ति अंतःकरण में आवेगी.

उक्त उदाहरण से स्पष्ट होता है कि जकार्ता निवास कर रहे प्रेम-प्रकाशी सच्चे अर्थों में श्रोता हैं, औ उन्हें संस्कारित करने वाले संत तपोधन पूज्य गुरूवर स्वाम सर्वानन्दजी महाराज भी उच्चकोटि के संत थे.

बदलते परिवेश, बदलते वातावरण, बदलती शिक्षावृ के कारण हमारे बच्चों का रहन-सहन एक दम बदल गय है इस स्थिति में जकार्ता में रह रहे प्रेम प्रकाशियों साथ-साथ समूचे विश्व में रह रहे प्रेम प्रकाशियों को सोचन चाहिये कि जो संस्कार उन्हें पूर्वजों से मिले थे, क्या वे इ संस्कारों को भावी पीढ़ी तक पहुंचा पा रहे हैं.

आज के दादा-दादी, नाना-नानी के साथ-सा माता-पिता को भी सोचना चाहिये कि जो संस्कार उन पूर्वजों से मिले थे, क्या वे इन संस्कारों को भावी पीढ़ी त पहुंचा पा रहे हैं ? हर समाज में कुछ नीतिगत बातें, कु रस्मों-रिवाज होते हैं, कुछ धार्मिक मान्यताऐं होती हैं, जिन हम संस्कार कहते हैं. इन संस्कारों को यदि भावी पीढ़ी त न पहुंचाया जाए, तो ये नष्ट हो जाते हैं. यह भी सत्य कि काल, दूरी तथा बदलते परिवेश में संस्कारों में परिवर्त होता रहता है. नई बातें जुड़ जाती हैं और पुरानी बातें छू जाती है. कुछ सुधार हो जाता है. जैसे प्राचीनकाल में ब ससुराल पक्ष के बड़े लोगों के सामने घूघंट निकाला करत थी. लेकिन आज के जागरूक समाज ने इसे बदल दिया है

शर्म तो आखों में होनी चाहिये. घूंघट बहू के लिये परेशानी पैदा करता है. ये तर्क उचित भी है, लेकिन संस्कारों का मूल स्वरूप नहीं बदलता है और ना ही बदलना चाहिए.

जिस तरह कुछ बातें बच्चों के सामने बड़ों का संयमित व्यवहार घर के दूसरे छोटों को भी ऐसा करने की शिक्षा देता है. संस्कार हमारी अस्मिता, हमारी संस्कृति और अपनेपन की पहचान हैं. घर के शालीन और सौम्य वातावरण का आदी व्यक्ति समाज में भी उसी शालीनता को लेकर पहुंचता है और उसकी अपेक्षाएं भी उसी रूप में ढल जाती हैं. सौम्यता की इसी मिट्टी में संस्कार फलते-फूलते हैं.

देखा जाए, तो भावी पीढ़ी को संस्कारित बनाना इतना कठिन नहीं हैं, जितना कि हम सोचते हैं. जिन परिवारों में बचपन से ही बच्चों को बड़ों का नमन, मंदिर जाने या धार्मिक त्यौहारों पर भागीदारी करने तथा पारिवारिक आयोजनों में सम्मिलित होने का अवसर मिलता है, वहां बच्चे स्वतः ही दीक्षित और शिक्षित होते चले जाते हैं. लेकिन जिन परिवारों में बच्चों पर पूरा ध्यान नहीं दिया जाता, वे संस्कार धारण में पिछड़ जाते हैं. ऐसे माता-पिता स्वयं की व्यस्तताओं के बहाने बनाकर बच्चों को संस्कार शून्य बना देते हैं. हालांकि वे थोड़ी मेहनत करके ये काम कर सकते हैं. परिवार में वर्ष में एकाध बार पाठ, हवन, पूजा जैसे आयोजन तब करायें जब परिवार के सभी सदस्य घर पर उपस्थित हों तो उनके मन में धर्म-कर्म के प्रति श्रद्धा भाव उपजेगें और बढ़ेगें.

खुद का आचरण ऐसा बनायें कि बच्चे उनका अनुसरण करें. जो पिता रोज घर में शराब पीता हो वह बच्चों को शराब से दूर रहने की क्या सीख दे सकता है. जो बीज आज बोएगें, उसके फल आने वाली तीन पीढ़ियों में दिखाई देगें. परम्पराओं को आगे पहुंचाना समाज को सुरक्षित आधार देने का काम है. बच्चों को संस्कार देना वर्तमान और बुजुर्ग पीढ़ी का नैतिक दायित्व भी तो है. यह कार्य जाकरता में रह रहे प्रेम-प्रकाशी भलीभांति कर रहे हैं. ऐसा वहां पर देखने को मिला.

अंत में जकार्ता में रहने वाले प्रेम प्रकाशियों को उक्त सम्मेलन के सफलतम आयोजन हेतु पुनः कोटि साधुवाद के साथ सभी प्रेमियों के श्रीचरणों में निवेदन करते हैं कि आपके द्वारा सम्मेलन में की गई व्यवस्थाएं वास्तव में प्रशंसनीय थी और सभी एक स्वर से प्रतिदिन प्रतिक्षण इन व्यवस्थाओं की प्रशंसा भी करते दिखे और आपका यह कार्य निःसंदेह प्रशंसा योग्य भी है. कभी कभी साधकों द्वारा किये गये सत्कर्मों का भी उनके मन में सत्अंहकार आ जाता है, जैसे एक किसान बीज तो गेहूं का बोता है, मगर गेहूं के पौध के साथ साथ अनायास ही घास भी उग आती है और चतुर किसान वह है जोकि समय रहते उस अनायास पैदा हुए घास को काट दे. यदि वह किसान उस घास को नहीं काटेगा तो वह घास उसके फसल को नष्ट कर देगी.

ठीक उसी प्रकार एक चतुर साधक को भी सतकर्म करते करते सद्अहंकार हो जाय तो उस चतुर साधक को चाहिये कि समय पर इस सद्अंहकार रूपी घास को काट दे, अन्यथा वह सद्अहंकार उसके सद्कर्मों की खेती को नुकसान पहुंचा देगा.

अमिट यादें — सुखद स्मृतियाँ

१. स्टार एयरवेज के एयर होस्टेस विमान परिचारिकाओं द्वारा सत्नाम साक्षी सम्बोधन.

२. गोप सामतानी द्वारा काकपिट से सत्नाम साक्षी एयरलाईन्स की घोषणा स्वागत सिंधी में.

३. धर्म मंत्रालय के महानिदेशक द्वारा सत्नाम साक्षी का अनेक बार उच्चारण.

४. इण्डोनेशियाई भाषी होटल कर्मियों द्वारा सत्नाम साक्षी उच्चारण.

५. होटल में अमरापुर धाम का पक्का निर्माण.

६. प्रेम प्रकाश मण्डली जाकरता के सेवाधारियों का समर्पित विनम्र सेवाभाव.

७. सतुगुरू महाराजजी द्वारा मन्दिर (पर्यटन स्थलों) पर अजगर धारण करना.

८. सतुगुरू महाराज जी द्वारा समुद्र तट पर वरूणदेवता को प्रार्थना (पल्लव) व सभी भक्तों को समुद्र जल का छींटा लगाना.

९. बच्चों द्वारा प्रस्तुत भजन अन्ताक्षरी का लाजवाब प्रस्तुतिकरण.

आश्रम मंदिर दर्शन

सत्नाम साक्षी मंदिर-जाकरता

जाकरता के अति व्यस्ततम मार्ग सेमनगुड्डी पर बहुमंजिली इमारत जहां कि पूर्व में बैंक कार्यालय था. अब यह पूरी इमारत जकारता मण्डली के प्रमुख कार्यकर्ता श्री अर्जुनदासजी के स्वामित्व में हैं. कुछ वर्ष पूर्व सतुगुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज इस स्थान पर जब सत्संग के लिये आये. तो आपने इस हॉल का नाम सत्नाम साक्षी हॉल रखा. कुछ वर्ष पश्चात् सतुगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज जी द्वारा इस स्थान का सत्नाम साक्षी मन्दिर नामकरण किया गया. इस मन्दिर में सतुगुरू महाराज जी की मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम भी शीघ्र ही होने वाला है.

इस इमारत की तीसरी मंजिल पर लगभग २००० स्क्वायर फुट में स्थापित सत्नाम साक्षी मन्दिर (वातानुकूलित) इसमें आचार्यश्री सतुगुरू भगवान के चित्रों के अतिरिक्त स्वामी माधवदासजी महाराज, दादा साधू वासवानी. सांई हिरदाराम, सांई लीलाशाह, गुरूनानकदेव, लीलावतार के विविध स्वरूप, देवी माता के चित्र मन्दिर में सुशोभायमान हैं, प्रवचन के लिये स्थायी मंच भी बना हुआ है मंच पर तीन लकड़ी के मन्दिरों में बायीं ओर वाले मन्दिर में दुर्गा माता. बीच वाले मन्दिर में सतुगुरू भगवान की संगमरमर की छोटी सवा फुट की मूर्तियां व तीसरे मंदिर में श्री झूलेलाल भगवान व इनके समीप श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ सहित अन्य देवी देवता भी विराजमान हैं. दूसरी मंजिल के वातानुकूलित हॉल में प्रत्येक सत्संग के पश्चात् भोजन भण्डारे का विशेष आयोजन रहता है. लगभग २५०-३०० भक्तगण सप्ताह में चार दिवस पर किये जाने वाले सत्संग-भजन कार्यक्रम में भाग लेकर गुरूदेव की भोजन प्रसादी भी पाते हैं. ऊपर मन्दिर में विद्युत चलित ॐ सत्नाम साक्षी अंग्रेजी व सिन्धी अरबी में लिखित बड़ा ही सुन्दर लग रहा है. मन्दिर में आने जाने के लिये जीने के अतिरिक्त १२ व्यक्तियों को एक साथ लाने ले जाने के लिये लिफ्ट भी कार्यरत है, मंदिर की देखरेख श्री अर्जुनदासजी अपनी पत्नी माला नानवानी के साथ चन्द्रा, कमलू-दयाल, कोमल-दीपक करनानी, कृपा नंदवानी व प्रेमियों के सहयोग से संभालते है. सत्यनारायण, चन्द्रदर्शन, चन्द्रदर्शन के बाद वाली एकादशी, शनिवार पर समयानुसार कभी दोपहर कभी शाम को सत्संग-भण्डारे का आयोजन रहता है.

सात समुन्दर पा

प्रेम प्रकाश मंदिर बैकांक

थाईलैण्ड की राजधानी बैकांक के मुख्य मार्ग के समीप सुखमवीट-५५, मेन रोड, थैंग्लो-२५, में प्रेम प्रका मन्दिर फांऊडेशन के नाम से स्थापित प्रेम प्रकाश आश्र दर्शनीय है. ग्राउण्ड फ्लोर के अतिरिक्त तीन मंजिल लगभग २००० स्क्वायर फुट में बना प्रेम प्रकाश मन्दिर मुख्यद्वार सुन्दर रूपसे निर्मित लगभग २० फुट की चौड़ा लिये हुए खुला पेसेज, यहां से भू-तल पर एक हॉल जिसक दायीं ओर जनसुविधा केन्द्र (शौचालय) व ठीक साम अत्याधुनिक सुविधाओं से युक्त रसोई घर, बायीं ओ लिफ्ट अधिकतम ६ व्यक्तियों के लिये निर्मित थी. दाय ओर जनसुविधा के समीप पैदल ऊपर जाने के लिये जी का निर्माण भी किया गया है. भू-तल के पश्चात् प्रथम तल पर भी सम्पूर्ण एयरकण्डीशनर्ड सत्संग हाल जिसमें नीचे प्रवेश द्वार के ऊपर विशाल मंच जो कि लगभग सवा द फुट ऊँचाई लिये हुए है, इसी मंच पर सतुगुरू देव भगवा के स्वरूप चित्रों में विराजमान होकर, समीप ही श्री प्रे प्रकाश ग्रंथ को ससम्मानपूर्वक विराजमान किया गया है हॉल के बाहर थोड़ा खुला पेसेज, द्वितीय तल पर प्रे प्रकाश मन्दिर का मनोहारी दर्शन पूर्ण एयरकण्डीशन युक्त मन्दिर में प्रवेश द्वार के ऊपर एक सुन्दरतम मंच क निर्माण जिसके बायी ओर त्रिपुरारी भगवान भोलेनाथ कैला पर्वत पर विराजित जटाधारी की जटा से गंगा अमृतधार शिवलिंग की ओर जाती दिखायी पड़ रही है. नन्दी महाराज गणेशजी व हनुमानजी के साथ शिवाराधाना करते दर्शन रहे हैं. भगवान बुद्ध की प्रतिमा स्वर्ण के सदृश चमकती हु देदीप्यमान है. भगवान राधाकृष्ण व हमारे इष्टदेव लक्ष्मीनाराय के श्रीविग्रहों के साथ आचार्यश्री सतुगुरू स्वामी टेऊँरामज महाराज, सतुगुरू स्वामी सर्वानंदजी महाराज, सतुगुरू स्वाम शान्तिप्रकाशजी महाराज के दिव्य श्री विग्रह ऐसे प्रतीत ह रहे हैं जैसे सतुगुरू महाराजजी स्वयं सशरीर विराजित होक प्रेमी भक्तों को अपने अमृत दर्शन से पावन कर रहे हैं स्वामी गंगेश्वरानन्दजी महाराज, दुर्गामाता के चित्रों सहि परमात्मा के विविध अवतारों का चित्रों के माध्यम से दर्श

कर प्रेमी भक्त दर्शनानन्द का सुख प्राप्त करता है. इसी मंदिर के ऊपरी तल पर सतुगुरू महाराज, संतों व यात्रियों के लिए सर्वसुविधा युक्त आवास स्थल के रूप में तीन कमरे व हॉल बना हुआ है. इस मंदिर की सेवा व्यवस्था दादी ईश्वरी गंगलानी प्रेमियों के सहयोग से संचालित करती है. प्रेम स्वरूप सतुगुरू स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज की प्रेरणा से निर्मित इस प्रेम प्रकाश आश्रम का उद्घाटन मर्यादामूर्ति सतुगुरू स्वामी हरिदासरामजी महाराज के कर-कमलों से ६ सितम्बर १९९५ को हुआ था.

शर्मिला नंदवानी, ऋचा, प्रह्लाद, जया, तुलसी, स्वरूप नानवानी, इन्दर, लाल, शेवकराम-आशा नंदवानी मंदिर के प्रमुख सेवाधारियों में से हैं. शनिवार चन्द्रदर्शन, एकादशी, सत्यनारायण पर्वों पर प्रेमीगण विशेष रूप से जुटते हैं. लगभग १२५-१५० प्रेमी सत्संगानन्द के पश्चात् भोजनानंद का आनंद भी भू-तल पर बने डाईनिंग टेबलों पर लेते हैं. इन विशेष सत्संगो पर प्रेमीगण अलग-अलग व्यंजन घर से ही बना कर मंदिर में सहभोज का आनंद लेते हुए परस्पर मेल-मिलाप को और प्रगाढ़ करते हैं. मंदिर में श्रीविग्रहों के विधिवत् पूजन अर्चनके लिये पंडित श्रीनिवास त्रिपाठीजी की सेवाएं आश्रम व्यवस्थापकों को प्राप्त हैं.मंदिरकी सेवा सुरक्षाकी जिम्मेदारी बाबू बड़े ही समर्पित भावसे संभाल रहे हैं.

शंकर मंदिर जाकरता

सिंधी हिन्दू समाज का प्रमुख पूजा आराधना स्थल विशाल भू-भाग में स्थापित सर्वसुविधा युक्त पूर्णतः वातानुकूलित श्री शंकर मन्दिर शहर से काफी दूरी विमानतल के पास मुख्य मार्ग पर स्थित है, ये स्थान पूर्व में श्मशान भूमि था. जहां प्रति सोमवार को विशेष पूजा अर्चना सांयकालीन सत्संग उपरान्त सामूहिक सहभोज का विशेष आयोजन रहता है, जिसमें चार-पांच सौ भक्तगण सम्मिलित होते हैं त्रिपुरारी भोलेश्वर के विशाल स्वरूप के आगे शिव पिण्डी के साथ सिंधी समाज के इष्ट आराध्य भगवान झूलेलाल के अतिरिक्त श्री गुरूनानदेवजी, दादा साधू वासवानीजी, सतुगुरू स्वामी टेऊँरामजी महाराज, स्वामी लीलाशाह, सांई बाबा, राम-जानकी, श्री लक्ष्मीमाता, भगवान श्रीकृष्ण, बजरंगबली के ऊपर निर्मित नीली छतरी अत्यन्त ही आकर्षक मनमोहने वाली स्थापित है. श्री विष्णु भगवान, ब्रह्माजी, नवग्रह, दुर्गामाता के अतिरिक्त श्री बालाजी महाराज का भी एक विशेष मंदिर श्री शंकर मन्दिर के अन्तर्गत ही बना है. सभी सन्त महापुरूषों व भगवान के स्वरूपों को अलग-अलग मन्दिर बनाकर विधिपूर्वक स्थापित किया गया है. श्री बालाजी महाराज के पूजा अर्चना के लिये दक्षिण भारतीय पुरोहित श्री अय्यपाजी सेवा में संलग्न है. मन्दिर की देखरेख संचालन के लिये लच्छू टोपनदासानी व्यवस्थापक ट्रस्टी के साथ सभी लोग मिल जुलकर सहयोग करते हैं. दीदी जानकी देवी मन्दिर की पूजा अर्चना नियमित रूप में निष्काम भाव से करके अपना जीवन सफल कर रही हैं

प्रेम प्रकाश आश्रम कोलून हांगकांग

हांगकांग के उपनगर कोलून के मध्य में व्यापारिक केन्द्र के नजदीक, मुख्यमार्ग से १५ फुट अन्दर १०१-नेशन रोड़ हैपोंग मेन्शन की ५वीं मंजिल के फ्लेट नं. ६ में स्थापित प्रेम प्रकाश मन्दिर आश्रम की स्थापना पूज्य गुरूवर स्वामी शान्तिप्रकाशजी महाराज के कर-कमलों द्वारा सन् १९८१ में हुई थी. इसके पूर्व पूज्यपाद सतुगुरू स्वामी सर्वानन्द जी महाराज भी हांगकांग आये थे. आश्रम में सतुगुरू महाराज जी व देवी देवताओं के सुन्दर मन्दिर बने हुए हैं. संत महापुरूषों व लीलाधारी भगवान के विभिन्न लीलाओं की तस्वीरें भी दीवारों पर सुशोभित हैं. आश्रम-मंदिर की सेवा व्यवस्था प्रेम प्रकाश मण्डली हांगकांग के सहयोग से संत नामदेवजी सुचारू रूप से संभाल रहे हैं. गुरूवार, शनिवार, चन्द्रदर्शन, पूर्णिमा इत्यादि दिवसों पर सत्संग-भण्डारे के आयोजन में १२५-१५० प्रेमी जुड़ते हैं.

नयी वी.सी.डी. (चित्रमय जीवन दर्शन) कैसेट समीक्षा

ब्रह्मर्षि सद्गुरू सर्वानन्दजी महाराज

त्याग तप की साक्षात् मूर्ति सद्गुरू स्वामी सर्वानन्दजी महाराज जिन्होंने पूरा जीवन श्री गुरू चरणों में समर्पित कर आचार्यश्री की यश कीर्ति को चंहु ओर फैलाया. जीवन का अधिकांश समय जंगलों व ऋषिकेश की झाड़ियों में एकांतवास कर साधना करते हुये बिताया. ऐसे तपस्वी महापुरूष के पावन प्रकटोत्सव पर उन्हीं के जीवन से संबंधित एक वी.सी.डी. तैयार की गयी है, जिसका लोकार्पण हरिद्वार मेले पर होगा. श्री श्याम मनवानी के अथक श्रम से तैयार इस कैसेट में महाराजजी के जीवन से संबंधित दुर्लभ चित्रों को संजोकर प्रस्तुत किया गया है. कैसेट में महाराजश्री के जीवन की व्याख्या करते हुये भजन भी संकलित किये गये हैं. कैसेट का मूल्य ३० रूपये रखा गया है. जिसे श्री अमरापुर स्थान सहित सभी प्रमुख प्रेम प्रकाश आश्रमों से प्राप्त किया जा सकता है.

परदेश सिंगापुर दर्शन

१८ जुलाई जाकरता समयानुसार सांय ५:५५ पर थाई एयरवेज के विमान द्वारा सतुरू महाराजजी, सन्तमण्डली व प्रेमियों सहित सिंगापुर के लिये रवाना हुए. एक घन्टा २५ मिनट की वायुमार्ग यात्रा पूरी कर सिंगापुर समय ८:२० रात्रि के, सिंगापुर अन्तर्राष्ट्रीय विमानतल पर पहुंचे. सिंगापुर की घड़ीयां भारतीय समय से २:३० घण्टा आगे चलती है. अर्थात् यहां पर शाम के ६ तो सिंगापुर में रात्रि के ८:३० बजे होते हैं. भारत-पाक, स्पेन, मनीला, हांगकांग, बैकांक, जाकरता के प्रेमी भी सतुरू महाराजजी के साथ सिंगापुर यात्रा पर पहुंचे. मंघाराम-इन्दिरादेवी, गोपीचंद-शंकरलाल के साथ सिंगापुर के कई प्रेमी स्वामीजी के स्वगतार्थ उपस्थिति थे. गोपीचंद शकंरलाल के नवीनतम फ्लेट में सतुरू महाराज संतों के रहने की व्यवस्था की गयी थी. सत्संग प्रायः मंघाराम-इन्द्रादेवी के यहां होता था. प्रेमीगण पैकेज टूर के अन्तर्गत होटल में ठहरे थे.

कड़े अनुशासन के अन्तर्गत नियम-कायदों का बड़ी सख्ती से यहां पर पालन होता है. सड़कों, मकानों-दुकानों की सफाई एवं अन्य व्यवस्थायें देखकर मन प्रसन्न हो उठा काश हम लोग भी अपने प्यारे भारत को इस तरह का बनाने में सहयोगी बनें. यहां की मुद्रा डालर जो कि सिंगापुर सरकार द्वारा प्रचलन में है. २७ भारतीय रूपयों में एक डालर की कीमत थी. सिंगापुर में एशिया का सबसे बड़ा शांपिग सेन्टर मुस्तफा सेन्टर, जहां पर आटोमोबाईल सेक्टर छोड़कर सब्जीयों-फलों, स्वर्ण, हीरे-मोती सहित संसार की समस्त वस्तुऐं एक ही स्थान पर क्रय की जा सकती हैं. हजारों कर्मचारियों के साथ एक हजार से अधिक काउन्टर, व तीन लाख से अधिक वस्तुओं वाला यह सेंटर २४ घण्टे खुला रहता है. इसी के पास वाला मार्गो पर इण्डियन बाजार है. जहां पर भारतीयों द्वारा संचालित भारत के हर प्रान्त के खाने पीने के सर्व सुविधापूर्ण रेस्टारेन्ट हैं.

सिंगापुर आयरलैन्ड प्रमुख पर्यटन स्थल के दर्शन कर सभी यात्रियों को आनन्दानुभूति हुई. समुद्र के लगभग २००-२५० फुट ऊपर से ट्राली में सवारी क नीचे समुद्र चारों ओर बहुमंजिली इमारतों के दर्शन स में रोमांच भरा था. यहां से हरियाली युक्त दर्शनीय स्थ दर्शन करने के पश्चात् अण्डरवाटर वर्ल्ड जो कि अ रोमांचकारी था. समुद्र में पाये जाने वाले जीव-जन्तु-वन्स को जमीन के अन्दर एक विशालकाय गुफा रूपी स्थ छत सहित दोनों ओर की दीवारों में जल में जीवन्त द गया था . सचमुच में बेजोड़ दृश्य था यह. यहां से आटोमेटिक छोटी रेल केवल ड्रायवर द्वारा संचालित जमीन से १००-१२५ फुट की ऊँचाई लिये थी, में एक की सवारी करते हरियाली से आच्छादित आड़े तिरछे पर एक पटरी पर दौड़ती छोटी रेलगाड़ी से आयरलैण खूबसूरत दर्शनकर मन उल्लासित हो उठा. सर्वाधिक रोमांच व्हेल शो के अन्तर्गत व्हेल मछलीयों के नृत्य सहित करतब देखकर दांतो तले अंगुली दब ही गयी. मानव ने थल नभ में विचरण करते जीवों को तो वश में कर अ मन मुताबिक चलाने में महारत हासिल कर ली है. ले हे मानव तू अपने मन को अपने मुताबिक नहीं नियंत्रित पाया है. सबसे अन्त में हजारों हजारो लोगों की उपि में रंगीन फव्वारों का दृश्यावलोकन-कभी न भूलने वाले हैं. तरह तरह की आकृति बनाते, आतिशबाजी च अग्नि स्नान करते, फव्वारों की स्क्रीन पर फिल्म प्र फव्वारों का ३५ मिनट तक यह मनभावन प्रदर्शन दे मन प्रफुल्ल हो उठा.

सिंगापुर में मलय व अंग्रेजी भाषा बोली जा रही काफी बड़ी संख्या में भारत-पाक से आये लोग भी यहं व्यवसाय में निपुण होकर सम्पन्नता की श्रेणी में अग्रस अधिकांश लोग यहां पर मांसाहारी भोज पदार्थों का करते हैं. इण्डियन बाजार में पंजाबी, सिंधी, मारवा दक्षिण भारतीय भोजनालयों में शाकाहारी भोजन मे अनेक प्रकार के व्यजंन उपलब्ध हैं. खाद्य पदार्थों में म का स्तर भारत से तीन गुना है इलेक्ट्रोनिक सामान अन्तर कंपनीयों का यहां पर भारत की अपेक्षा सस्ता है.

सत्य व मीठा बोलने वाला मनुष्य देश व परदेश जहां भी जायेग वहां सुख ही पायेगा. दुःख कहीं नहीं. - सद्गुरू सर्वानन्द सं

हांगकांग दर्शन

समुद्र के किनारे बसा विश्व का एक अत्याधुनिक मुल्क हांगकांग. जो चीन की भूमि है. चीन सरकार द्वारा दी ायी लीज अवधि १९९७ में पूरी हो गयी थी. ५० वर्ष के लिये पुनः लीज अवधि बढ़ायी गयी है. ९७ मंजिली ट्रेड फ़ेयर सेन्टर व ४२ मंजिली इमारत के फ्लेट्स का भी अवलोकन सतगुरू महाराज-संतमण्डली व प्रेमियों ने किया. यहां के लोगों की भाषा चाईनीज है. अंग्रेजी भाषा दूसरे देशों के लोग जो यहां बस गये हैं, समझते हैं. ११० वर्ष पूर्व अंग्रेजों द्वारा चलायी गयी रेलगाड़ी, जो ४००-५०० फुट ऊँचाई पर चलती है, ऊँचाई पर पहुंचने के लिये परिवहन के अन्य साधनों को उपयोग में लाया जाता है. यहां पर पीक ट्राम टॉवर जो कि हांगकांग का सबसे सुन्दर दर्शनीय स्थल है. में पानी की एक बोतल भारतीय रूपयों के हिसाब से रूपये ६०० में मिल रही थी.

सफर

सतगुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, स्वामी जयदेवजी, संत नामदेवजी, संत हरीओमलालजी, संत रमेश लालजी, संत लालूराम, संत संजय, संत हेमन्त, संत लक्ष्मण, भक्त द्वारकादासजी (ग्वालियर), मंघाराम (सिंगापुर), कन्हैयालाल राधा (आगरा), प्रेमचन्द (मनीला), जया (बैकांक), गोपी-अनीता सामतानी (जाकरता), श्याम-जानकी, प्रेमा-ईश्वर (स्पेन) के अतिरिक्त हांगकांग के प्रेमी वाशी, टोनी, गंगा-गोपाल, कविता, श्यामलाल, प्रीता-हीरो सामतानी, सभी एक लक्जरी वातानुकूलित बस में हांगकांग से चायना के बार्डर के पास चीन के एक नगर के दर्शनों को भी गये. सीमा पर दो स्थानों पर पासपोर्ट जांच हुई. यहां पर दुनियां के सात अजूबे ताजमहल सहित की हूबहू प्रतिकृति (कॉपी) देखकर सभी आश्चर्यचकित रह गये. रेलगाड़ी द्वारा उपरोक्त सभी स्थानों के दर्शन किये, जमीन से १५ फुट ऊँचाई लिये हुए आटोमेटिक ट्रेन आड़े तिरछे ऊँचे नीचे रास्तों पर सरपट दौड़ती हुई इस आयरलैण्ड की हरियाली व अजूबों के दर्शन करा रही थी. आपको बता दें कि यह ट्रेन एक पटरी जो चौड़ी होती है के बीच में स्थित रहती है. पर चल रही थी. पटी रेल के माफिक यह रेल, जिसके खिड़कीयां, दीवारें इत्यादि नहीं थे. दरवाजे आटोमेटिक खुलते बन्द होते थे. इस प्रमुख पर्यटनीय स्थल में अनेक स्थानों पर लिफ्ट भी लगी हैं खाने पीने के स्टाल भी हैं. साथ ही पर्यटकों के विश्राम के लिये सुन्दरतम स्थान बने हुए हैं, यहीं पर सतगुरू महाराज व संत प्रेमियों के लिये भोजन प्रसादी की व्यवस्था की गयी थी. यहां पर विश्राम के मध्य भजन अन्ताक्षरी का कार्यक्रम भी चला, जहां पर चीनी प्रेमी भी भक्ति के आवेश में आकर खूब नाचने लगे. पुनः सड़क यात्रा करते हुए हांगकांग आये. हांगकांग में रायल जोकीं क्लब हांगकांग का सबसे बड़ा दर्शनीय स्थान है के दर्शन भी किये. हांगकांग में जमीन से दो मंजिल नीचे एम.आर.टी. रेलगाड़ी चलती है. जो कि जमीन व पानी दोनों में बनायी गयी भूमिगत सुरंगों को पार करती हुई यात्रियों को गन्तव्य स्थानों तक पहुंचाती है. रेल पटरियों के पास सड़क मार्ग भी बना है जहां बसें कारें दौड़ती दिख रही थी. हांगकांग में मकानों दुकानों पर बिजली की अपार डेकोरेशन सदैव रहती है. दूसरे शब्दों में कहें कि यहां सदैव दीपावली रहती है. यहां पर अत्याधुनिक बड़े-बड़े शापिंग सेन्टरों पर विश्व की समस्त वस्तुऐं मिलती हैं.

बैकांक यात्रा-झलकियाँ

- ३ जुलाई प्रातः ६.३० (भारतीय समय प्रातः ५ बजे) बैकांक पंहुचे.
- प्रवास प्रेम प्रकाश मंदिर में.
- ४ जुलाई प्रातः प्रेमियों के घरों को पावन करते हुए. प्रातः १० बजे विशाल देवी मंदिर में दर्शन-सत्संग सभा. बौद्ध स्तूप मंदिर के दर्शन.
- ६ दिवसीय प्रवास में सत्संग आयोजन प्रेम प्रकाश मंदिर पर रहा. प्रवास मध्य हंगकांग से सन्त नामदेव जी भी दो दिवसीय यात्रा के अन्तर्गत सतगुरू महाराज जी की मण्डली में सम्मिलित हुए.
- भारत से गये प्रेमी जाकरता बाली सिंगापुर से दो दिवसीय यात्रा पर बैंकांक प्रेम प्रकाश मंदिर २१ जुलाई पहुंचे.
- बैकांक से सड़क मार्ग द्वारा ३:३० घण्टे की यात्रा कर वताया बीच के सुमानोहर दर्शन कर सभी प्रेमी आनंदित हुए. बैकांक के कुछ मंदिरो व रेडीमेड बाजारों को भी घूमा. इच्छुक प्रेमीयों ने रेडीमेड कपड़ों की खरीददारी भी की, यहां पर रेडीमेड कपड़ों का बहुलता में व्यवसायिक उत्पादन होने के कारण यह सस्ते भी पड़ते हैं.
- अधिकांश दुकानों व बसों तकमें कामकाजी महिलाओं की प्रचुरता थी.
- परिवहन के साधनों में दोपहिया मोटर टेक्सी भी काफी मात्रा में वर्दीधारी ड्राइवरों द्वारा संचालित चल रही थी.
- यहां की मुद्रा को बाट कहा जाता है. वहां के सौ बाट भारत के १११ रूपयों के बराबर कीमत के थे.
- बैकांक के प्रायः हर घर के आंगन में छोटे बड़े मंदिर जिसमें स्वर्ण सदृश भगवान ब्रह्माजी की चतुर्भुजी प्रतिमा व भगवान बुद्ध की प्रतिमा स्थापित थी. पूजा पाठ संध्यावन्दन का यहां विशेष महत्व है.

सद्गुरू महाराज के आगमन से स्पेन में भी चंहु ओर आनन्द

हिन्दू संस्कृति केन्द्र के नवीन मंदिर पर बच्चों द्वारा नाट्य प्रस्तुति

२१ अगस्त २००४ सायंकालीन सत्संग जेल अमेरिका (स्पेन)- बाल सभा में कुछ बच्चे आयु लगभग ५ से ७ वर्ष के बीच रंगबिरगीं वेशभूषा में मंच के पास आपस में सिन्धी बोली में वार्तालाप करते हैं.

एक दूसरे से पूछते हुए बता रहे हैं. एक बच्चे ने पूछा-कहां जा रहे हो मित्र ? दूसरे ने कहा-आज मैं सत्संग में जा रहा हूं, इस पर तीसरा पूछता है-सत्संग में क्या होता है ? चौथा उत्तर देता है- सत्संग में संत महात्मा ज्ञान देते हैं. और पांचवा बताता है- मेरी मम्मी कहती है सत्संग में पकवान मिलते हैं. इस पर छठवां वाला बच्चा कहता है- नहीं भाई सत्संग में तो सुमति ज्ञान मिलता है सांतवा खुश होकर कहता है-चलो हम भी संतों से सुमति ज्ञान मांगे. आठवां बालक अपनी मीठी वाणी में बताता है-मेरी मम्मी कहती है-सन्तों - भगवान से केवल सुमति मांगनी चाहिये. नवें क्रम का बालक उलाहना देते हुये पूछता है कि क्या हम संतों से कुछ लेने ही आये हैं कुछ देगें नहीं हम सन्तों को. इस पर दसवां हंसमुख बालक सभी को याद कराता है. अरे भई हम फूल जो लाये हैं सन्तों के श्रीचरणों में अर्पण करने को, चलो सब चलो सन्तों को पुष्प अर्पण करते हैं. इस अवसर पर एक भक्त प्रेमी व बच्चों द्वारा भजन गायन- **सांई की कृपा सत्गुरू की कृपा**

जिस पर हो जावे भक्ति को पावे मौज उड़ावे

१. चाहे जिस देश में हो चाहे जिस वेश में हो
चाहे जिस प्रदेश में हो भक्ति को पावे मौज उड़ावे...
२. चाहे जिस रंग में हो चाहे जिस ढंग में हों
चाहे जिस तरंग में हो भक्ति को पावे मौज उड़ावे...
३. चाहे वो घर में हों चाहे वो वन में हो
चाहे जिस उलझन में हो भक्ति को पावे मौज उड़ावे..
४. चाहे अमीर हो चाहे गरीब हो
चाहे बिगड़ी तकदीर हो भक्ति को पावे मौज उड़ावे...
५. चाहे वो ध्यानी हो चाहे वो ज्ञानी हो
चाहे वो अज्ञानी हो भक्ति को पावे मौज उड़ावे...
६. चाहे वो दुखी हो चाहे वो सुखी हो
चाहे जीवन मुश्किल हो भक्ति को पावे मौज उड़ावे...

विदेश-यात्रा



सूर्य-चन्द्र भी उतरे जमीं

लासपालमास (स्पेन) में नाट्य प्रस्तुति

९ अगस्त समय सांय ७ बजे प्रेम प्रकाश आश्रम-स सभा स्पेन में रह रहे उत्साही संस्कारवान बच्चों द्वारा बोली में प्रस्तुत नाट्य मंचन का आप भी आनन्द उ

एक नन्हा बालक सूर्यदेव का रूप धरे रंगमंच प्रकट होता है और आते ही पूछता है कि यहां इतना प्र कहां से किसके द्वारा रोशन हो रहा है यह जगत ज प्रकाशित तो मेरे द्वारा होता है. अभी सू सोच ही रहे थे कि चन्द्रदेव प्रकट हो कहने कि यह शीतल प्रकाश कहां से किसके द्वा रहा है. इतनी शीतलता कहां से आई दिखती है. इत चार तारे भी वहां आते हैं. एक कहता है- आहा-आज यहां पर श्री अमरापुर के महापुरूष जो कि भक्ति के पुं जिनका नाम सत्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी हैं. हमें प्र देने यहां पधारे हैं. दूसरे तारों ने कहा- वाह वाह. आज अद्भुत आनन्द ही आनन्द है. दिव्य शीतल प्रकाश से दिशाऐं दमक रही है. यह देख सुनकर सूर्यदेव चन्द्रदेव गुरूदेव को नमन करके अपने कर्तव्य निर्वहन के लिये पड़े.

गीता श्लोकों की लिखित प्रतियोगिता परी

१२ अगस्त- मर्यादामूर्ति सत्गुरू स्वामी हरिदासरा महाराज की प्रेरणा स्वरूप लासपालमास (स्पेन) के प्रेम प्र आश्रम द्वारा आयोजित श्रीमद्भगवद्गीता के पन्द्रहवें अध्या श्लोकों को यादकर उन्हें शुद्ध उच्चारण के साथ अर्थ स लिखित परीक्षा का आयोजन किया गया था. ५० से अ बच्चों ने इस परीक्षा में उत्साह से भाग लिया. तीन सर्व आये प्रतिभागियों लवीना जेठवानी, विमला भूलानी, डि जेठवानी को सत्गुरू महाराजजी के कर-कमलों से सोने लॉकेट पहिनाकर पुरस्कृत किया गया. इस अवसर पर बालिकाओं के मुखारविन्द से गीता के १२वें अध्याय के श्ल का सस्वर पाठ सुनकर सत्गुरू महाराज-सन्त मण्डल व उपरि श्रोता गद्गद् हो गये. धन्य हो विदेशों में रह रहे हमारे भाई-प्रेमी सनातन भारतीय संस्कृति के संस्कार अपनी पीढ़ी को देने के लिये उन्हें कोटिशः साधुवाद.

स्पेन में प्रेम प्रकाश सत्संग आश्रम

लासपालमास, साऊथ, साऊटा (माता पद्मादेवी), मेड्रिड, तनरीफ (अभी स्पेन यात्रा के अन्तर्गत स्थापना) शहरों में सतुगुरू टेऊँराम ज्ञानगंगा में प्रेमी भक्त पावन होकर परमशान्ति की ओर अग्रसर हैं. मन्दिरों में सप्ताह में शनिवार व बड़े पर्व के अन्तर्गत सत्संग भण्डारे में प्रेमीगण प्यार स्नेह श्रद्धा व सेवा भावना के साथ सम्मिलित होते हैं.

स्पेन के शहरों में प्रेमीयों के पास बड़े-बड़े मकान व फ्लेट्स भी बड़े वर्गाकार क्षेत्र में बने हैं. घरों में फूलों की सजावट के लिये गमले भी लगे हुए हैं. लगभग सभी प्रेमियों के पास चार पहिया वाहन. जिनके पार्किंग की व्यवस्था रोड पर या घर के अन्दर भूमिगत गैरेज में रहती है.

पूरे स्पेन में स्पेनिश भाषा मुख्य रूप से बोली जाती है. हमारे प्रेमी जो व्यवसाय की खातिर पिछले अनेक वर्षों से वहीं रहते हैं, स्पेनिश भाषा सीख कर स्पेनिश लोगों से पूरी तरह से घुल मिल गये हैं एवं उन्नति के पथ पर चलते हुये वहां के समाज-शासन में अपना प्रभाव रखते हैं. भारत से हजारों-हजारों किलोमीटर दूर सात समुद्र पार स्पेन में रह रहा सिन्धी हिन्दू समाज आज भी भारतीय संस्कृति को प्यार करता है और सभी त्यौहारों को परस्पर एकता भाईचारे के साथ मनाकर परम्परा को अक्षुण्ण बनाये हुये है. स्वयं बच्चों सहित सभी सिन्धी भाषी प्रेमी अपनी मातृभाषा सिन्धी बोली से प्यार करते हुये एक दूसरे से सिन्धी में ही बात करते हैं.

सद्गुरू टेऊँराम चालीसा को कण्ठस्थ किया स्पेन के बच्चों ने

लासपालमास १० अगस्त- स्थान प्रेमचंद का निवास १० वर्षीय बच्चों करिश्मा सुपुत्री श्री प्रकाशचंद, अर्चनासुपुत्री श्री घनश्यादास व राम नामक बालक-बालिकाओं ने सत्संग सभा में सद्गुरु महाराज की उपस्थिति में सद्गुरू टेऊँराम चालीसा का पाठ सस्वर सुनाया. बच्चों को प्रोत्साहित करते हुए सद्गुरु महाराजजी द्वारा आशीर्वाद के साथ उपहार भी दिये गये.

भारतीय स्वतंत्रता दिवस स्पेन में

१५ अगस्त स्वतन्त्रता दिवस पर स्पेन के बच्चों द्वारा गया गया गीत महापुरूषों की महान धरती, हमारा हिन्दुस्तान है देशभक्तों की ये महान धरती, हमारा हिन्दुस्तान है. भारत के प्रति वहां रह रहे भारतीयों की आस्था लगन का परिचायक है.

हिन्दी कम्युनिटी मंदिर का लोकार्पण

६ अगस्त प्रातः ११ बजे साऊटा की स्थानीय प्रशासनिक इकाई के प्रेसीडेन्ट द्वारा पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की उपस्थिति में हिन्दू कम्युनिटी मन्दिर के गत ७ वर्षों से लम्बित प्रकरण को समाप्त कर, सतुगुरू महाराजजी की आज्ञा से उक्त मंदिर का आधिपत्य सिंधी हिन्दू समाज को सौंपा गया. प्रेसीडेन्ट जॉन जीसुस लारा द्वारा इस अवसर पर स्पेनिश सरकार की ओर से पूज्य महाराजश्री का अभिनन्दन भी किया गया. विभिन्न टी.वी. चैनल्स सहित स्पेन की छोटी बड़ी अखबारों के संवाददाता व प्रेस फोटोग्राफर्स भी इस अवसर को केमरे-लेखन में कैद करने को उत्सुक थे. किमी सुपुत्री रमेशचन्द चंदीरामानी के साथ अनेक गणमान्य लोग भी इस मौके पर मौजूद थे. विशाल सत्संग सभागार सहित कार्यालय, कमरे, शौचालय इस मन्दिर के अन्तर्गत बने हुये हैं. श्री गणपति पूजन, लक्ष्मी नारायण व आचार्य श्री की पूजन स्तुति के साथ बड़े ही हर्षपूर्ण वातावरण में उपरोक्त कार्यक्रम को पूर्णता मिली.

अमरापुर धाम का चित्रण बच्चों द्वारा

साऊटा (स्पेन) में १३ अगस्त को सत्संग सभा के मध्य वहां की बालिका मण्डली द्वारा सामूहिक रूप से बनाया गया श्री अमरापुर दरबार का चित्र सतुगुरू महाराजजी को भेंट किया गया. इस पर आचार्य श्री का मनोहर चित्र भी अमरापुर दरबार में दिखाया गया है.

गीता भवन मन्दिर मेड्रिड पम्पलोना

हिन्दू समाज द्वारा स्थापित गीता भवन मन्दिर, जहां पर दुर्गामाता, श्री शंकर भगवान, श्री राधाकृष्ण, श्री हनुमानजी, श्री गणेशजी. राम दरबार शिवलिंग की स्थापना की गयी है. यहां पर भी १ सितम्बर को सायं ७:३० से ९ बजे तक पूज्य गुरूदेव जी के सत्संग सरिता में सिंधी हिन्दू समाज ने बड़ी संख्या में उपस्थित होकर अमृतपान किया.

झूलेलाल मन्दिर मेड्रिड

स्पेन की राजधानी मेड्रिड में सिन्धी हिन्दू समाज द्वारा एक भव्यतम झूलेलाल मन्दिर की स्थापना की गयी है. श्री गणेश भगवान, श्री झूलेलाल भगवान व लक्ष्मी माता के श्रीविग्रह प्रतिष्ठापित किये गये हैं. इस मन्दिर की व्यवस्था मन्दिर ट्रस्ट के सहयोग से श्री लालचंद जी की देखरेख में होती है. पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज १ सित. सायं ७ से ९ बजे तक संतमण्डली के सत्संग का सुन्दर आयोजन इसी मन्दिर के सत्संग सभागार में आयोजित था. इस अवसर पर हांगकांग से आये प्रेमी टोनी जी द्वारा सभी श्रोता प्रेमियों को आचार्य श्री की सुन्दर मूर्ति उपहार स्वरूप दी गयी.

मेड्रिड में भी सांईं टेऊँराम ज्ञानगंगा का शुभारम्भ

१ सितम्बर २००४-प्रेमी भक्तों के हृदय के भावों का आदर करते हुये पूज्यपाद गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज जी ने श्री प्रकाश अजय कुमार-शशी के भू-तल के फ्लेट में आचार्यश्री के चित्रमयी मूर्ति की स्थापनाकी, इसी के साथ प्रेम प्रकाश सत्संग मन्दिरकी स्थापना होने से यहां के प्रेमियोंमें मन में खुशी छा गयी. अब इस आश्रममें भी प्रति शनिवार, चन्द्रर्शन, सत्यनारायण व बड़े पर्वों पर सत्संग भण्डारे का नियमित आयोजन होगा.

तनरीफ में भी सद्गुरु टेऊँराम ज्ञानगंगा हुई प्रवाहमान

१७ अगस्त-सत्संग हाल में सुश्री जानू सुपुत्री श्री भागूमलजी द्वारा अमरापुर दरबार की सुन्दर झांकी का चित्रण साथ में दो दोहे तीर्थ दो प्रकार के चल पुनि अचल पछान गंगा आदिक अचल है चल है सन्त सुजान हृदय से जब प्रार्थना कह टेऊँ कर कोय भगवत् के तब कान में शीघ्र पहुंचत सोय

यहां के प्रेमियों के अनुनय विनय पर सतुरू महाराजजी ने जानू भागूमलजी के निवास पर प्रत्येक शनिवार को सत्संग करने की आज्ञा की, जिसका शुभारम्भ आज परम पवित्र शनिवार दिवस पर सतुरू महाराजजी के सत्संग से हुआ.

गीता भवन तनरीफ

भगवान राधाकृष्ण, शंकर-पार्वती, झूलेलाल भगवान व आचार्य श्री के स्वरूप स्थापित है. रविवार, मंगलवार, शुक्रवार, शनिवार सहित महीने में १५ दिवस सत्संग भजन के नियमित कार्यक्रम में बड़ी संख्या में प्रेमी आकर आनन्द उठाते हैं.

सिन्धु संस्कृति केन्द्र में मूर्ति स्थाप

२२ अगस्त प्रातः ८:३० बजे प्लाय द अमेरिका के संस्कृति केन्द्र मन्दिर में लासपालमास से आये गीता मि पुरोहित द्वारा वेद मन्त्रोच्चारण हवन यज्ञ के साथ जगजन माँ, गणपति, राधाकृष्ण,शंकरपार्वती,लक्ष्मीनारायण, रामजानकी, हनुमान, भगवान झूलेलाल, सतुरू टेऊँरामजी महाराज, सर्वानन्दजी महाराज, सतुरू शान्तिप्रकाशजी महाराज, हरिदासरामजी महाराज व सांईं बाबा के श्रीविग्रहों की पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के कर-कमलों की गयी. इस अवसर पर ध्वजावन्दन भी हुआ.

इण्डोनेशिया सरकार की ओर स्वागत उद्बोधन



धर्ममंत्रालय के महानिदेशक डायरेक्टर हिन्दू बौद्ध समाज के प्रमुख द्वारा इण्डोने सरकार की ओर से स्वागत उद्बोधन व इण्डोनेशियाई भाषा में दिया गया- जिसका अनुवाद सामताणी जी द्वारा सिंधी बोली में किया जा रहा था. हिन्दी रूपान्तरण तुरन्त लिपिबद्ध किया गया, जो सेवा में है प्रस्तुतः-

मुझे अत्यन्त खुशी है, आपने जो मेल-मिलाप यहां आकर किया है. मुझे बहुत खुशी हो रही है स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज सन्तमण्डली व विश्व आये प्रेमियों का स्वागत करते हुए. बाली इण्डोने शासन की ओर से हार्दिक अभिनन्दन कर रहा हूं स महाराज-सन्तमण्डली का.

कुछ वर्ष पहले बाली में बम फटने से 200 बे लोग मारे गये थे. मुझे उम्मीद है प्रेमप्रकाशी मेल-मि से, सतुरू की आसीस से बाली पूर्ववत् हो जा वस्तुतः बाली मोबाईल जैसे है, हमारी मोबाईल तकलीफ में थीं, बैटरी वीक होने के कारण एस भी नहीं हो पा रहा था. बाली मोबाईल सतुरू के से पुनः रीचार्ज होगी. मैं पूरी उम्मीद करता हूं, बा पुनः शान्ति बहाल होगी, खुदगर्जी-आन्तक समाप्त गुरूदेव के आसीस से, करूणा जो इन्सान में स हो गयी है, वो पुनः जागृत होगी. मैं बड़ा खुशनि हूं. जो मुझे ऐसे महान गुरूदेव के दर्शन-स्वागत-स का सौभाग्य मिला.

अमेरिका में भी गूंजा सद्गुरू टेऊँराम का जयघोष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्तमण्डली की विदेश यात्रा

• न्यूयार्क टी.वी. द्वारा साक्षात्कार प्रसारित

ॐ यात्रा-दर्शन

न्यूयार्क 3 सितम्बर 2004

स्पेन यात्रा के अंतर्गत प्रेमियों को भगवन्नाम का रसास्वादन कराकर सद्गुरू टेऊँराम ज्ञानगंगा को निरन्तर प्रवाहमान करते ३ सितम्बर को स्पेन यात्रा पूरी कर वहां के समयानुसार प्रातः १० बजे न्यूयार्क (अमेरिका) के लिये रवाना हुये. पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज के साथ संत जयदेवजी, संत नामदेवजी, संत हरिओमलालजी स्पेन की राजधानी मेड्रिड से चलकर लुफ्तांसा विमान सेवा से फ्रेन्कफर्ड (जर्मनी) दोपहर १२:३० बजे पहुंचे, यहां से दूसरे विमान द्वारा दोपहर १:३० बजे चलकर रात्रि १० बजे न्यूयार्क पहुंचे. न्यूयार्क में इस समय शाम के ५ बज रहे हैं. विमानतल के बाहर अनेक प्रेमी डॉ. अशोक-कमल चैनानी के साथ महाराजश्री की अगवानी के लिये बेसब्री से प्रतीक्षारत थे. स्वामीजी की मण्डली के साथ स्पेन से सुश्री चन्द्रादेवी, भागूमल, लवीना भी साथ आये थे. स्वागतोपरांत पूज्य महाराजश्री को न्यूयार्क में डॉ. अशोक-कमल चैनानी के निवास पर लाया गया. यहां पर पूज्य स्वामीजी से मिलने कई गणमान्य लोग आये. रात्रि विश्राम के पश्चात् प्रातः अनेक प्रेमियों के घरों में चरण पखारते भोजन भण्डारे के पश्चात् न्यूजर्सी रवाना हुये.

न्यूजर्सी 4 से 7 सितम्बर 2004

सड़क यात्रा द्वारा प्रकृति के मनोरम दश्यों को देखते हुये दोपहर २ बजे न्यूजर्सी स्थित वीना दयाल के निवास पर पहुंचकर विश्रामी हुये. सायं ५:३० से ७ बजे तक श्री दुर्गा मंदिर में ४, ५, ७ सितम्बर को आयोजित सत्संग सभाओं में न्यूजर्सी व न्यूयार्क के सैकड़ों भक्तों ने भाग लेकर सद्गुरू महाराज व सन्तों के श्रीमुख से ज्ञानामृत का पान किया. श्री दुर्गा मंदिर में ४ सितम्बर को पहुंचते ही वहां के पंडित श्री भागीरथ शर्माजी ने स्वामीजी को वेदोक्त मंत्रों के साथ तिलक लगाया, शाल पहनाकर पूजन स्वागत उपरांत महाराजश्री को मंचासीन किया गया. श्री भल्लाजी सहित दुर्गा मंदिर के ट्रस्टीयों द्वारा स्वामीजी व संतमण्डली का अभिनंदन किया गया. माँ दुर्गा मंदिर में भगवती दुर्गाजी के अतिरिक्त श्री गणेशजी, श्री लक्ष्मीनारायण, माँ लक्ष्मी, सरस्वती, शिव परिवार व हनुमान जी के दिव्य श्रीविग्रहों के साथ मंदिर की शोभा अत्यंत ही रमणीक थी.

न्यूजर्सी का वेद मंदिर जहां पर वेद भगवान के साथ राधा-कृष्ण, लक्ष्मी-नारायण, श्री राम दरबार, सरस्वती माता, शिव परिवार के सुदंरतम श्रीविग्रह स्थापित हैं, में ६ सितम्बर को सायंकालीन सत्संग के अमृतकण पूज्य गुरूदेव भगवान के सानिध्य में बड़ी संख्या में उपस्थित सिंधी-पंजाबी संगत ने बटोरे. इसी दिन दोपहर अनीता धानी सुपुत्री मुरलीधर करनाणी (अजमेर) के निवास पर सत्संग-भोजन का कार्यक्रम भी हुआ. पुराने प्रेमी प्रेम कटारिया के अनुरोध पर उनके निवास पर भी सद्गुरू महाराजजी गये. न्यूजर्सी की प्रिंसटोन यूनिवर्सिटी, जहां पर अनेक देशों के विद्यार्थी अध्ययनरत हैं, काफी बड़े क्षेत्र में स्थापित यूनिवर्सिटी का परिसर हरियाली से आच्छादित शांतिप्रिय क्षेत्र है, को भी सद्गुरू महाराज मण्डली सहित देखने गये. न्यूजर्सी के चिकित्सा क्षेत्र में ३५ प्रतिशत भारतीय डाक्टर्स अनुसंधान करते हुये कार्यरत हैं.

७ सितम्बर को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का महापर्व श्री दुर्गा मंदिर में पूज्यश्री के पावन सानिध्य में सम्पन्न हुआ.

न्यूयार्क 8 सितम्बर 2004

न्यूजर्सी से १ घंटा सड़क यात्राकर वापस न्यूयार्क डॉ. अशोक चैनानी के यहां पहुंचे. सायंकालीन सत्संग प्रेम प्रकाश मंदिर में हुआ.

शिकागो 9 से 10 सितम्बर 2004

६ सितम्बर दोपहर ११:३० बजे लंगारिडियो विमानतल से विमान में चलकर दोपहर १:३० बजे शिकागो पहुंचे. लक्ष्मणदास-राजेश्वरी, राजकुमार-सीमा सहित अनेक प्रेमी

स्वागतार्थ शिकागो विमानतल पर उपस्थित थे. सीमा-राजकुमार के यहां प्रवास हुआ. शाम ७:३० से ९ बजे तक सत्संग लक्ष्मण-राजेश्वरी अलरेजा के निवास पर हुआ.

१० सितम्बर सत्संग हरिओम मंदिर में, इस मंदिर में भी भगवती व भगवान के विभिन्न स्वरूप प्रतिष्ठापित है. इसके पूर्व श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ के पाठ का पारायण व सत्संग दोपहर को प्रवास स्थल पर हुआ. ११ सितम्बर को प्रातः ८ बजे पुनः पाठ का आरम्भ संतमण्डली के कर-कमलों से हुआ. सीमा-राजकुमार मूलतः रायपुर (छत्तीसगढ़) के निवासी हैं. विदित हो सद्गुरू महाराज व संतमण्डली का पहली बार शिकागो आगमन हुआ.

टाम्पा 11 से 12 सितम्बर 2004

शिकागो के ओहर विमानतल से ११ सितम्बर को दोपहर ११:३० बजे चलकर दोपहर २ बजे टाम्पा पहुंचे. टाम्पा में इस समय ३ बजे हैं. न्यूयार्क-टाम्पा का समय एक-सा है. सजीनी-राजू के निवास पर भोजन पाकर विश्रामी हुये. टाम्पा में पूना व बड़ौदा के कई प्रेमी रहते हैं. सायंकाल सत्संग ७:३० से ९ बजे तक विष्णुधाम मंदिर में हुआ, जहां भक्त प्रेमी सद्गुरू महाराज का दर्शनकर सत्संग का लाभ लेकर प्रसन्न हुये. १२ सितम्बर निशा-मनोहर, दिव्या-अनिल की माता पद्मादेवी के घर पर सत्संग-भण्डारे का आयोजन था.

सेन्टमार्टिन 13 से 14 सितम्बर 2004

सेन्टमार्टिन के लिये १३ सितम्बर की प्रातः टाम्पा एयरपोर्ट से ८:३० बजे चलकर ११:३० बजे सेन्साईन से विमान बदलते दोपहर १२:३० बजे सेन्टमार्टिन पहुंचे. मधु-गुलाबरॉय (राणी इग्लैंड वालों की सुपुत्री), लक्ष्मी-दयालदास प्रेमियों सहित स्वागतार्थ उपस्थित थे. मधु-गुलाबरॉय के निवास पर रहने की व्यवस्था की गयी थी. सायंकालीन सत्संग की ज्ञानगंगा का सार्वजनिक मंदिर में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने अमृतपान किया. सेन्टमार्टिन व शिकागो शहरों में प्रेम प्रकाश मण्डल के महापुरूषों के पहली बार आगमन से इन शहरों में रहने वाले सनातनधर्मीयों ने हर्षित हो सद्गुरू महाराजके दर्शन-सत्संग का लाभ लिया. १४ सितम्बर को ४०० से अधिक प्रेमी सार्वजनिक मंदिर में महाराजश्रीके दर्शन-सत्संग का लाभ लेने हेतु आये. ज्ञातव्य हो सेन्टमार्टिन में ३५०० सिंधी निवास करते है. पूना, मुबंई, बड़ौदा, अजमेर के प्रेमी यहां बहुसंख्या में निवास करते हैं.

कुरेको 15 से 17 सितम्बर 2004

सेन्टमार्टिन यात्रा पूरी कर १५ सितम्बर को ६:३० बजे वायुयानसे चलकर ७:३० बजे कुरेको स्वागतोपरांत निशा-राजू के घर पर आये, जहां पर स महाराज व संत मण्डली के रहने की व्यवस्था की गयी दो दिन सत्संग प्रवास स्थल पर व १७ सितम्बर को सार्वजनिक मंदिर में हुआ, यह मंदिर सिंधी समाज बनाया गया है. श्री झूलेलाल भगवान, श्री गुरूनानक दे स्वरूपों सहित देवी माता व भगवान के स्वरूप स्थापि

मयामी 18 सितम्बर 2004

कुरासाऊ एयरपोर्ट से दोपहर ३ बजे चलकर ५:३० बजे मयामी पहुंचे. यहां पर भी डॉ. अशोक चै का निवास स्थल है. यहीं पर स्वामी जी के विश्राम व्यवस्था थी. भोजन प्रसादी पाकर रात्रि विश्राम कर सितम्बर प्रातः ६ बजे बेलिजी के लिये प्रस्थान किया.

बेलिजी 19 से 22 सितम्बर 2004

प्रातः १० बजे वायुयान द्वारा चलकर दोपहर ३ बेलिजी पहुंचे. विजय, विनोद, राजू, जगदीश कुमार पर मित्रों सहित विमानतल के अंदर हीं उपस्थित थे. उ स्वामीजी का स्वागत करते हुये वहीं पर एक विशिष्ट में जलपान की व्यवस्था भी की थी. यहां से इन प्रेमिय निवास स्थान पर आये. शाम का सत्संग यहीं पर विशाल हॉल में हुआ. २० सितम्बर को प्रेमियों की विनय सद्गुरू स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज का जन्मदिवस यहां मनाया गया. इस अवसर पर ५६ भोग प्रसाद के भण्डारा भी हुआ.२१ सितम्बर औरेंजवाक से चलकर बे में बोट द्वारा समुद्र दर्शन का आनन्द लिया. समुद्र के टापू पर भोजन-भण्डारे की व्यवस्था भी की गयी थी. का सत्संग श्री झूलेलाल मंदिर पर रखा गया था. बेलि आसपास के क्षेत्रों के ३०० से अधिक प्रेमियों ने सत्सं व सद्गुरू महाराज के दर्शनों का लाभ प्राप्त किया. सितम्बर को प्रातः १० बजे प्रवास स्थल पर श्री प्रेम प्र ग्रंथ के पाठ का पारायण व सत्संग हुआ. सायंकालीन स कोराजाल के विशाल सत्संग हॉल में हुआ. रात्रि भोजन-भ की व्यवस्था श्री गुलाब के घर पर थी.

फ्रीमोन्ट कैलिफोर्निया 23 से 25 सितम्ब

दो दिवसीय यात्रा के अंतर्गत कैलिफोर्निया शा

जे बेलिजी से प्रातः ७ बजे चलकर पहुंचे. श्री चंदरलाल फ्रीमोन्ट) के निवास पर आये. यहां का समय दो घंटा आगे ा. २४ सितम्बर को सिंधू मंदिर रात्रि ८:३० बजे पहुंचे, हीं पर सत्संग कार्यक्रम आयोजकों द्वारा रखा गया था. २५ सतम्बर को ओम हिन्दू मंदिर में अपार प्रेमी सत्संग दर्शनों तु आये. यहां पर इण्डोनेशिया के प्रेमी भी आकर मिले.

लॉसएन्जिलस 26 से 27 सितम्बर 2004

वायुयान द्वारा २६ सितम्बर को प्रातः १० बजे लिफोर्निया से चलकर ११:३० बजे लॉसएन्जिलस पहुंचे. ोहनदास केसवानी जी के निवास पर रहने की व्यवस्था थी. न्दू कम्युनिटी सत्संग हॉल में दोपहर १२ से २ बजे तक त्संगामृत की ज्ञानगंगा का पान प्रेमियों द्वारा पूर्ण मनोयोग किया गया. रविवार होने के कारण अपार श्रद्धालु सत्संग र्शन को आये. २७ सितम्बर को हूरी के घर पर त्संग-भण्डारे का कार्यक्रम हुआ. यहां पर स्पेन से न्दु-खुशीरामजी व मनीला से देव परिवार मित्रों सहित ाकर सद्गुरू महाराजजी से मिले.

न्यूयार्क 28 सित. से 3 अक्टू. 2004

२८ सितम्बर को लॉसएन्जिलस से प्रातः प्रस्थान कर त्रि ८ बजे न्यूयार्क पहुंचे. डॉ. अशोक चैनानी के निवास र प्रवास की व्यवस्था थी. यहीं पर प्रेम प्रकाश आश्रम भी ना हुआ है. जहां पर मोरपंख के मध्य आचार्यश्री का सुदंर वरूप दर्शाया गया है. २९ सितम्बर को शाम ७ से ९ बजे क सत्यनारायण मंदिर में सत्संग कार्यक्रम में ५०० से भी धिक सिंधी पंजाबी श्रद्धालु सम्मिलित हुये. प्रतिदिन प्रातः त्रि सत्संग प्रेम प्रकाश आश्रम पर होता था.

२९ सितम्बर को न्यूयार्क टी.वी. चैनल के मालिक आग्रह पर उनके स्थान पर सद्गुरू महाराज संतमण्डली हित पहुंचे, जहां पर प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय सद्गुरू टेऊँरामजी हाराज व सनातनधर्म से संबंधित चर्चा को रिकार्ड किया ाकर उसे प्रसारित किया गया. न्यूयार्क टी.वी. के संपादक ी अशोक व्यासजी जो राजस्थान के रहने वाले हैं, जिन्होंने मरापुर स्थान के भी दर्शन किये हैं. पूज्य गुरू महाराज जी शुद्ध हिन्दी में वार्तालाप किया.

दिल्ली 4 अक्टूबर 2004

न्यूयार्क से ३ अक्टूबर रात्रि ६ बजे (न्यूयार्क समय ारतीय समय से १०:३० घण्टे पीछे है, इस हिसाब से भारतीय समय ४ अक्टूबर प्रातः ७:३० बजे)न्यूयार्क विमानतल से फ्रेंकफर्ट से विमान बदलते नई दिल्ली इन्दिरा गांधी अंतर्राष्ट्रीय विमानतल पर ४ अक्टूबर अर्धरात्रि १२:४५ बजे पहुंचे,स्पेन से राधा-घनश्याम फ्रेंकफर्ट से दिल्ली पूज्य स्वामी जी के साथ आऐ. यहां पर जयपुर, दिल्ली, ग्वालियर, पूना, पलवल, डबरा, मुरैना सहित कई शहरों से १०० से भी अधिक प्रेमीगण स्वामीजीकी अगवानी हेतु उपस्थित थे. यहां से महाराजश्री लगभग ३:१५ बजे जयपुरके लिये रवाना हुये.

जयपुर 5 से 12 अक्टूबर 2004

प्रातः ८ बजे महाराजश्री श्री अमरापुर स्थान जयपुर पहुंचकर, आचार्यश्री सद्गुरू महाराज के दर्शनकर उनका अनन्त आभार मानते हुये प्रेमियों से मिले.

माता लीलावन्ती वर्सी उत्सव

माता लीलावन्ती सत्संग भवन, खजाने वालों का रास्ता में माता लीलावन्ती का वर्सी उत्सव माता वसीदेवी द्वारा प्रेमियों के सहयोग से श्रद्धा उत्साह पूर्वक मनाया गया.

पूज्य सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज, स्वामी मनोहर प्रकाशीजी, सन्त दयाप्रकाशजी, सन्त मोनूरामजी व प्रेम प्रकाश सन्त मण्डली ने भी ५ से ७ अक्टूबर तक मनाये जा रहे वर्सी महोत्सव में प्रातः सांय सत्संग की मौज का उपस्थित हजारों प्रेमियों को दिव्य आनन्द की अनुभूति कराई. यात्रा कार्यक्रम में आंशिक परिवर्तन से १२ अक्टूबर तक जयपुर के प्रेमियों को सत्संग दर्शन का लाभ मिला,यहां पर देश के विभिन्न आश्रमों के ट्रस्टीयों ने भी महाराज श्री के दर्शन कर मुलाकात की. पूज्य महाराजश्री १३ अक्टूबर दोपहर अमरापुर रथ से रवाना होकर रात्रि भोपतवाला प्रेम प्रकाश आश्रम हरिद्वार सद्गुरू सर्वानन्द जन्म महोत्सव के लिए पहुंचे.



जयपुर में सद्गुरू टेऊँराम अमरलोक धा

उद्घाटन व मूर्ति स्थापना समारो

7 से 11 नवम्बर 2004 प्रतिदिन प्रातः सायंकाल सत्संग व

11 नवम्बर सद्गुरू स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व संतमण्डली
कर-कमलों से अमरलोक धाम का उद्घाटन व मूर्तियों की प्राण-प्रतिष्ठा की जा

इस अवसर प्रातः 8 से हवन-ध्वजावंदन, सत्संग व दोपहर 12 बजे से आम भण्डा

स्थान- सद्गुरू टेऊँराम अमरलोक धाम, प्लॉट 404 ए, भागसिंह चौराहे के पास, आदर्शनगर, जयपुर फोन नं.- 2610479

नवीन प्रेम प्रकाश आश्रमों के लिये भूमि पूजन समारो

अहमदाबाद 22 नवम्बर 2004

कार्यक्रम

21 नवम्बर प्रातः 8 बजे

आश्रम एक्सप्रेस से पूज्य गुरुवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज व सन्तमण्डली का आगमन रेलवे स्टेशन पर भव्य स्वागत.

21-22 नवम्बर

सायंकाल 5 से 7 बजे तक सत्सं

सत्संग स्थान

श्री जवाहरलाल फुन्दुमल, स्वामी सर्वानन्द सोसा
लोटस हाऊस के पास, हांसोल, सरदार नगर, अहमदा

22 नवम्बर 2004

प्रातः 8 बजे विशाल शोभायात्रा झूलेलाल मंदिर सरदार नगर से निर्माणाधीन प्रेम प्रकाश आश्रम तक.

प्रातः 10 बजे सत्संग प्रवचन

22 नवम्बर प्रातः 11 बजे

भूमि पूजन एवं विशाल भण्डा

स्थान- श्री प्रेमप्रकाश आश्रम, आवास पार्क के पास, कोतरपुर, चिलोड़ा रोड, अहमदाबाद फोन नं.- 2382340, 22818685 मो.-98240-11

नागपुर
भूमि पूजन समारोह

1 दिसम्बर 2004 प्रातः 10 बजे से

स्थान- प्रेम प्रकाश आश्रम, बस स्टेण्ड के पास, जरीपटका, नागपुर, महाराष्ट्र.

लोनावाला
भूमि पूजन समारो

17 दिसम्बर 2004 प्रातः 10 बजे से

स्थान- प्रेम प्रकाश मण्डल सेवा ट्रस्ट, प्लॉट 28/20
डॉ. कामथ के बंगले के सामने, टंगराली, लोनावाला, महार

श्री अमरापुर धाम, जयपुर शीतकालीन दैनिक समय सारणी

खुलने का समय

सुबह : ६.०० बजे से १२.०० बजे तक
सायं : ३.०० बजे से ८.०० बजे तक

सत्संग का समय

सुबह : ७.०० बजे से ८.२० बजे तक
सायं : ४.०० बजे से ५.३० बजे तक

आरती सायं : ५.३० बजे

झांकी दर्शन (गुरूवार व शनिवार)

सायं : ५.०० बजे से ७.३० बजे तक

रविवार सत्संग

सुबह : ७.०० बजे से ६.३० बजे तक
(सत्संग-अमृत प्रवचन कैसेट)
सायं : ४.०० बजे से ६.०० बजे तक
(सत्संग-भजन-आरती)

गुरूवार व शनिवार

सुबह : ७.०० बजे से ८.३० बजे तक
(सत्संग-गुरू प्रार्थनाष्टक पाठ)
सायं : ४.०० बजे से ६.०० बजे तक
भजन-आरती-सत्नाम साक्षी मंत्र
जाप-समाधि स्थल पर पुष्पों का श्रृंगार

श्री मन्दिर व मुख्यद्वार दोपहर १२ से ३ व रात्रि ८.३० से प्रातः ६ तक बन्द रहेगा.

कार्तिकोत्सव

रविवार 14 नव. से शुक्रवार 26 नव.2004 तक

कार्यक्रम

प्रतिदिन प्रातः 6 से 7 बजे तक
हरिनाम संकीर्तन प्रभातफेरी
श्री अमरापुरधाम की परिक्रमा सहित
प्रतिदिन प्रातः 7 से 9 बजे तक
प्रार्थना-सत्संग-कार्तिक कथा
प्रतिदिन सायं 4 से 6 बजे तक
भजन-सत्संग-आरती

विशेष पर्व उत्सव

14 नव. रविवार चन्द्रदर्शन, भाईदूज	22 नव. सोमवार हरि प्रबोधिनी एकादशी (भीष्म दीप प्रज्जवलन)
19 नव. शुक्रवार गोपष्टमी	
20 नव. शनिवार आंवला नवमी	26.नव. शुक्रवार कार्तिक पूर्णिमा



गोपष्टमी महोत्सव सद्गुरू टेऊँराम गौशाला में

शुक्रवार 19 नवम्बर 2004

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज की पवित्र अध्यक्षता में

विशेष कार्यक्रम

प्रातः १० से १२ बजे तक सत्संग-प्रवचन,
गौमाता पूजन एवं विशाल भण्डारा

कार्यक्रम स्थलः- सद्गुरू टेऊँराम गौशाला, पृथ्वीराज नगर भाग्यावास, गणपतपुरा, मुकुन्द फार्म हाउस, मानसरोवर, जयपुर (राजस्थान) फोनः- 0141-2000892

कार्तिक उत्सव समापन- अमरापुर धाम जयपुर में
शुक्रवार 26 नवम्बर प्रातः 7 से 11 बजे सत्संग, पाठों का भोग, आरती व आम भण्डारा.



आध्यात्मिक वर्गपहेली-12

प्रस्तुतिः सुधा जौहरी, तिलकनगर, जयपुर

1अ	2ज	त	3च	तु	र्द	4शी	ॐ
5क	ष्ट	ॐ	तु	ॐ	ॐ	र्षा	ॐ
ब	ॐ	6ब	रा	त	ॐ	7स	8म
9र	10स	खा	न	ॐ	11वा	न	र
ॐ	12म	न	न	ॐ	श	ॐ	ण
13व्य	र्थ	ॐ	ॐ	14ग	ण	क	ॐ
स	ॐ	15ब	न	वा	सी	ॐ	16ग
17न	कु	ल	ॐ	श	ॐ	18वृं	दा

सही हल के लिए आगामी अंक देखें - प्रश्नावली व वर्गपहेली के सही हल भेजने वालों के नाम आगामी अंक मे प्रकाशित किये जाऐगें. सही हल के लिए वर्ग पहेली की छायाप्रति (फोटोकॉपी) करवाकर अथवा इसी पर भरकर ५ नवम्बर तक कार्यालय में भिजवायें. प्रेम प्रकाश संदेश, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढ़वे की गोठ, लश्कर, ग्वालियर - ४७४००१

बाएँ से दाएँ :

१. श्राद्ध पक्ष से एक दिन पूर्व गणपति विसर्जन का पर्व. (३.४)
५. संसार में दैहिक, दैविक, भौतिक, तीन प्रकार के..... हैं (२)
६. शिव की....देखकर नगर निवासी डर गए. (३)
७. बराबर ; सबको.....दृष्टि से देखो. (२)
९. कृष्ण भक्त एक मुसलमान कवि. (४)
११.श्रीराम की सेना के सैनिक. (३)
१२.गूढ़ विषय पर चिन्तन. (३)
१३.स्वयं अपने सुख के लिये जीने वाले का जीवन.....(बेकार) है. (२)
१४.ग्रह–नक्षत्र आदि की गणना करने वाले. (३)
१५.जंगल में रहने वाले. (४)
१७.पांडव भ्राताओं में से एक. (३)
१८.तुलसी. (२)

ऊपर से नीचे :

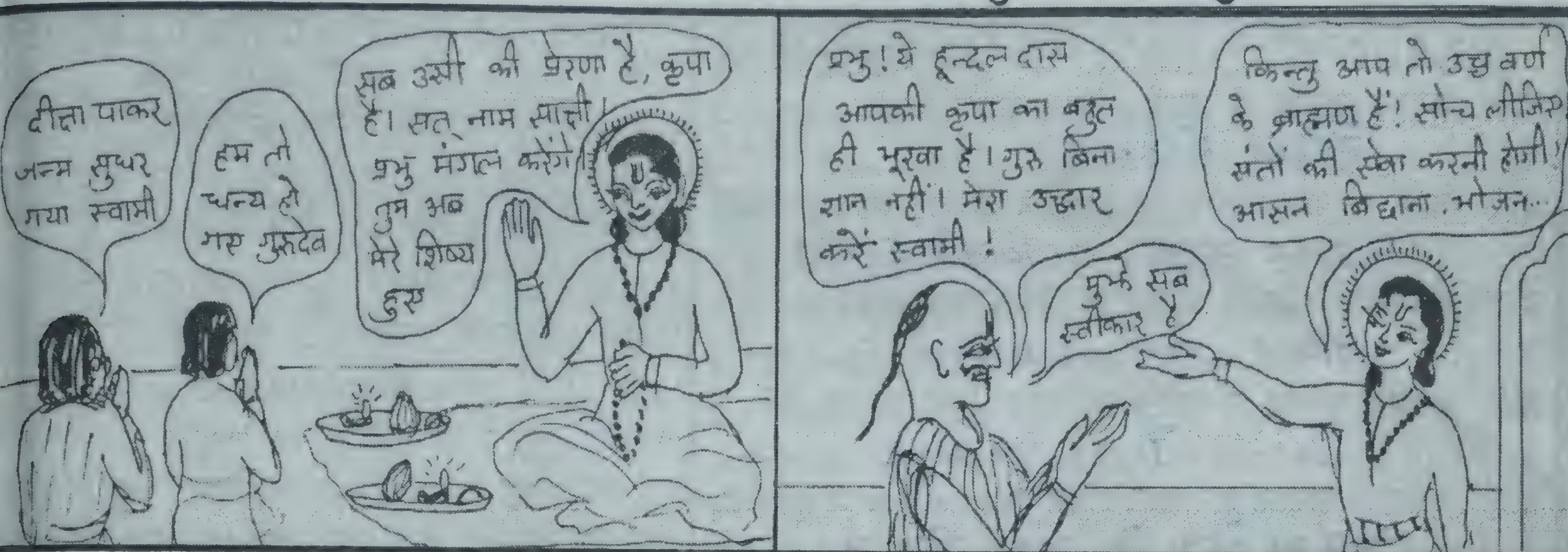
१. शहंशाह जिन्होंने दीन–इलाही धर्म चलाया. (४)
२. क्रोध विवेक को....कर देता है. (२)
३. ब्रह्मा. (५), ४. सिर के बल खड़े होने वाला योग–व्यायाम. (४)
६. विस्तृत वर्णन. (३)
८. हानि–लाभ, जीवन...., यश–अपयश विधि हाथ. (३)
१०.शिवाजी के गुरू श्री.......गुरू रामदास. (३)
११.गंगा–तट पर स्थित शंकर भगवान की नगरी. (४)
१३.बुरी टेव ; हानिकारक आदत. (३)
१४.झरोखा ; छोटी खिड़की. (३)
१५.शारीरिक शक्ति के साथ आत्म.....भी आवश्यक है. (२)
१६.भीम व दुर्योधन का शस्त्र. (२)

आध्यात्मिक वर्गपहेली-११ (सही हल भेजने वालों के नाम-)

अमरापुरधामसे-जय प्रेमप्रकाशी,बल्लु रामानी,ढालू प्रेमप्रकाशी,गुरूदास प्रेमप्रकाशी,जयपुर से-प्रदीप-दीपा आसवानी,भावना टिलवानी,मीनू-अजय गुरबानी,रिया,कमल,हेमा,भारती चंदवानी,आशा राघवानी,हरीश टहलानी,भारती (पिंकी) गोपी दत्तवानी,कविता-अशोक पुरसानी,सारिका पुरसानी,कविता शर्मा,कुणाल-संदीप पारवानी,रजत मामतानी,ब्यावर से-मनीष,लक्ष्मी,वर्षा,मीना वासवानी,नीलम वाधवानी,राधादेवी रामचंदानी,हेमा जेसवानी,चन्द्रा-नानकराम पारवानी,रानी,रेखा,भावना कान्जानी,नावांदेवी छतूमल,शान्तु,पिंकी,पदमा शिवानी,रेखा कलवानी,रजनी मोरवानी,कोटा से-प्रेमप्रकाश राजानी,मनोज राजानी,अनिल-मोहनलाल राजानी,गांधीधाम से-रमेश टी.बूलचंदानी,पाली से-रामेश्वरी खटवानी,मुम्बई से-अलका शर्मा,वर्षा-मेघना शर्मा,गोन्दिया से-वर्षा-जयराम छुटलानी,रवि खूबचंदानी,दीपिका गम्बानी,सुलोचना-शंकरलाल गम्बानी,राखी-हरीशकुमार वेडवानी,कन्हैयालाल रामचंद बजाज,राधा-कृष्णा बजाज,लाजवन्ती बजाज,विद्या-रमेशलाल गम्बानी,खैरथल से-रूपा नोतानी,हेमलता,शालू तलरेजा,संजय प्रेमप्रकाशी,भानुप्रतापपुर से-माया,दीपा कौडानी,मंजू चावला,खण्डवा से-नीतू मोटवानी,चन्द्रभान गुरबख्शानी,इन्दौर से-एकता मंगलानी,हरीश कुमार बालानी,तिरोड़ा से-पुष्पा,संजना,कविता बी.दीपानी,सिवनी से-कमल चैनानी,डाली चैनानी,पुष्पा-नरेश मोहनानी,कामठी से-श्रीमती रेखा व कु.ज्योति लालवानी,ग्वालियर से-पूजा वलेजा,अहमदाबाद से-रश्मी-मनोजकुमार कलवानी,धमतरी से-निशा-पुरूषोत्तम,नेहा-प्रकाश वशानी,सुरेश-ईश्वरलाल पंजवानी,अनिल,रीना,प्रिया लखवानी,सोनम वाधवानी,किशोर,रेखा,राजेश-सुनील वाधवानी,सदारंग-राधा चावला,धर्मदास-जानकी वाधवानी,जया-प्रहलाद आहूजा,लक्ष्मी,डिम्पल,गीता,विदिशा पंजवानी,वन्दना रोहिरा,चापा से-वरियलदास प्रेमप्रकाशी,रायपुर से-कविता-सुशील,आशा,शान्ता प्रेमप्रकाशी,नासिक से-गुरूमुखदास प्रेमप्रकाशी.

आध्यात्मिक वर्गपहेली-11 का सही

1आ	2सू	रा	3म	ॐ	4व	च
6च	र	ॐ	र्या	ॐ	रू	ॐ
7र	ज	ॐ	8दा	9रू	ण	ॐ
ण	ॐ	ॐ	10पु	ष्ट	ॐ	11ध्व
ॐ	ॐ	12गु	रू	ॐ	13श	नि
ॐ	14प्र	ॐ	षो	ॐ	ब	ॐ
16म	दो	न्म	त्त	ॐ	री	ॐ
17रो	ष	ॐ	18म	त्स्य	ॐ	19मी



सांईं टेऊँराम बाबा की लीलाएँ



आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-9

प्र.१ भारतीय संस्कृति में कितने संस्कार बताये गये हैं?
उ. ....सोलह संस्कार..................

प्र.२ शास्त्रों में मुख्य पुराणों की संख्या व रचियुता का नाम लिखें?
उ. ....अठारह पुराण,...भगवान वेदव्यास

प्र.३ प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय के इष्ट्देव कौनसे भगवान हैं?
उ. .....भगवान...लक्ष्मी...नारायण।......

प्र.४ श्री अमरापुरधाम में कार्तिकोत्सव कब मनाया जा रहा है?
उ. ....14.नव. से 26 नव. 2004....

प्र.५ सांई टेऊँरामबाबा का जन्म कौनसे प्रदेश के गाँव में हुआ था?
उ. ....सिंध प्रदेश...के...खंडु..गाँव...में।

प्र.६ स्वामी सर्वानन्दजी महाराज के माता-पिता का नाम क्या है?
उ. पिता सेवकराम,...माता..ईश्वरी..बाई

प्र.७ स्वामी सर्वानन्द पार्क व स्वामी सर्वानन्द बाजार जयपुर की कौनसी कॉलोनी में बना हुआ है?
उ. ...सिंधी..कालोनी...,..राजापार्क....जयपुर

प्र.८ गोपष्टमी महोत्सव जयपुर में कब और कहाँ मनाया जायेगा?
उ. ......19.नव. 2004.,.सांई..टेऊँराम..गोशाला

प्र.९ सत्नाम साक्षी संदेश (त्रैमासिक सिंधी पत्रिका) कहाँ से प्रकाशित होती है?
उ. ....श्री अमरापुर स्थान...जयपुर...से।

प्र.१० आचार्यश्री की द्वितीय गुरू गद्दी की बागडोर किस महापुरूष ने संभाली?
उ. सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज।

आध्यात्मिक ज्ञानवर्धक प्रश्नावली-8 के

१. वेदों की संख्या ४, ऋगवेद, सामवेद, अथर्ववेद, यजुर्वेद.
२. चार आश्रम, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास आश्रम.
३. भगवान वेदव्यास द्वारा., ४. आचार्य सद्गुरू टेऊँरामजी महारा
५. सिन्धुनगर, नाहरी का नाका में., ६. सिन्धु नदी के तट पर.
७. २३ से २७ अक्टूबर हरिद्वार में., ८. अभय दान, गंगा का कि
९. स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज का., १०.स्वामी हरिदासरामजी

सही उत्तर भेजने वालों के नाम

अमरापुरधाम जयपुर से–जय प्रेमप्रकाशी, ढालू प्रेमप्रकाशी, गुरदास बल्लू रामानी, जयपुर से–प्रदीप–दीपा आसवानी, भावना टिलवानी, गुरबानी, रिया, कमल, हेमा, भारती चंदवानी, जयश्री (जमना), जया (गंग हरीश टहलानी, भारती, गोपी, पिंकी दत्तवानी, कविता–अशोक पुरसा पुरसानी, कविता शर्मा, कुणाल–संदीप पारवानी, गोंदिया से–ज्योति–मुरलीध वर्षा–जयरामदास छुटलानी, रवि खूबचंदानी, राखी–हरीशकुमार वेडवानी, रामचंद बजाज, राधा, कृष्णा बजाज, लाजवन्ती बजाज, रूकमणी–अनि शामलानी, अजमेर से–भरत डोडवानी, कामठी से–मोहनलाल–योगेश ब्यावर से–राधादेवी रामचंदानी, रेखा, राखी, भावना कान्जानी, रजनी मोर कलवानी, शान्तु–पिंकी–पदमा शिवानी, नांवादेवी छतूमल, चन्द्रा–नानकरा धमतरी से–सुरेश–ईश्वरलाल पंजवानी, रिया, राहुल, आशीष, खुशबू निशा–पुरषोत्तम, नेहा–प्रकाश वशानी, ज्ञानचंद वाधवानी, हितेश, निते वरूण वाधवानी, लक्ष्मी, डिम्पल, विदिशा, गीता पंजवानी, नेहा, सोन जया–प्रहलाद आहूजा, सदारंग–राधा चावला, वंदना रोहिरा, चापा से– प्रेमप्रकाशी, भानुप्रतापपुर से–माया, दीपा कोडानी, मंजू चावला, सिवनी से–दी माखीजा, रायपुर से–कविता, सुशीला, आशा, शांता प्रेमप्रकाशी,नासिक से–गु

तीज-त्यौहार

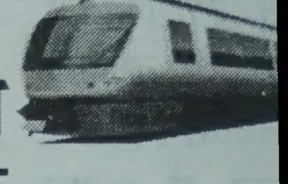
24 अक्टू.04रविवार-पापांकुशा एकादशी व्रत
27 अक्टू.04 बुधवार-पूर्णिमा व्रत, सद्गुरू सर्वानन्द प्राकट्य दिवस (मेला समापन रात्रि ८ बजे हरिद्वार में)
28 अक्टू.04 गुरू.-स्नानदान की शरद पूर्णिमा,कार्तिकस्नान प्रारंभ
8 नव.04 सोमवार-रमा एकादशी व्रत
10 नव.04 बुधवार- धन त्रयोदशी, धनतेरस
11 नव.04 गुरूवार-नरक चतुर्दशी
12 नव.04 शुक्रवार-दीपावली, कार्तिक अमावस्या
13 नव.04 शनिवार-अन्नकूट गोवर्धनपूजा
14 नव.04 रविवार- यमद्वितीया, भाई दूज, चन्द्र दर्शन
15 नव.04 सोमवार-श्री गणेश चतुर्थी,वृश्चिक संक्रान्ति
18 नव.04 गुरूवार-सांई टेऊँराम चौथ
19 नव.04 शुक्रवार-श्री गोपाष्टमी
20 नव.04 शनिवार-अक्षय आंवला नवमी
22 नव.04 सोमवार-देवोत्थान, हरि प्रबोधिनी एक
25 नव.04 गुरूवार- वैकुण्ठ चतुर्दशी
26 नव.04 शुक्रवार-कार्तिक पूर्णिमा, श्री गुरूनानक
30 नव.04मंगलवार-श्रीगणेश चतुर्थी व्रत
8 दिस.04 बुधवार- उत्पन्ना एकादशी व्रत
11 दिस.04 शनिवार- अमावस्या
13 दिस.04 सोमवार- चन्द्र दर्शन
15 दिस.04 बुधवार- श्री गणेश चतुर्थी, धनु संक्र
17 दिस.04 शुक्रवार- सांई टेऊँराम चौथ
22 दिस.04 बुधवार- मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता
26 दिस.04 रविवार- पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत
30 दिस.04 गुरूवार- श्री गणेश चतुर्थी व्रत

25 से 27 जनवरी	2005 तक	कोरबा	07759-221593
28 से 29 जनवरी	2005 तक	बरगढ़	06646-234660,234983
30 जनवरी	2005	राजिम	07701-233171,233325
31 जन. से 2 फर.	2005 तक	धमतरी	07722-237007,235009
3 फरवरी	2005	भानुप्रतापपुर	07850-252274
3 फरवरी	2005	दिल्ली राजहरा	07748-283076
4 से 5 फरवरी	2005 तक	दुर्ग भिलाई	0788-328584,325208
6 फरवरी	2005	राजनान्दगांव	07744-227716
7 से 10 फरवरी	2005 तक	गोन्दिया	07182-234104
11 फरवरी	2005	तिरोड़ा	मो.098290-14850, 094140-67850
12 से 13 फरवरी	2005 तक	बालाघाट	07632-241970
14 से 16 फरवरी	2005 तक	सिवनी	07692-224752
17 फरवरी	2005	भण्डारा	07184-260177
18 से 21 फरवरी	2005 तक	नागपुर	0712-2583458,2581416
22 से 23 फरवरी	2005 तक	अमरावती	0721-2670001
24 फरवरी	2005	अकोला	098231-80241
25 फरवरी	2005	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
26 फर. से 5 मार्च	2005 तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
6 मार्च	2005	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
7 से 9 मार्च	2005 तक	ग्वालियर	0751-2426111
10 से 11मार्च	2005 तक	डबरा	07524-223245
12 मार्च	2005	दतिया	07522-236333
13 से 15 मार्च	2005 तक	मुरैना	07532-220280
16 मार्च	2005	आगरा काला महल	0562-2369084
17 मार्च	2005	आगरा कमला नगर	0562-2382529
18 से 20 मार्च	2005 तक	आगरा केदार नगर	0562-2211499
21 से 22 मार्च	2005 तक	अलीगढ़	0571-2420591
23 मार्च से 2 अप्रेल	2005 तक	हरिद्वार	01334-260144,260815
3 से 5 अप्रेल	2005 तक	गांधीधाम	02836-573020
6 से 7 अप्रेल	2005 तक	राजकोट	0281-2578359
8 अप्रेल	2005	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
9 से 10 अप्रेल	2005 तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
11से 14 अप्रेल	2005 तक	ब्यावर	01462-258198
15 से 28 अप्रेल	2005 तक	जयपुर	0141-2372423,2372424
29 से 30 अप्रेल	2005 तक	मन्दसौर	07422-245431,253122
1 से 6 मई	2005 तक	इन्दौर	0731-2468140
7 से 8 मई	2005 तक	रतलाम	07412-238121
9 से 13 मई	2005 तक	दिल्ली	011-23859774,55199138



श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाशजी महाराज का



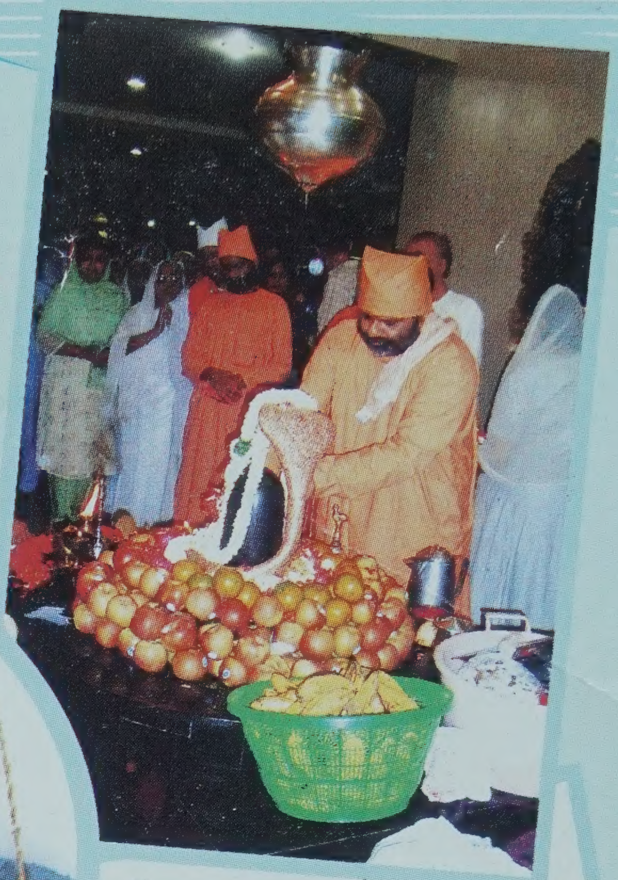


यात्रा कार्यक्रम

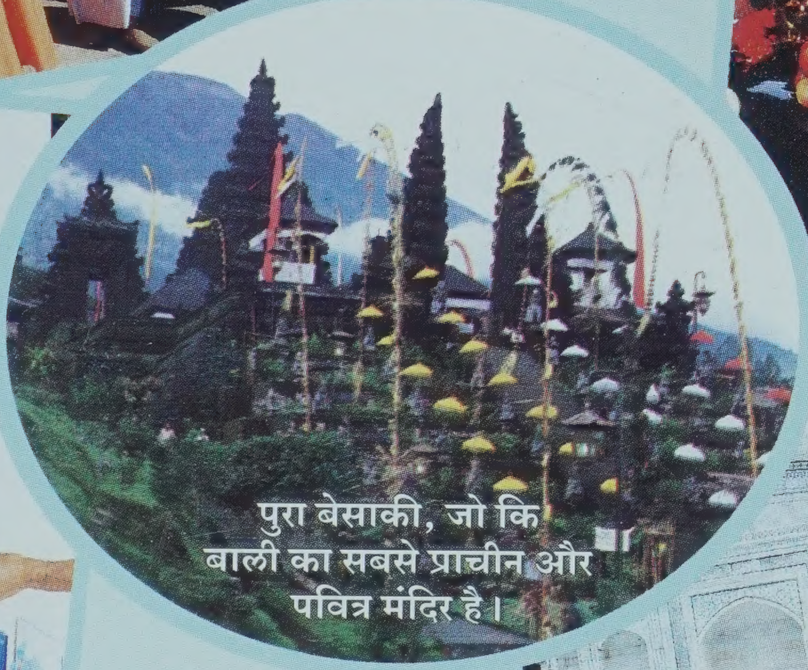
5 से 12 अक्टूबर	2004 तक	जयपुर	0141-2372424, 2372423
13 से 29 अक्टूबर	2004 तक	हरिद्वार	01334-260144, 260815 (सद्गुरू सर्वानन्द जन
30 अक्टू से 2 नव.	2004 तक	पलवल	मो.098290-14850, 094140-67850
3 से 4 नवम्बर	2004 तक	हथीन	मो.098290-14850, 094140-67850
5 से 6 नवम्बर	2004 तक	पिनगंवा	मो.098290-14850, 094140-67850
7 से 14 नवम्बर	2004 तक	जयपुर	0141-2372424, 2372423
15 से 17 नवम्बर	2004 तक	पूना	020-6350039 (कार्तिकोत्सव)
18 नवम्बर	2004	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
19 से 20 नवम्बर	2004 तक	जयपुर	0141-2372424, 2372423 (गोपष्टमी उत्सव)
21 से 22 नवम्बर	2004 तक	अहमदाबाद	079-2863900 (नवीन आश्रम भूमि-पूजन- 22 नव
23 से 26 नवम्बर	2004 तक	कोटा	0744-2451476
27 से 29 नवम्बर	2004 तक	भोपाल	मो.098290-14850, 094140-67850
30 नव. से 1 दिस.	2004 तक	नागपुर	0712-2583458 (नवीन आश्रम भूमि-पूजन- 1 दि
2 दिसम्बर	2004	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
3 से 7 दिसम्बर	2004 तक	मद्रास	044-52180724, 28554658
8 दिसम्बर	2004	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
9 से 11 दिसम्बर	2004 तक	रामेश्वरम्	मो.098290-14850, 094140-67850
12 दिसम्बर	2004	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
13 से 15 दिसम्बर	2004 तक	मुबंई	022-26057711, 26057579
16 से 17 दिसम्बर	2004 तक	लोनावाला	मो.098290-14850, 094140-67850 (नवीन आश्रम भूमि-पूजन- 17 दिसम्बर)
18 से 20 दिसम्बर	2004 तक	पिम्परी	020-27459487
21 दिसम्बर	2004	जयपुर	0141-2372424, 2372423
22 दिसम्बर	2004	अजमेर	मो.098290-14850, 094140-67850 (गीताजयंत
23 से 26 दिसम्बर	2004 तक	बड़ौदा	0265-3093554 (गीताजयंती मीरा मंदिर)
27 से 28 दिसम्बर	2004 तक	अजमेर (दिल्लीगेट)	0145-2423993 (स्वामी बसंतराम पुण्यतिथि)
29 दिसम्बर	2004	जयपुर	0141-2372424, 2372423
30 दिसम्बर	2004	यात्रा	मो.098290-14850, 094140-67850
31 दिस. से 7 जन.	2005 तक	मुबंई	022-26057711, 26057579 (वार्षिकोत्सव)
8 से 13 जनवरी	2005 तक	मनीला	00632-5218049,8525305
14 से 16 जनवरी	2005 तक	मुबंई	022-26057711, 26057579
17 से 20 जनवरी	2005 तक	रायपुर	0771-2424681
21 जनवरी	2005	बेमेतरा	07824-22320,22375
22 से 24 जनवरी	2005 तक	भाटापारा	07726-220779

श्री प्रेमप्रकाश मण्डल के मेल-मिलाप केम्प बाली जकार्ता की झलकियाँ









पुरा बेसाकी, जो कि बाली का सबसे प्राचीन और पवित्र मंदिर है।





मंदिर के समारोह में किया जाने वाला 'केरिस नृत्य' जिसका उद्भव 'ट्रान्स नृत्य' से हुआ है।







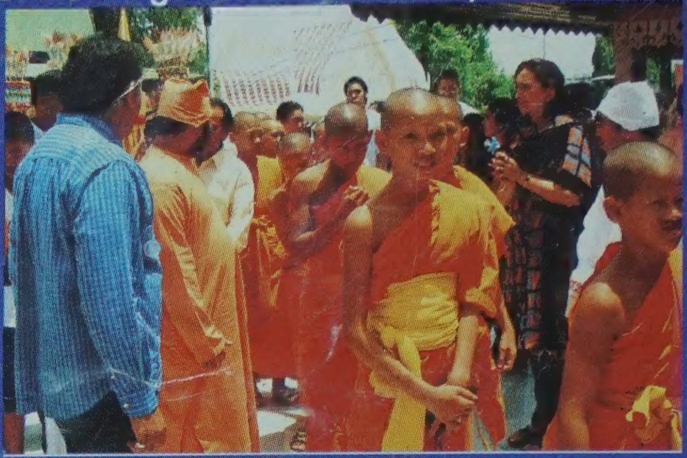


दिनांक
15-18 जुलाई,
2004

डाक रजि. ग्वालियर संभाग-161/2002-05 (R.M.S. Posting Date 15th & 16th)

भा. शा. - 29/18/8















सद्गुरु महाराजजी से हिन्दू बौद्ध समाज,
बाली के प्रमुख डायरेक्टर जनरल सपत्नीक आशीर्वाद प्राप्त करते हुए।

सूचना

समस्त सम्माननीय सदस्यों के सूचनार्थ
प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद
व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे
तरह जाँचकर अपनी सदस्यता शुल्क
समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्
नवीनीकरण करा लेना चाहिए।

- व्यव

सदस्यता क्रमांक

श्रीमान्

संस्कार चैनल पर
प्रति रविवार
दोपहर 3 से 3.30 बजे त
सद्गुरू भगवान
के
दिव्य दर्शन
सत्संग का लाभ लें

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिए श्री
पंजवानी द्वारा प्रेम प्रकाश स
कार्यालय से साज-सज्जा क
कर रवि ऑफसेट, कम्प्यूटर
मुद्रित करवाकर कार्यालय : स्व
सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्र
आश्रम, गाढ़वे की गोठ लश
ग्वालियर से प्रकाशित किया ग
फैक्स नम्बर - 0751-5045
(कार्यालय फोन सायं 4 से
0751-5045144) सम्पाद
शंकरलाल सबनानी, फोन: 075
2327427, श्रीचंद पंजव
फोन: 0751-2454183 आ
गणपति, जयपुर फोन : 9414
72251